जिनवाणी

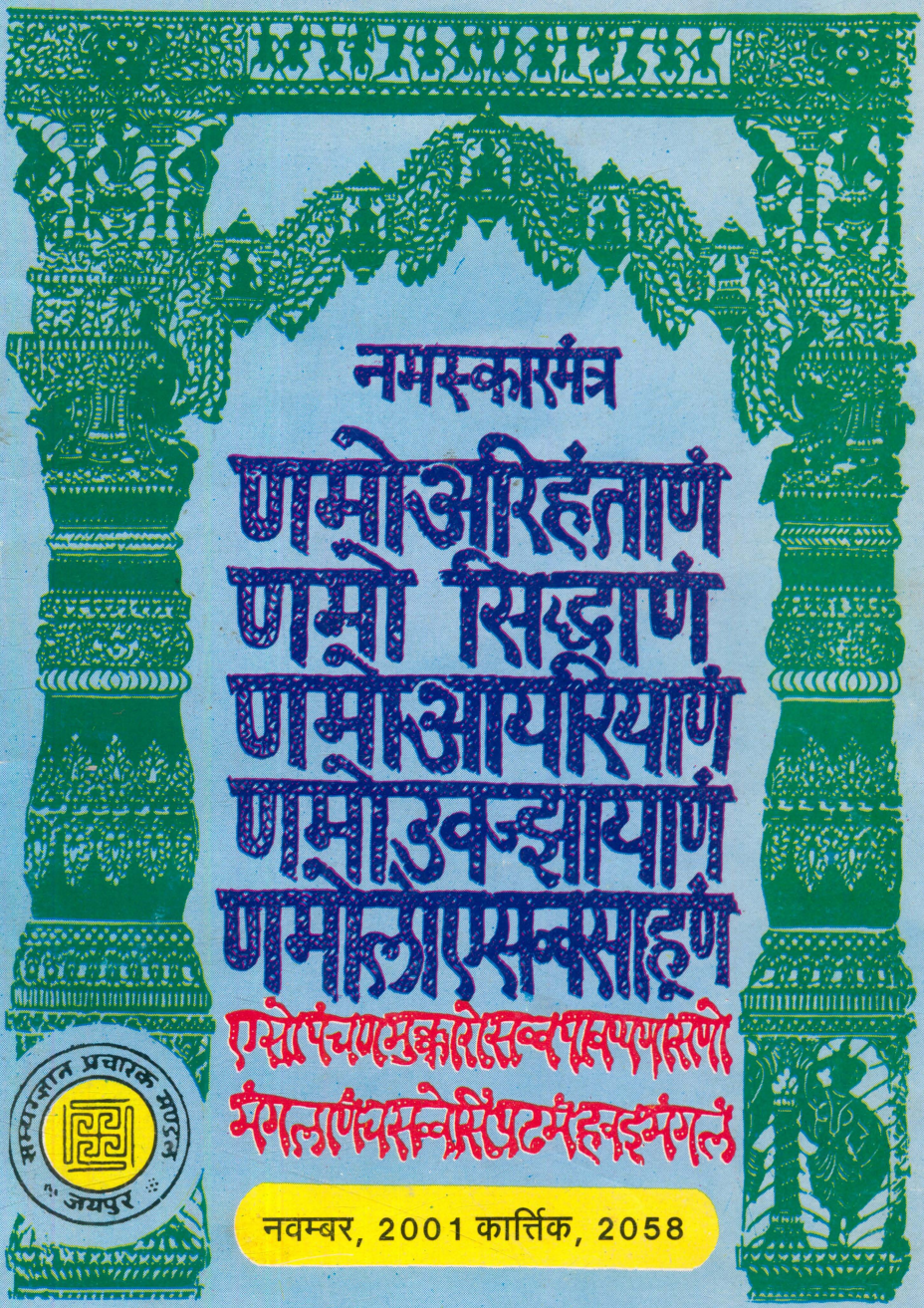

नमस्कारमंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच णमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

नवम्बर, 2001 कार्तिक, 2058

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!

देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण प्रतिष्ठान
" रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स"
जलगाँव के यहाँ।
सोने - चांदी के यह सुंदर
अलंकार शिल्प!

अलंकारों के सैंकडो विविधतम नये नमूने, एक से बढकर एक आकर्षक कलात्मक कारीगरी से सजे अनगिनत डिजाईन्स।

कुंदन-जडाव, मीनाकाम, ऑक्साइड पॉलीश, छिलाई व कास्टींग काम की उच्चतम श्रेणी।

हीरों के आभूषणों की नई विशाल मालिका।

चांदी में बने नये मनमोहक वैभवशाली बर्तन हाजिर स्टॉक में उपलब्ध हैं।

गहनों की 'वापसी विश्वसनीयता' स्पष्ट रूपसे बिल पर और अलंकारों पर भी।

व्यापारियों के लिए सोने गहने एवं चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सेवा शुरु है।

रतनलाल सी. बाफना, ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी बर्तन शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३, २२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

चेतावनी : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नहीं!

जिनवाणी

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं करेंति जे भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी॥
मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997
- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
- **प्रधान सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
- **सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र**
  3 K 25, कुड़ी भगतासनी
  हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981
- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.
- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	**11000 रु.**
संरक्षक सदस्यता	**5000 रु.**
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

visit us at:www.jinwani.com

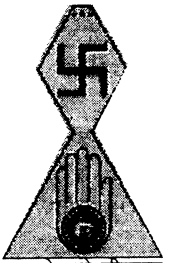

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मणोगयं वक्कगयं,
जाणित्ताऽयरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए,
कम्मुणा उववायए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र 1.43

भाव मनोगत और वाक्यगत,
गुरुवाणी का ग्रहण करे।
भाव समझकर कार्यरूप में,
आज्ञा का स्वीकार करे ।।43।।

नवम्बर 2001
वीर निर्वाण सं. 2528
कार्त्तिक, 2058

वर्ष : 58 **अङ्क** : 11

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस,
जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन / निबन्ध

साधना के ज्ञातव्य सूत्र (3)	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	7
सम्यक् चारित्र में चरण बढाएँ	: महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	11
सच्चा गुरु व्यक्ति को कल्याण के मार्ग से जोड़ता है	: उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	16
साधना में पुरुषार्थ सम्पूर्ण शक्ति से कीजिए	: आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	19
मांसाहार : एक समीक्षा	: आचार्य महाप्रज्ञ	24
महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य (4)	: श्री जशकरण डागा	29
क्या आप जानते हैं, आप क्या खा रहे है?	: श्रीमती मेनका गांधी	36
आओ वैराग्य में मन रमाएँ	: श्री नेमीचन्द जैन	47

विचार / आगम–परिचय / तथ्य

महावीर वाणी (श्रद्धा एवं सम्यग् दर्शन)	: संकलित	6
क्रोध शमन के उपाय	: भण्डारी सरदारचन्द जैन	18
धनार्जन झूठ कपट से न हो	: स्वामी रामसुखदास	28
उत्तराध्ययन सूत्र : 34वाँ अध्ययन	: प्रो. चाँदमल कर्णावट	32
स्वाध्याय का सार : समाधि शिक्षा	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	38
भगवान महावीर : 101 तथ्य (5)	: श्री राजेश जैन 'देवकर'	40

कथा / कविता / प्रसंग

जीवन की घड़ियाँ हैं छोटी	: श्री प्रकाश गुन्देचा	10
दो क्षणिकाएँ	: डॉ. संजीव प्रचण्डिया 'सोमेन्द्र'	15
णमोकार मन्त्र है प्यारा	: श्री दिलीप धींग 'जैन'	35
सम्यक् दर्शन का दीपक हो	: श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त'	39
गुण तो गावोनी भक्ति भाव सुं	: श्री हस्तीमल गोलेछा	42
प्राणिवध का त्याग (2)	: श्री लालचन्द्र जैन	44

स्तम्भ / अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य–समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	48
समाज–दर्शन	: संकलित	49
श्रद्धांजलि	: संकलित	56
साभार–प्राप्ति	: संकलित	59

सम्पादकीय

जैन परम्परा में 'ऊँ' का प्रयोग

■ डॉ. धर्मचन्द जैन

भारतीय परम्परा में 'ऊँ' अथवा 'प्रणव' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वेद, पुराण एवं उपनिषद् साहित्य में प्रयुक्त 'ऊँ' ने सम्पूर्ण भारतीय चिन्तन परम्परा को प्रभावित किया है। साधना-पद्धति एवं मन्त्र-तन्त्र में भी 'ऊँ' का प्रयोग हुआ है। मूलतः वैदिक 'ऊँ' शब्द ने बौद्ध और जैन धर्मों में भी स्थान बनाया। आचार्यों ने अपने धर्म दर्शन के परिप्रेक्ष्य में 'ऊँ' को तदनुरूप अर्थ देकर अपनाया। इस प्रकार 'ऊँ' का भारतीय परम्परा में उच्च स्थान बन गया।

'ऊँ' के पर्यायवाची अनेक शब्द हैं, यथा– प्रणव, उद्गीथ आदि। वेद में प्रयुक्त 'ऊँ' के अर्थ का भी समय–समय पर विकास होता रहा। गोपथ ब्राह्मण में 'ओम्' को ऋक्, यजुष्, साम, सूत्र, ब्राह्मण, श्लोक आदि कहा गया है। (गोपथ ब्राह्मण 1.1.23) इसका प्रयोग यज्ञ में विभिन्न कामनाओं की प्राप्ति के लिए भी किया जाता था। 'अ उ म्' से बने 'ओम्' को सबका सारतत्त्व स्वीकार किया गया है। यजुर्वेद से लेकर वेदांग पर्यन्त समस्त वैदिक साहित्य में प्रणव एवं ओम् को एक ही माना गया है। छान्दोग्य उपनिषद् में उसे उद्गीथ भी कहा गया है। यज्ञ सम्पादन में ओम् का प्रयोग होने के साथ उसे धीरे–धीरे ब्रह्म की उपासना एवं मंत्रों के जप में भी स्थान मिलने लगा। 'ओम्' को ब्रह्म भी कहा गया– 'ओमिति ब्रह्म ओमितीदं सर्वम् (तैत्तिरीयोपनिषद् 1.8) आतस्तम्ब धर्म सूत्र में ओम् को स्वर्ग का द्वार कहा गया– ओंकारः स्वर्गद्वारं तस्माद् ब्रह्माध्येष्यमाणम्।' योगसूत्र में प्रणव को ईश्वर का वाचक प्रतिपादित करते हुए उसके जप को उसकी प्राप्ति का साधन बताया गया– तस्य वाचकः प्रणवः। तज्जपस्तदर्थभावनम् (योसूत्र 1.27–28)

एक मान्यता के अनुसार ओंकार और अथ शब्द ब्रह्मा के कण्ठ से निसृत हुए, इसलिए इन्हें मांगलिक भी माना गया है–

ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा।
कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्माद् मांगलिकावुभौ।।

ओंकार को मांगलिक मानने के कारण बीजमन्त्रों में इसका प्रयोग अन्य अक्षरों से पहले हुआ। अन्य बीजाक्षर बाद में प्रयुक्त हुए।

पुराणों में भी 'ओम्' का भूरिशः प्रयोग हुआ है। वायुपुराण के दो अध्यायों (अध्याय 20 तथा 32) में प्रणव तत्त्व का विशद विवेचन हुआ है। बीसवें अध्याय में ओंकार को ब्रह्मरूप में प्रतिपादित करते हुए उसका तीनों वेदों (ऋक्, यजुः, साम), तीनों लोकों (भू, भुवः, स्वः), तीनों अग्नियों (गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि), विष्णु के तीनों पदों (भूर्लोक, भुवर्लोक तथा नाकपृष्ठ) तथा तीनों स्वरों(उदात्त, अनुदात्त, स्वरित) से तादात्म्य बताया गया है। ओंकार के जप से नानाविध पापों से मुक्ति तथा अनेकविध सत्कार्यों से होने वाले फल से अधिक फल निर्दिष्ट किया गया है। वायुपुराण (26.15) में ओंकार से वेद का प्रादुर्भाव कहा गया है तथा ओंकार को

महेश्वर भी कहा गया है– स ओंकारो भवेद्वेदः अक्षरं वै महेश्वरः।' विष्णुपुराण, मार्कण्डेय पुराण, श्रीमद्भागवत महापुराण आदि में भी प्रणव या ओंकार का विवेचन मिलता है। वाशिष्ठ लिंग उपपुराण में कहा गया है कि प्रणव में संलग्न व्यक्ति को किसी प्रकार का भय नहीं रहता–

प्रणवे नित्ययुक्तस्य न भयं विद्यते क्वचित् ।।7.67।।

माण्डूक्योपनिषद् में जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति के साथ भी ओंकार के घटक अ, उ और म् के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए चतुर्थ अवस्था को ब्रह्म कहा गया है।

'ऊँ' को ध्यान के लिए आदर्श आलम्बन माना गया है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि मुझे स्मरण करता हुआ जो 'ओम्' अक्षर रूप ब्रह्म का जप या ध्यान करता है वह देह का त्याग कर परम गति को प्राप्त करता है–

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम्।। भगवद्गीता 8.13

ओम में अ को विष्णु का, उ को ब्रह्मा का तथा म को महेश्वर का भी वाचक माना गया है–

ब्रह्मोकारोऽत्र विज्ञेयः, अकारो विष्णुरुच्यते।
महेश्वरो मकारस्तु, त्रयमेकत्र तत्त्वतः।।

बौद्धदर्शन में तान्त्रिक साधना के अन्तर्गत ओम् का प्रयोग अनेक बार दिखाई देता है।

जैन परम्परा में भी ओम का प्रयोग दिखाई देता है। जैन धर्म में इसे परमेष्ठी का वाचक माना गया है। बृहद् द्रव्य संग्रह की टीका में इसका प्राचीन उल्लेख है–

अरिहंता असरीरा आयरिया तह उवज्झायमुणिणो।
पढमक्खरनिप्फणो ओंकारो पंच परमेट्ठी।।

अर्थात् अरिहन्त का अ, अशरीर का अ, आचार्य का आ, उपाध्याय का उ और मुनि का म् (अ + अ + आ + उ + म्) मिलकर 'ओम्' शब्द बनता है। इस प्रकार ओम् का जप करने से पंच परमेष्ठी का जप होता है। यहाँ स्पष्ट है कि जैन परम्परा में 'ओम्' शब्द का औचित्य उसकी अपनी मान्यता के अनुरूप सिद्ध किया गया है।

आचार्य हेमचन्द्र ने 'महादेव स्तोत्र' में वीतराग प्रभु को महादेव शब्द से वर्णित किया है, यथा–

महाक्रोधो महामानो, महामाया महामदः।
महालोभो हतो येन, महादेवः स उच्यते।।

अर्थात् क्रोध, मान, माया, मद और लोभ का जिसने हनन किया है वह महादेव है। इस अर्थ में वीतराग प्रभु ही महादेव सिद्ध होते हैं। भक्तामर स्तोत्र में भी आदिनाथ को विधाता, बुद्ध, शिव आदि शब्दों से सम्बोधित किया गया है।

जैन धर्म में नाम का नहीं गुणों एवं भावों का महत्त्व है। भव बीज रूप रागादि का नाश करने वाले जो कोई भी हो, ब्रह्मा, विष्णु, महेश या जिन उन सबको नमस्कार है– **भवबीजांकुरजनना, रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य।**
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै।। महादेव स्तोत्र, 44

जैनों ने ओम् शब्द को त्रिलोक का वाची भी माना है। इसके लिए अधोलोक का 'अ', ऊर्ध्वलोक का 'ऊ' एवं मध्यलोक का 'म्' लेकर 'ओम्' की निष्पत्ति की जाती है। जैन परम्परा में मूलतः 'अर्हन्' (अरहंत/अरिहंत) शब्द का प्रयोग अधिक हुआ है। जैनों में जप और ध्यान साधना में 'ओम्' और 'अर्हम्' का सम्मिलित रूप 'ओम् अर्हम्' भी प्रयुक्त हुआ है। कुछ उदाहरण– ऊँ ह्रीं अर्हं असिआउसाय नमः, ऊँ ह्रीं अर्हं पार्श्वनाथाय नमः।'

ओम् के प्रयोग को लौकिक कामनाओं की पूर्ति के साथ जोड़ना निश्चित ही हेय है। इस प्रकार के प्रयोग के उदाहरण भी जैन परम्परा में आ गये है, यथा–

ऊँकारबिन्दुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ओंकाराय नमो नमः।।

इस प्रकार का कथन निश्चित ही 'कामदं' शब्द के प्रयोग से संसार से जोड़ने वाला है। अन्यत्र भी जहाँ ओम् को सांसारिक कामनाओं की पूर्ति से जोड़ा गया है वह आध्यात्मिक दृष्टि से त्याज्य है। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि ओम् शब्द का प्रयोग मिथ्यात्व का सूचक है।

जैन परम्परा में ऊँ के साधनागत प्रयोग भी देखने में आते हैं। आचार्य शुभचन्द्र ने ध्यान साधना में प्रणव या ऊँ को साधन स्वीकार किया है, यथा–

स्मर दुःखानलज्वालाप्रशान्तेर्नवनीरदम्।
प्रणवं वाङ्मयज्ञानप्रदीपं पुण्यशासनम्।।–ज्ञानार्णव, 38 श. 31

आचार्य हेमचन्द्र ने भी योगशास्त्र में प्रणव का उल्लेख किया है–

कुम्भकेन महामन्त्रं प्रणवं परिचिन्तयेत्।

यह निश्चित है कि जैन परम्परा में 'ऊँ' शब्द का महत्त्व बाद में स्थापित हुआ है। उत्तराध्ययन सूत्र में 'ऊँ' का द्रव्य रूप से विशेष महत्त्व दिखाई नहीं पड़ता, यथा– **न वि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बम्भणो।** (उत्तराध्ययनसूत्र 25.31)

'ओम्' का प्रयोग जब जैन परम्परा में किया जाए तब उसका भाव वैसा ही ग्रहण किया जाना चाहिए, जैसा जैन परम्परा के अनुकूल हो। 'ऊँ' के प्रयोग मात्र को मिथ्यात्व का करार देना भी उचित नहीं लगता। हाँ आगम के पाठ या नमस्कार मन्त्र में ऊँ जोड़ना तो उचित नहीं। वह पाठ का आधिक्य ही होगा। किन्तु उसके प्रयोगमात्र को मिथ्यात्व समझ लेना भी उचित नहीं। क्योंकि शब्द प्रयोग मात्र से मिथ्यात्व नहीं हुआ करता। मिथ्यात्व शब्दों में नहीं दृष्टि में होता है। सम्यग्दृष्टि के लिए मिथ्याश्रुत भी सम्यक्श्रुत बन जाता है तथा मिथ्यात्वी के लिए सम्यक् श्रुत भी मिथ्याश्रुत का ही कार्य करता है। 'भगवान' शब्द जिस प्रकार सभी परम्पराओं में मान्य है उसी प्रकार 'ऊँ' शब्द ने भी सभी परम्पराओं में अपना स्थान बनाया है। ■

महावीर वाणी

श्रद्धा एव सम्यग्दर्शन

सद्धा परमदुल्लहा। -उत्तराध्ययनसूत्र 3.9

धर्म तत्त्व में श्रद्धा होना अत्यन्त दुर्लभ है।

संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं।-उत्तराध्ययन सूत्र 9.26

साधना में वही व्यक्ति संशय करता है जो कि मार्ग में ही रुक जाना चाहता है।

वितिगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं नो लहई समाहिं।-आचारांगसूत्र 1.5.5

शंकाशील व्यक्ति को कभी समाधि–शान्ति नहीं मिलती।

जाए सद्धाए णिक्खंतो, तमेव–
अणुपालिया, वियहित्तु विसोत्तियं। -आचारांगसूत्र 1.3.20

जिस श्रद्धा से दीक्षा धारण की है उसी श्रद्धा के साथ शंकादि घातक दुर्गुणों को छोड़ कर साधुजीवन की सम्यक् परिपालना करनी चाहिए।

सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं
बहवे रोयमाणा वि, णो य णं पडिवज्जई।। -उत्तराध्ययनसूत्र 3.10

श्रुति और श्रद्धा प्राप्त होने पर भी संयम मार्ग में वीर्य–पुरुषार्थ होना अत्यन्त कठिन है। बहुत से लोग श्रद्धासम्पन्न होते हुए भी संयममार्ग में प्रवृत्त नहीं होते।

धम्मसद्धाएणं सायासोक्खेसु,
रज्जमाणे विरज्जइ। -उत्तराध्ययनसूत्र 10.19

धर्म श्रद्धा से वैषयिक सुखों की आसक्ति छोड़ कर यह जीव वैराग्य को प्राप्त कर लेता है।

सम्मत्तदंसी ण करेई पावं।-आचारांगसूत्र 3.2

सम्यक्त्वधारी साधक पाप कर्म नहीं करता।

नादंसणिस्स नाणं,
नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो,
नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं।।-उत्तराध्ययनसूत्र 28.30

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता, ज्ञान के बिना चारित्र के गुण नहीं होते, गुणों के बिना मुक्ति नहीं होती और मुक्ति के बिना निर्वाण–शाश्वत आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं।। -उत्तराध्ययनसूत्र 28.29

सम्यक्त्व के अभाव में चारित्र गुण की प्राप्ति नहीं होती।

दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने धम्मं चर सुदुच्चरं।। -उत्तराध्ययनसूत्र 18.33

सम्यग्दृष्टि के द्वारा दृष्टिसम्पन्न होकर साधक सुदुश्चर धर्म का आचरण करे।

(क्रमशः 3)

साधना के ज्ञातव्य सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

पाटलिपुत्र में वसुभूति को आर्य सुहस्ती का निमित्त मिला और वह जैन धर्म का भक्त श्रावक बन गया। जब मन में लौ लग जाती है तो स्वयं जगने वाला भी अंधेरे में नहीं रहता और दूसरों को भी अंधेरे से उजाले में लाने का प्रयास करता है। दीपक दूसरों के लिए भी उजाला करता है और स्वयं को भी प्रकाशित करता है। एक दीपक को देखने के लिए दूसरा दीपक जलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जिस प्रकार दीपक स्वयं के लिये भी और दूसरों के लिये भी प्रकाश करता है, उसी प्रकार आपका ज्ञान-दीपक आपके भीतर जलेगा तो आपको उद्‌बुद्ध करता हुआ आपके अन्तर को भी प्रकाशित करेगा और दूसरे जीवों को भी प्रकाशित करेगा। वसुभूति ने सोचा कि सुहस्ती पधारे हैं तो उसके परिवार वालों को भी उनके सत्संग का लाभ मिलना चाहिए। यह विचार कर वसुभूति ने आर्य सुहस्ती से प्रार्थना की कि वे उसके घर को पवित्र कर उसके परिवार वालों को भी धर्मोपदेश देने की कृपा करें।

आपका किसी के साथ एक सीमा तक प्रेम होना ठीक है। आपका प्रेम हमारे प्रति असीम है तो वह आपके लिये लाभ का कारण है। साधु–साध्वी का श्रावक–श्राविकाओं की भक्ति पर अनुराग हो जाना जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक बनता है, लेकिन वह अनुराग सीमा तक रहे तभी साधक स्वयं की साधना निर्मल रखने एवं सामने वाले को भी ऊपर उठाने में सहायक होगा। गृहस्थ का त्यागी वर्ग के प्रति धर्मराग, प्रेम या अनुराग जितना अधिक होगा, उतना ही आरम्भ परिग्रह से गृहस्थ को दूर हटा सकेगा और शान्ति के नजदीक रख सकेगा। किन्तु साधु का आपसे ज्यादा राग हो जाय, ज्यादा निकट बढ़ने लगे, तो उचित नहीं होगा।

अतः साधु के अनुराग की सीमा है। हमारा आपके साथ अनुराग सीमातीत होगा तो हमारी संयम मर्यादा को वह गौण कर देगा। परन्तु आपकी हमारे प्रति अनुराग की सीमा नहीं होनी चाहिये। वह असीम होना चाहिये।

वसुभूति के प्रति आर्य सुहस्ती के मन में अनुराग था। साधु का श्रावक के प्रति अनुराग हो तो भी सावधान रहे, असावधान न हो। यदि राग सीमा से बाहर चला गया तो संसार का कल्याण करने में वह असमर्थ बन जाएगा। आदमी कभी अपनी साधना की सीमा को भूल भी सकता है। वसुभूति आया क्यों? आर्य सुहस्ती के प्रति अनुराग था, उनके प्रति उसका प्रेम था।

श्रमण संस्कृति के आदर्श महासन्त

एक दिन वसुभूति के यहाँ उसके पारिवारिक जनों को आचार्य सुहस्ती उपदेश दे रहे थे कि उस समय आचार्य महागिरि वहाँ भिक्षार्थ पधार गये। स्वयं भिक्षार्थ भ्रमण कर अपने लिये भिक्षा लाना–यह आर्य महागिरि का प्रण था। जैसा

कि पहले बताया जा चुका है, आर्य महागिरि सैंकड़ों साधुओं के महान संघ के गणनायक आचार्य थे। उनका अपने साधना-मार्ग में अत्युच्च कोटि का भाव होने के कारण उन्होंने यह कठोर प्रण कर लिया था कि श्रमण संघ को वाचना देने के अतिरिक्त मुझे अनवरत साधना में, आत्म–चिन्तन में अधिकाधिक समय तक निरत रहते हुए अपने लिए एषणीय निर्वद्य आहार स्वयं लाना है।

इसके पीछे उनका एक दृष्टिकोण था। जैन साधु देशविरति गृहस्थ से सेवा नहीं लेता। अव्रती से तो सेवा लेने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। यदि हमारा रजोहरण नीचे रखा है तो, उसे लेने के लिए हमें स्वयं को नीचे उतरना पड़ेगा। अगर आप झिला दें तो क्या बाधा है? मूलव्रत में कोई बाधा है या उत्तरव्रत में? नहीं, आप नहीं झिला सकते। क्यों नहीं झिला सकते? बात यह है कि जैन साधुओं ने संकल्प कर रखा है कि जीवन में सदा स्वावलम्बी रहना, कभी परावलंबी नहीं होना।

सर्वज्ञ सर्वदर्शी प्रभु ने पवित्र श्रमण जीवन के आचार में कहीं किसी प्रकार के शैथिल्य के लिए किंचित्मात्र भी अवकाश नहीं रखा। यदि एक छोटी सी वस्तु को भी लेने के लिए आपका सहारा लिया तो क्या हमारा स्वावलंबीपन बचा रहेगा? नहीं। इसीलिये जैन श्रमण गृहस्थों से किंचित्मात्र भी किसी प्रकार की सेवा नहीं लेते। आर्य महागिरि भी इस भाव की उत्कर्षता को लेकर सैंकड़ों साधुओं के होते हुए भी खुद की भिक्षा लाने हेतु स्वयं ही वसुभूति के घर पर पहुंचे। संयोग से वहां आर्य सुहस्ती विराजमान थे। वे निष्प्रयोजन वहां नहीं बैठे थे, बल्कि वे प्रवचन कर रहे थे– वसुभूति के परिवार के लोगों के बीच में। ऐसा करने का तात्पर्य उनका यह था कि उन लोगों को जैन धर्म का अनुयायी बनाया जावे। ज्यों ही महागिरि वहां पहुंचे, महागिरि को देखते ही आर्य सुहस्ती तत्काल खड़े हो गये।

जिन शासन विनय प्रधान है। ढाई हजार वर्ष बीत जाने पर भी भगवान महावीर के धर्म संघ में विनय का व्यवहार अभी भी चल रहा है। यदि किसी से हमारा मनमुटाव भी हो जाय तो विनय हमको मार्ग पर ला सकता है। जिनशासन की तेजस्विता में कोई अंतर नहीं आएगा। आर्य सुहस्ती राजाओं के राजगुरु होते हुए भी विनयधर्म एवं सत्य के बड़े उपासक थे, अतः महागिरि के सम्मान में उन्होंने खड़े होने में संकोच नहीं किया। वे तत्काल खड़े हो गये। वसुभूति ने साश्चर्य सोचा कि इतने बड़े आचार्य होते हुए भी आर्य सुहस्ती एक बड़े साधु को आया देखकर खड़े हो गये। ऐसा यह साधु कौन है? इस बात की उसके मन में जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही था। वह मन ही मन ऊहापोह करते हुए सोचने लगा– "इस साधु के आने पर इतने बड़े आचार्य सुहस्ती खड़े हुए हैं तो यह कोई साधारण साधु प्रतीत नही होता। ऐसा लगता है कि संभवतः यह मेरे गुरु आर्य सुहस्ती के भी गुरु हों।"

अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिये उसने आर्य सुहस्ती से पूछा– "आचार्य देव! आप इन्हें देखते ही खड़े क्यों हुए? क्या ये आपसे भी बड़े हैं?" आर्य सुहस्ती ने कहा– "हाँ, श्रेष्ठिमुख्य! ये मेरे ज्ञान गुरु हैं। मेरे दीक्षा गुरु तो आर्य

स्थूलभद्र थे, पर मेरे दीक्षित होने के एक दो वर्ष पश्चात् ही मेरे दीक्षा गुरु आर्य स्थूलभद्र स्वर्गस्थ हो गये। इन महामहिम आर्य महागिरि ने मुझे आगमों एवं 10 पूर्वों का ज्ञान दान किया। अतः आप मेरे ज्ञान गुरु भी हैं और बड़े गुरु भाई भी।" आर्य सुहस्ती को ज्ञान किसने सिखाया? आर्य महागिरि ने। आर्य महागिरि 10 पूर्वों के ज्ञाता थे। आर्य सुहस्ती ने वसुभूति से पुनः कहा– "ये मेरे ज्ञान गुरु बड़े तपस्वी और उग्र विहारी हैं। ये अपनी भिक्षा स्वयं लाते हैं। साधुओं से भिक्षा मंगवाने में इनका मन आश्वस्त अथवा संतुष्ट नहीं होता। ये दूसरी बात यह भी सोचते हैं कि अपने आहार विहार कें लिए दूसरों पर यदि मैं आश्रित हो जाऊँ तो यह उचितं नहीं रहेगा।"

आर्य सुहस्ती ने वसुभूति को अपने गुरु का परिचय देते हुए बताया कि ये ऐसी भिक्षा लाते हैं जिसे गृहस्थ ने अपने लिए अनुपयोगी समझ कर बाहर डाल देने के लिए रखा हो, जो काम आने वाली नहीं हो, केवल बाहर डालने लायक हो अथवा पशु पक्षियों को खिलाने लायक हो। ऐसी चीज महागिरि भिक्षा में लेते हैं। इतनी कठोर जीवन चर्या सुनकर वसुभूति के मन में महागिरि के प्रति बड़ी श्रद्धा और भक्ति जगी। उसके अन्तर्मन में इस प्रकार के भाव उत्पन्न हुए कि वह भी महामुनि महागिरि को अपने यहाँ प्रतिलाभ देकर धन्य हो जाय।

महागिरि के चले जाने के पश्चात् वसुभूति ने अपने सेवकों से कहा– "देखो यह महान् तपस्वी साधु परम वैरागी है। किसी भी गृहस्थ के यहाँ, उसके घर के सभी सदस्यों के भोजन कर लेने के पश्चात् घर में जो भोजन सामग्री बच जाय और वह उस गृहस्थ के काम में आने लायक नहीं रहे, उस भोजन को भिक्षा के रूप में ये मुनि ग्रहण करते हैं।

सावधान! धर्मानुराग पर कहीं राग का रंग न चढ़ जाय

राग वश बहुत से व्यक्ति प्रायः असत्य भाषण करने के लिये भी उद्यत हो जाते हैं। आज भी इसी प्रकार के अनेक नमूने देखने में आते हैं। उस समय भी इस प्रकार के नमूने मिलते थे। वस्तुतः श्रावक श्राविकाओं में अनुराग की एक सीमा होनी चाहिये। उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि उनका अनुराग किसी भी दशा में धर्मानुराग की सीमा का उल्लंघन न करने पाये। उन्हें साधुओं को भिक्षा देते समय सही स्थिति जता कर भिक्षा देनी चाहिये। चाहे महाराज ज्यादा लेवें अथवा न भी लेवें तो कोई बात नहीं। परन्तु उनको कभी अंधेरे में नहीं रखना चाहिये। कोई वस्तु अपने लिए बनाई या मुनि के लिये बनाई है या सूझती (निर्दोष) है या नहीं, यह सब भिक्षार्थ आये हुए मुनि को स्पष्ट रूप से बता देना श्रावक का फर्ज है। उन्हें अंधेरे में रखना अपना पुनीत कर्त्तव्य का उल्लंघन करना है। विवेकशील श्रावक–श्राविकाओं को साधु–साध्वियों का चारित्र निर्मल रखने में पूर्ण सहयोग देना चाहिये। श्रावक–श्राविकाओं में यदि विवेक नहीं होगा तो साधु–साध्वियों का संयम भी उच्च और निर्मल नहीं रह सकेगा। इसलिए श्रावक–श्राविकाओं में विवेक का होना तथा उनका अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहना परमावश्यक है।

वसुभूति की तरह आप सब भी सत्संग के निमित्त का लाभ उठाकर धर्ममय जीवन का निर्माण करेंगे तो इहलोक और परलोक में कल्याण एवं शांति प्राप्त कर सकेंगे।■

जीवन की घड़ियाँ हैं छोटी

श्री प्रकाश गुन्देचा

जीवन की घड़ियाँ हैं छोटी, इनको ना बरबाद करो।
इन्तजार नहीं करती ये किसी का, इनको तुम आबाद करो।।
समय तो बहती धारा है, प्रवाह नहीं रुकता इसका,
किसके भरोसे बैठे हो अब, इन्तजार तुम्हें है किसका,
क्यूँ तुम अपना समय गँवाओ, कोई न देता साथ किसी का,
खुद की पीड़ा खुद को होगी, अपना काम आप करो।।1।।

जीव अकेला यहाँ आता है, जग से अकेला जाता है,
साथ न अपने कुछ लाता और, साथ न कुछ ले जाता है,
बंधी मुट्ठी आकर मानव, खाली मुट्ठी जाता है,
यह दुनिया का भेद साथियों, समय से तुम साक्षात् करो।।2।।

सुख दुःख दोनों आते रहते, इनसे कभी नहीं डरना,
कद्र करो छोटे जीवन की, व्यर्थ नहीं होगा मरना,
जन्म अमर हो जाये तुम्हारा, ऐसा अच्छा काम है करना,
अन्तिम वक्त चिता में जलना, फिर क्यूँ अन्याय के काम करो।।3।।

गर्व कभी अच्छा नहीं होता, गर्व कभी साथ न देता,
थूकेगा जो ऊपर मुँह करके, थूक उसी के मुँह गिरता,
घमण्ड नाम बहुत बुरा है, पथ से अपने ये भटकाता,
गर्व बिगाड़ देता रिश्तों को, कुछ तो समझ से काम करो।।4।।

वक्त की ठोकर में रहते, ये हुकूमत ये समाज,
क्या जाने हम किस घड़ी, वक्त बदल दे अपना मिजाज,
वक्त की मुट्ठी बन्द होती, इसका नहीं कोई जवाब,
आये जीवन सबके काम, तहे दिल ऐसे काम करो।।5।।

कली फूल बन जाती है, फूल में बहुत खुशबू होती,
वक्त एक दिन ऐसा आता, खुशबू फूल से बिछड़ जाती,
मिट्टी में मिल जाता फूल वो, समय की पारी जब आती,
समझो जीवन की सच्चाई, समय का तुम सदुपयोग करो।।6।।

जीवन के क्षण बहुत कीमती, दिल से आवाज यही आती,
घड़ी एक बार चली गई वो, लौट के फिर कभी ना आती,
'प्रकाश' कीमत इसकी समझो, जिन्दगी बार–बार ना आती,
फिर पछताये कुछ ना होगा, ऐसा क्यूँ तुम काम करो।।7।।

–श्याम भवन, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर (राज.)

सम्यक् चारित्र में चरण बढाएँ

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा.

सम्यक् आचरण से जीवन सार्थक बनता है। आज आवश्यकता चारित्र में चरण बढ़ाकर जीवन को उन्नत एवं सार्थक बनाने की है। मुनि श्री ने 23 सितम्बर 2001 को धुलिया में फरमाये अपने प्रवचन में श्रावक–समुदाय से संयम, सादगी एवं सम्यक् आचरण में चरण बढाने की प्रेरणा की है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। 23 सितम्बर को महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी के पश्चात् क्रमशः उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने प्रवचन फरमाया था। प्रवचनों को उसी क्रम से प्रकाशित किया जा रहा है।–**सम्पादक**

स्याद्वाद के संस्थापक, अहिंसा भगवती के आराधक, अपरिग्रह के उपदेशक अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों को तथा ज्ञानदान के दायक, शील–सुरभि के साधक, बारह भेदे तप के आराधक, भवनाशिनी भावना के भाव आराधक अनन्त उपकारी गुरु भगवन्तों को वन्दन!

बन्धुओं!

प्रवचन में उपस्थित होने के लिए आचार्यदेव को वन्दन कर रहा था। आचार्यदेव, जिन्होंने आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज के सौहार्द के संस्कार लिए हैं, एक अलग सम्प्रदाय के आचार्य होते हुए भी सभी सम्प्रदायों के साथ कैसे सौहार्द रखा जाय, इसका पूर्ण उपयोग रखते हैं। आचार्य देव के श्रीचरणों में धुलिया संघमंत्री जी ने सूचना दी कि पूना में प्रवर्तक श्री रमेशमुनि जी महाराज के साथ रहने वाले एक सन्तरत्न का स्वर्गगमन हो गया। आचार्यदेव ने कहा–यदि आप कहें तो हम प्रवचन बन्द रख सकते हैं। मंत्री जी ने इस पर कहा– हम अपनी व्यवस्थानुसार पहले दिवंगत संत को श्रद्धांजलि देंगे और उसके बाद प्रवचन का लाभ मिले, उसमें हर्ज नहीं है। आज बाहर के अनेक श्री संघ आए हुए हैं, हमारी श्रद्धांजलि के बाद उन्हें प्रवचन श्रवण का लाभ भी मिलना चाहिये।

मैं प्रवचन सभा में उपस्थित हो पट्ट की प्रतिलेखना कर जैसे ही बैठा था कि डागा जी ने कहा– महाराज, नवकार मंत्र तो फरमाओ। डागा जी को शायद संत के स्वर्गस्थ होने की बात ध्यान नहीं थी।

आज जिस सन्तरत्न का स्वर्गवास हुआ, उन संजय मुनि जी का परिचय दूँ। वे जब गृहस्थ थे हमारे तमिलभाषी संत श्रीचन्दजी महाराज के चरणों में ज्ञानाराधन हेतु उपस्थित हुए। उन्हें नमस्कार मंत्र का बोध कराने एवं धर्म का पहला उपदेश देने वाले हमारे सन्त थे– श्रीचन्द जी महाराज। आगे चलकर उन्होंने संयम भले ही प्रवर्तक श्री जी के पास लिया, पर धर्म के सम्मुख लाने का श्रेय आचार्य भगवन्त के सुशिष्य श्रीचन्द जी महाराज को रहा। दीक्षा अंगीकार कर वे तप–संयम के माध्यम से आगे बढ़े, किन्तु बीज वपन यहीं से हुआ।

संयम में रहने वाले संत का महत्त्व है। असंयम में जाने वाले हजारों–हजार प्राणी हैं, उनका न जीवन गाया जाता है, न मरण। संयम में जिनका मरण होता है वे जन्म–मरण घटाते हैं। जाना सबको है, परन्तु कैसे जाया जाय? हमने सब कलाएँ सीखी, मगर मरण को कैसे सुन्दर बनाया जाय, इसका ज्ञान नहीं किया तो कहना होगा– उस जीवन का उतना महत्त्व नहीं। आपको घर–परिवार और तन–धन की सुरक्षा करने की कला याद है, पर यह कितनों के ध्यान में आता है कि जो जन्मा है उसे जाना पड़ेगा। मरण कैसे सुधारा जाय? जिसने मरण की कला सीख ली, कहना होगा उसने सब सीख लिया।

हम जिस आर्य संस्कृति मे पल रहे हैं, उसका अपना आदर्श है। भारतीय संस्कृति जन–जन के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। आकर्षण का कारण प्राकृतिक सौन्दर्य नहीं, भाषा की विविधता नहीं, पर्वो की अधिकता नहीं। विशेषता है यहां की धर्म पद्धति की, विशेषता है चारित्र निष्ठा की।

भारत का निर्माण करने वाला चरित्र है। आपको ज्ञात होगा स्वामी विवेकानन्द जब अमेरिका पहुंचे तो उनकी ढीली–ढाली पोषाक नीचे धोती, ऊपर दुपट्टा और सिर पर पगड़ी देखकर वहां के लोग हंसने लगे। वस्त्र शरीर की सुरक्षा, लज्जा के निवारण और शीत ताप के परीषह को सहन करने के लिए धारण किये जाते हैं। आज आपके वस्त्र कैसे हैं, इसकी मुझे कहने की जरूरत नहीं। आज कई लोग हैं जो चटकीले–भड़कीले वस्त्र पहनते हैं। आज के युवक और युवतियां अपने आपको स्मार्ट दिखाने की चेष्टा करते हैं। मेरे वस्त्र दूसरों को आकर्षित–प्रभावित करेंगे, यह भी कुछ लोगों की भावना रहती है, इसलिये रंग–डिजायन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बहिनें तो मैंचिग के लिए क्या–क्या करती हैं, आप जानते हैं। जो वस्त्र शरीर की सुरक्षा करने वाले हैं, परिवर्तन के कारण वे नुकसानप्रद तो नहीं हो रहे हैं, यह आपके सोचने का विषय है। आज तो धर्मसभा में भी ऐसे कपड़े पहन कर आते हैं जिनमें न अंग का संरक्षण है और न ही लज्जा का निवारण।

विवेकानन्द के वस्त्रों को देखकर अमेरिका के लोग हंसने लगे। स्वामी जी प्रत्युत्पन्नमति वाले थे, देश की गौरव–गरिमा को द्विगुणित करने वाले थे। नीति का कथन है– जहां धर्म और राष्ट्र की गरिमा कम होती हो वहां मौन नहीं रहना चाहिये। धर्म का जहां छेद हो रहा है, उस पर कुठाराघात किया जा रहा हो तो वहां मौन रहने की बजाय विरोध करना चाहिये। राष्ट्र के गौरव पर कहीं आंच आ रही है या हमारी आचार संस्कृति में कमी बताई जा रही है, वहां भी मौन नहीं प्रतिकार करना चाहिये। बहुत से ऐसे हैं जो मानकर चलते हैं– 'करेला वो भरेला, अपने को क्या करना' यह सोच सही नहीं है। बोलने की जगह बोलना चाहिये, विरोध प्रकट करने की जगह चुप नहीं रहना चाहिये। आज अधिकांश लोग मूक बनकर देखते रहते हैं, बोलते नहीं। बोलने की जगह चुप रहने का असर आप देख ही रहे हैं। अनैतिक आचरण करने वाले शैतानों से आज जितना खतरा नहीं,उससे ज्यादा

खतरा नहीं बोलने वालों से है। दुर्जनों की दुर्जनता से जितना खतरा नहीं, उतना सज्जनों की निष्क्रियता से खतरा है। जरूरत है आचार और सिद्धान्तों से समझौता करने की बजाय अन्याय–अनीति के प्रतिकार की।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज के समक्ष ऐसे कई अवसर उपस्थित हुए। भगवन्त सदा यही फरमाते– मैं संगठन करने को तैयार हूं, पर आचार और सिद्धान्त के साथ समझौता नहीं कर सकता। मेरे कहने का अभिप्राय यही है कि जहां भी आचार का हनन होता हो, तो वहां मौन नहीं रहनी चाहिये।

जैन संस्कृति अहिंसा का उपदेश देती है, करुणाशील बनने की प्रेरणा देती है, कायर बनने की नहीं। श्रावक कैसे होने चाहिये, आपने कई दृष्टांत सुने होंगे। राजा चेटक के पास हल–विहलकुमार पहुंचते हैं। राजा चेटक श्रावक था, पर वह न्याय और शरणागत की रक्षा के लिए युद्ध करने हेतु तैयार हो जाता। अहिंसा से शौर्य है, ऊर्जा है।

विवेकानन्द हँसने वालों से बोले– तुम्हारी संस्कृति का निर्माण दर्जी करता है और हमारी संस्कृति का निर्माण आचरण से होता है। मैं राम, कृष्ण, महावीर किन–किनके आदर्श आपके सामने रखूं। महाराष्ट्र की भूमि पर हम बैठे हैं। छत्रपति शिवाजी का नाम आप सब जानते हैं। उनके शौर्य की गाथाएँ आपने कई बार सुनी होंगी। मैं उनकी चारित्रनिष्ठा का उदाहरण रखना चाहूँगा। उन्होंने देश पर विजय मिलाई और अपना राज्य समर्थ गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया। गुरु के प्रति कैसी भक्ति होनी चाहिये यह बात सीखने की है। आज भक्त जय–जयकार करना तो जानते हैं, नारे लगाना जानते हैं। बोलने में बोलते हैं– गुरु हस्ती के दो फरमान, सामायिक–स्वाध्याय महान। गुरु हीरा का क्या संदेश, व्यसन मुक्त हो सारा देश। नारे जोर–जोर से लगाये जा रहे हैं। क्या नारे लगाने मात्र से व्यक्ति अथवा संघ–समाज व्यसन मुक्त हो गया? उपदेश देना हमारा काम है, आदेश देना नहीं। आज आप जय–जयकार कर लेंगे, बेनर लगा देंगे, फोटो नहीं रखना चाहिए, फिर भी आपके यहां मिल जायेगा, लेकिन गुरु के सिद्धान्त को जीवन में उतारने की बात आने पर जो उत्साह होना चाहिए, दिखाई नहीं देता।

गुरु के प्रति श्रद्धा कैसी होनी चाहिये, भक्ति का रूप कैसा होना चाहिये यह आपको इतिहास से सीखना होगा। गौतमस्वामी की प्रभु महावीर के प्रति कैसी भक्ति थी? जम्बू ने सुधर्मा के चरणों में कैसा समर्पण रखा? हमारे आचार्यदेव का आचार्यभगवन्त के श्रीचरणों में कितना समर्पण और कैसी भक्ति रही, आपने देखी है। आप नारे लगाते हैं, जय–जयकार करते हैं, गले मे नहीं पहनने योग्य लॉकिट पहन लेते हैं, अंगूठी में और पेन में नियम विरुद्ध जाकर फोटू लगाते हैं, उससे काम चलने वाला नहीं है।

आचार्य देव (पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.) एक गांव में पधारे। वहां एक भाई सायं मेरे पास आया और कहने लगा– आचार्य श्री की वाणी में बड़ा तेज है

और कथनी–करणी में एकरूपता है। इनका जीवन आगम वचनानुसार है। आगम वचन है–'दिवा वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा' मैं आचार्य श्री को अपना गुरु बनाना चाहता हूँ।

मैंने उस भाई से पूछा– तुमने पहले किसी को गुरु तो नहीं बनाया?

उस भाई ने कहा– नहीं।

मैंने उस भाई से कहा– तुम प्रातःकाल दया पालना। तुम्हारा सोच सही है। मारवाड़ी में कहावत है– 'पाणी पीणो छाणने, गुरु बनानो जाणने' अगर जान–समझकर गुरु नहीं बनाया तो धोखा खा सकते हैं। आज गुरु बनाने में लोग सोचते नहीं, इसलिये 'कानियो–मानियो कुर, तू चेला मैं गुरु' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

वह भाई दूसरे दिन सवेरे उपस्थित हुआ। आचार्यदेव ने उसे देव–गुरु–धर्म का स्वरूप समझाया और कहा– "संयम का पालन करने वाला कोई संत आए, उनकी सेवा में कसर नहीं रखना।" एक तरफ यह स्थिति है तो दूसरी तरफ कहा जाता है– अपने गुरु के आने पर सर्वस्व न्यौछावर कर देना, दूसरे संत आए तो वहां जाना तो दूर की बात, घर भी नहीं बताते। आप स्वयं विज्ञ हैं, इस पर विचार करें।

दूसरे दिन वही भाई आया और मुझसे कहने लगा– बाबजी! मुझे गुरुदेव का एक फोटो दो। मैं रोज उनके दर्शन करूंगा। मैंने कहा–भाई! न हम फोटो रखते हैं और न ही फोटो देते हैं। हम स्थानकवासी सिद्धान्तों के पोषक हैं। आज फोटुओं का इतना प्रचार–प्रसार हो गया कि जहां देखो संतों के फोटो मिलेंगे, चाहे उनकी आशातना ही क्यों न हो।

हां, तो मैं कह रहा था कि शिवाजी की भक्ति कैसी थी? आपने एकलव्य की गुरु-भक्ति सुनी होगी। एकलव्य ने गुरु भक्ति से अंगूठा दे दिया। आप गुरु को अंगूठा न दें किन्तु उन्हें अंगूठा भी न दिखाएं। जरूरत है जय–जयकार के बजाय सिद्धान्तों के पालन की। आप सिद्धान्तों का सम्यक् रूप से पालन कर लें, आपकी गुरु भक्ति हो जायेगी।

शिवाजी ने अपने शौर्य से राज्य मिलाया और गुरु को समर्पित कर दिया। उनकी चारित्रिक निष्ठा कैसी थी? सैनिक एक मुसलमान युवती को जो अनन्य सुन्दरी थी, लूट कर लाए। उस सुन्दरी को शिवाजी महाराज के पास ले गये और बोले – हम आपके लिए अनुपम भेंट लाए हैं। शिवाजी देखने के साथ क्रोधित हो गये। वे परनारी को माता–बहन मानते थे।

पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा, दृष्ट्वा योषितयौवनं।
सन्निधौ नारीं दृष्ट्वा, कस्य नो चलते मनः।

कोई फल–फूल दिखाई देगा तो मन सुगन्ध लेने एवं खाने को चलित हो सकता है। एकान्त स्थान पर रूपवती नारी देखकर विकार आ सकते हैं, पर

जिनकी चारित्रिक निष्ठा है तो उनके मन में होगा–

पिता यस्य सदाचारी, माता यस्य पतिव्रता
उभाभ्यां यो समुत्पन्नः तस्य नो चलते मनः।।

नीतिकार कहते हैं– पिता सदाचारी हो और माता पतिव्रता हो तो सामने स्वर्ग की अप्सरा भी आ जाय तो चारित्रवान का मन दोलायमान नहीं होता। श्रावक का चरित्र कैसा होता है, आपने आनन्द और कामदेव श्रावक के जीवन चरित्र के प्रसंग से सुना होगा। उनके लिए अन्तःपुर में जाने की रोक टोक नहीं थी। एक ओर वह आदर्श है, आज तो धर्मस्थान में भी आंखे घूमती रहती हैं।

शिवाजी ने सिपाहियों को डांटा, फटकारा और उस युवती से कहने लगे– "मां! मैं तेरे उदर से पैदा होता तो मैं भी रूपवान होता।" चारित्रनिष्ठा का ऐसा रूप आप में होना चाहिये। यहां जलगांव, मुम्बई, रायचूर, जोधपुर वाले उपस्थित हैं तथा वे अपने ग्राम–नगर–प्रान्त को पावन करने एवं चातुर्मास करने की विनतियां रख रहे हैं। दक्षिण वाले प्रार्थना करते हैं– कृपासिन्धु आप दक्षिण पधारो, वहां भक्त आपके लिए तरस रहे हैं। अलबेली नगरी मुम्बई वाले सन्त–भगवन्त की चरण सेवा को आतुर हैं। मारवाड़ वाले कहते हैं– आपके बिना मारवाड़ सूना है, आप मारवाड़ पधारें। बन्धुओं! यह आपकी भक्ति भावना है। संत कहीं एक स्थान पर ही जा सकते हैं, सबकी उत्कृष्ट भावना होते हुए भी सब जगह नहीं पहुंच सकते। सन्त सब जगह नहीं पहुंच सकते, लेकिन आप उनके सिद्धान्तों को, उपदेशों को आचरण में लाना चाहें तो ला सकते हैं। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव की भाषा में कहूं– आचरण हो, भक्ति का सक्रिय रूप हो।

आप श्रावक हैं, आप अपना कर्त्तव्य करें, सन्त अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं। आप विनतियां कर रहे हैं, आपकी सुन्दर भावना भी है। मेरा कथन मात्र इतना ही है कि विनती कर लेने मात्र से आप संतुष्ट नहीं हों, लेकिन चारित्र में चरण बढ़ाकर आदर्श उपस्थित करना चाहिये, इसी मंगल भावना के साथ.....

दो क्षणिकाएँ

डॉ. संजीव प्रचंडिया 'सोमेन्द्र'

दिशाबोध

दरिया के दो किनारे
नाव और पतवार
काफी हैं ये सब
पार उतरने के लिए
या जगत् के जंगल में
भटकने के लिए।।

अन्तर

जंगल और राख के बीच
अन्तर सिर्फ इतना है
एक में जीवन है
और दूसरे में जीवन का सार
एकदम सचित्र व्यवहार

–मंगल कलश, 394 सर्वोदय नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़–202001

सच्चा गुरु व्यक्ति को कल्याण के मार्ग से जोड़ता है

उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.

गुरु वह है जो गुरु का निर्माण करताहै। गुरु वह है जो व्यक्ति को अपने से एवं सम्प्रदाय से नहीं, अपितु धर्म से जोड़ता है। वह व्यक्ति के कल्याण का महत्त्व देकर चलता है। इस प्रकार के निर्मल विचारों से गुम्फित है उपाध्यायप्रवर द्वारा 23 सितम्बर 2001 को धुलिया में फरमाया गया यह प्रवचन। आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है।–**सम्पादक**

जैन धर्म में देव, गुरु और धर्म– ये तीन तत्त्व विशेष महत्त्व के हैं। 'देव' धर्म के संस्थापक होते हैं, 'गुरु' प्रचारक। सिद्धान्त को 'धर्म' कहा गया है। गुरु का देव और धर्म के बीच का स्थान है। बीच में रहने वाला दोनों तरफ दृष्टि रखता है देहली–दीपक न्याय की तरह। गुरुओं का काम जोड़ने का है, वे जोड़ते चले जाते हैं। गुरु हर समय व्यक्तियों को धर्म से जोडने का काम करते हैं। आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) के जीवन को लेकर आपके सामने बात रखी जा रही है।

गुरु कैसा होना चाहिए? **गुरु अपने से नहीं जोड़कर, सम्प्रदाय से नहीं जोड़कर व्यक्ति–व्यक्ति को धर्म से जोड़ता है। जो अपने से जोड़ता है वह गुरु ममत्व को बढ़ाता है। सम्प्रदाय से जोड़ने वाला परिग्रह बढ़ाने का काम करता है और जो धर्म से जोड़ता है वह अपना तो कल्याण करता ही है, जिसको जोड़ता है उसका भी कल्याण करता है।**

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज जो भी उनके सान्निध्य में आया, उसे जोड़ते गये। बच्चे से वृद्ध तक सबको उस महापुरुष ने धर्म से जोड़ा। बच्चों के लिए धार्मिक पाठशालाओं की आवश्यकता बताई तो युवकों के लिए सामायिक–स्वाध्याय का अवलम्बन दिया। वृद्धों के लिए साधना की बात पर जोर दिया। जैसा व्यक्ति देखा उसकी योग्यता और प्रतिभा के अनुसार वे सबको जोड़ते गये।

गुरुदेव फरमाते थे– राग तीन तरह के होते हैं। एक होता है– व्यक्ति राग, दूसरा सम्प्रदाय राग और तीसरा होता है– धर्म राग। व्यक्ति राग, व्यक्ति रहता है तब तक रहता है।सम्प्रदाय राग जब तक सम्प्रदाय है तब तक रहेगा। धर्म राग हमेशा बना रहता है। जुड़ाव में भी कई व्यक्ति राग से जुड़े होते हैं। गुरु के प्रति राग बुरा नहीं है, किन्तु व्यक्तिगत राग व्यक्ति के जाने पर समाप्त हो जायेगा। दिवाकर श्री चौथमल जी महाराज ने कई अजैनों को जैन बनाया। लोगों को उनके साथ व्यक्तिगत राग ही रहा, धर्मराग नहीं। उनके चले जाने पर राग समाप्त हो गया। दिवाकरजी महाराज ने कई मोचियों को, मालियों को, तैलियों को, सुनारों को और यहां तक कि मुसलमानों तक को जैन बनाया। राग के कारण लोग उनके भक्त बन गये। जब तक दिवाकर जी रहे वे जुड़े रहे।

व्यक्ति शाश्वत नहीं रहता। धर्म शाश्वत रहता है। सम्प्रदाय भी स्थायी रहने वाली नहीं है। भूतकाल में अनेक सम्पद्रायें हुई, कई परम्पराएं बनी, परन्तु अच्छी–अच्छी सम्प्रदायें समाप्त हो जाने पर उनका पता तक नहीं रहा।

आचार्य भगवन्त फरमाते थे– धर्म शाश्वत है और रहेगा। त्रिकाल में धर्म रहने वाला है। भगवन्त ने व्यक्ति–व्यक्ति को सामायिक–स्वाध्याय से, व्रत–नियमों से और साधना–आराधना से जोड़ा। किसी में विनय का गुण देखा तो उसे विनय धर्म में लगाया। उस महापुरुष की पैनी दृष्टि थी, व्यक्ति–व्यक्ति की परख थी। वे व्यक्ति की प्रतिभा समझकर उसे जोड़ते और उसकी प्रतिभा को निखारते। गुरुदेव छोटे से बड़े सबको धर्म में जोड़ते गये। जिसे भी गुरुदेव धर्म में जोड़ते उसे पता तक नहीं लगता था। अंगुली पकड़ते–पकड़ते ऊपर तक पहुंचा देते। पहले–पहल पांच नमस्कार मंत्र सिखाने से लेकर गुरुदेव ने पंच महाव्रती तक बना दिये। जुड़ने वाला व्यक्ति भी सहर्ष नियमों में आगे बढ़ता जाता। गुरुदेव जानते थे सराग संयम से व्यक्ति आगे बढ़ सकता है।

अधिकांश गुरु अपने भक्तों को खुद से जोड़ते हैं। एक मौलवी के पास एक शिष्य पहुंचा। कहने लगा– मौलवी साहब! मुझे हुक्म दीजिये मैं लोगों को खुदा से जोडूं। मौलवी साहब कहने लगे– खुदा से जरूर जोड़ना, खुद से मत जोड़ना। आचार्य भगवन्त का हृदय बड़ा विशाल था। उनकी भावना रहती श्रमण संघ उन्नति करे। श्रमण संघ से निकलने के बाद भी साधक उनका परामर्श लेते। गुरुदेव के हृदय में विशालता थी, इसीलिये वे जहां भी जाते वहां धर्म ध्यान का स्वतः ठाट लग जाता।

गुरुदेव में व्यक्तिराग–सम्प्रदायराग नहीं, धर्म का राग था। जैन हो या जैनेतर, वे सबको धर्म साधना में निरन्तर आगे बढ़ाते रहे। धर्मराग शाश्वत रहता है। भारत में अन्यान्य धर्म भी रहे और हैं भी। किन्तु कुछ धर्म ऐसे भी हैं जो व्यक्ति राग से जोड़ते हैं। आचार्य भगवन्त ने साधक को साधक तक ही नहीं रखा, साधना के द्वारा सिद्धि का रास्ता बताया।

जैन धर्म ऐसा ही है। एक पाश्चात्त्य व्यक्ति ने कहा– महावीर एक अद्‌भुत व्यक्ति था। वह साधक को सत्य से जोड़कर सिद्धि तक ले जाता। सच्चा गुरु वही है जो कल्याणमार्ग से जोड़े। गुरु की सोच भक्त को भक्त ही नहीं, भगवान बनाने की होती है। जो गुरु भक्त को भक्त ही बनाए रखता है, वह गुरु कैसा? पारस लोहे को सोना बनाता है, पारस नहीं, किन्तु गुरु भक्त को भगवान बनाता है।

जोधपुर में वि.सं. 2010 में संयुक्त चातुर्मास था, जिसमें उपाचार्य गणेशीलाल जी महाराज, प्रधानमंत्री आनन्दऋषि जी महाराज, सहमंत्री हस्तीमल जी महाराज, कवि अमरचन्द जी महाराज, व्याख्यान वाचस्पति मदनलाल जी महाराज, बाबाजी पूरणचन्द जी महाराज, बुहुश्रुत समर्थमल जी महाराज सिंहपोल विराज रहे थे। सावण के महीने में हरियाली अमावस्या के दिन पूज्यपाद शोभाचन्द जी महाराज का पुण्य दिवस था। कवि अमरचन्द जी महाराज ने प्रवचन में उस

समय जो शब्द कहे वे महत्त्व हैं, उनके शब्द थे– गुरु वह है जो गुरु बनाता है, गुरु का निर्माण करता है। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज सच्चे गुरु थे, जिन्होंने समाज को प्रतिभा सम्पन्न तेजस्वी गुरु दिया।

गुरु की महिमा बखान करना सरल नहीं है। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज भी सच्चे गुरु थे। उन्होंने भी अपने पीछे गुरु तैयार किया। आज आचार्य श्री (हीराचन्द्र जी म.सा.) चतुर्विध संघ की बराबर सार–सम्हाल करके विचरण कर रहे हैं। चतुर्विध संघ की सारणा–वारणा–धारणा के साथ जहां भी जाते हैं सामायिक–स्वाध्याय के माध्यम से जागृति उत्पन्न करते हैं। आचार्य श्री के कई दिनों से कण्ठ की अवरूद्धता थी, इस कारण प्रवचन नहीं फरमा रहे थे, आज आपको आचार्य श्री की अमृतमयी वाणी सुनने का लाभ प्राप्त होगा।

क्रोध-शमन के उपाय

भंडारी सरदारचन्द जैन

कमोबेश जब तक छद्मस्थ अवस्था है, सभी को क्रोध आता है। कई व्यक्ति क्रोध पर शीघ्र काबू पा लेते हैं तो कइयों पर क्रोध हावी हो जाता है। कई बार क्रोध एक बड़े हादसे का कारण भी बन जाता है। निम्नलिखित कुछ बातों पर ध्यान देकर क्रोध को वश में किया जा सकता है। कृपया इन बातों पर अमल कर क्रोध पर काबू पायें–

1. आपको यदि क्रोध आ रहा है तो थोड़ा रुकें, सुस्तायें। क्रोध में शीघ्रता कभी नहीं करनी चाहिये।
2. जब क्रोध आए उस जगह से उठकर अन्यत्र चले जाएं और 'ओम शांति, ओम शांति'!!, 'ओम शांति' कहकर किसी काम में लग जायें।
3. कभी भी क्रोध का सामना क्रोध से नहीं करें। उसका सामना शांति और क्षमा से करें। क्रोध हार जाएगा।
4. जब कभी आपको क्रोध आए, उस अवस्था में अपना चेहरा दर्पण में देखेंगे तो क्रोध पर विजय प्राप्त हो जायेगी।
5. क्रोध आने पर एक गिलास ठंडा पानी पी लें और उसे मुख में ही रखें। न उसे गले से नीचे उतारें और न ही कुल्ला करें, क्रोध शांत हो जाएगा।
6. अपेक्षा की उपेक्षा ही क्रोध का कारण है। यदि हम अपेक्षा ही न रखें तो उपेक्षा कैसे होगी, और जब उपेक्षा ही नहीं होगी तो क्रोध से सहज ही बचा जा सकता है।
7. जब हमारे अहं को चोट पहुंचती है तो क्रोध आता है। 'अहंकार' को सम्मान नहीं मिलता है तो क्रोध आता है। अतः हमें अन्दर के अहं को हटाना होगा, तभी क्रोध पर विजय प्राप्त कर पायेंगे।

–त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर (राज.)

साधना में पुरुषार्थ सम्पूर्ण शक्ति से कीजिए

●आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

साधना के क्षेत्र में वर्षों बीत जाने के पश्चात् भी साधक को अपेक्षित उपलब्धि क्यों नहीं होती? इसका समाधान करते हुए आचार्यप्रवर ने 23 मई 2001 को धुलिया में फरमाये प्रस्तुत प्रवचन में साधक को सफलता हेतु अपने पुरुषार्थ का सम्पूर्ण उपयोग करने की प्रेरणा की है। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि अपनी शक्ति को छुपाना, उसका पूर्ण उपयोग न करना माया है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है।—**सम्पादक**

तीर्थंकर भगवान महावीर ने तारने वाले तीन तत्त्व कहे हैं— देव, गुरु और धर्म। इन तीन तत्त्वों में धर्म को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। धर्म की आराधना से ही सामान्य साधक साधना करते-करते सिद्धि प्राप्त कर सकता है। धर्मपद गुरुत्व की महिमा बढ़ाता है। धर्म ही आत्मा को परमात्मा का साक्षात्कार कराकर उसके स्वरूप को प्राप्त कराता है। ऐसे तारने वाले तत्त्व को समझकर अनन्त प्राणी तिरे हैं, तिर रहे हैं और भविष्य में तिरेंगे। अनन्त प्राणी ऐसे भी हैं जो इस तत्त्व को अभी तक समझ ही नहीं पाये। असंख्यात प्राणी ऐसे हैं जो इस तत्त्व को जीवन में उतार नहीं पाते। जानते और मानते हुए भी जैसा पुरुषार्थ जड़ के लिये करते हैं वैसा चेतन के लिये नहीं कर पा रहे हैं।

तारने वाले तत्त्वों को ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप रूप भी बताया गया है। इनमें से कर्म निर्जरा करने वाले तप का वर्णन चल रहा है। शरीरधारियों के लिए खाना प्रकृति है। जीव मात्र आहार के सहारे ही अपने प्राण टिकाता है। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक और निगोद से लेकर सर्वार्थसिद्ध तक सारे संसारी जीव जीवन चलाने के लिए खाते हैं, आहार करते हैं। यह संसारी जीव की प्रकृति है, सहज प्रक्रिया है।

विपरीत खाना विकृति है। विकृति का अर्थ किया जाय तो कहना होगा— विपरीता कृतिः विशेषा कृतिः इतिः विकृतिः। अभक्ष्य खाना, नहीं खाने योग्य खाना, स्वाद के वशीभूत होकर भूख से अधिक खाना, प्रकृति के विपरीत खाना विकृति है। यह विकृति सर्वश्रेष्ठ कहलाने वाले समझदार मानव में अधिक पाई जाती है। अन्य जीवों में ऐसी विकृति प्रायः नहीं पाई जाती। आप कीड़ी को देखो। वह बिना मन वाली है, कम समझने वाली है, छोटे शरीर वाली है फिर भी शरीर और प्रकृति के अनुकूल खाती है। उसके सामने एक शक्कर की डली रखो एक राख की, वह शक्कर की डली की ओर बढ़ेगी। दूसरी ओर आदमी के सामने शर्बत भी है, शराब भी है, वह किधर हाथ बढ़ायेगा। जिन्हें समझ नहीं वे असन्नी प्राणी तो प्रकृति की ओर जा रहे हैं और जिन्हें समझ है वे विकृति की ओर बढ़ रहे हैं। जिन तिर्यंच प्राणियों ने समाज का, राज्य का या धर्म का शासन स्वीकार नहीं किया वे विकृति की ओर नहीं जा रहे हैं। दृष्टान्त देना लजाना होगा, पर वास्तविकता है— गधा

तम्बाखू के पास जायेगा, दूर से सूंघते ही मुंह सिकोड़ कर चल देगा, पर आदमी... । आदमी विपरीत खाता है, यह विकृति नहीं तो क्या है? स्वाद के लिए अधिक खाना रोग का कारण है। अधिक खाने से असमाधि बढ़ती है। वह अजीर्णता को न्यौता देता है, आलस्य बढ़ाता है। शास्त्रकारों ने कहा–अभक्ष्य खाना विपरीत खाना, प्रकृति के प्रतिकूल खाना विकृति है।

तीसरा रूप है– तप-त्याग। तप करना संस्कृति है। खाने की आवश्यकता होने पर, खाने के पदार्थ होने पर और खाने की इच्छा होने पर अपने आप पर नियंत्रण करना त्याग है। स्व–अनुशासन से त्याग करना संस्कृति है। सम्यग्दर्शन होने पर इस संस्कृति में पुरुषार्थ होता है। शास्त्रकारों ने कहा–

"माया मिच्छादिट्ठी, अमायी सम्मादिट्ठी

माया करने वाला अन्दर में कुछ, बाहर में कुछ, कहना कुछ और करना कुछ, उपदेश अन्य और आचरण अन्य करता है। आप उसे मुंह में राम बगल में छुरी की उपमा देते हैं। जहां माया है, वहां धर्म नहीं। धर्म सरलता में है, सहजता में है। प्रभु महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे अध्ययन की बारहवीं गाथा में कहा–

सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ, घयसित्तव्व पावए।।

साधु, अणगार या श्रमणोपासक कौन? जहां सरलता है वहां साधुता है। सरलता में धर्म है। आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययन के तीसरे उद्देशक की गाथा में कहा–**से बेमि से जहावि अणगारे उज्जुकड़े नियागपडिवन्ने अमायं कुव्वमाणे वियाहिणं।।**

अणगार वही आगे बढ़ता है जो सरल आचरण वाला हो, मोक्ष मार्ग के प्रति एकनिष्ठ होकर चलता हो एवं कपट रहित हो अर्थात् साधना के मार्ग में अपनी शक्ति को छुपाने वाला नहीं हो। आचार्य अभयदेवसूरि ने टीका करते कहा–

"सर्वत्र स्ववीर्यनिगूहनं माया"

अपने पुरुषार्थ का, अपनी शक्ति का गोपन करना माया है। एक एक साधक एवं श्रावक को विपुल मात्रा में समय मिलता है। वे समय का सदुपयोग करें तो ग्यारह सामायिक एक दिन में कर सकते हैं, पर करते एक ही हैं। पूछा जाय– क्यों; तो जवाब मिलता है– 'कांई आखो दिन सामायिक ही करां कांई'। एक–एक साधक की ऐसी बुद्धि है, वह चाहे तो सौ गाथाएं याद कर सकता है, पर दस गाथाएं याद की, आज का काम हो गया, अब कल करेंगे। एक–एक तपस्वी की सामर्थ्य है अट्ठाई–अट्ठाई करे तब भी तकलीफ नहीं है, सहजता से तप हो रहा है, पर एक उपवास करके पारणे की तैयारी कर लेता है। शास्त्र कहते हैं–

"भवकोडिसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जई"

करोडों भवों में संचित कर्मों को तप से निर्जरित किया जा सकता है। आवश्यकता है तप के सही रूप को समझकर आचरण में लाने की। साधक की प्रत्येक प्रवृत्ति तप बन सकती है, यदि वह अपने सामर्थ्य का उपयोग समभावपूर्वक

साधना के लिए करे। भिक्षाचरी, प्रवचन, सेवाकार्य, प्रतिलेखन आदि सभी कार्य करने का सामर्थ्य है, किन्तु साधक एक करके इतिश्री कर देता है, तो यह माया है, अपने पुरुषार्थ का निगूहन है। प्रवचन मैंने दिया, गोचरी आप जाओ। गोचरी मैं ले आया, पानी की व्यवस्था के लिए दूसरों से कहो। क्या सेवा का कार्य मैं ही करूं फिर ये मुनिराज क्या करेंगे? इस प्रकार साधक अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का पूरा उपयोग करने से बचना चाहता है। यह साधक की साधना के लिए हितकारी नहीं।

साधक के लिए प्रमुखता से दो ही कार्य हैं– वैयावृत्त्य और स्वाध्याय। स्वाध्याय के लिए विपुल समय है। चाहे तो तीन घंटे वाचन दे सकता है, किन्तु आधे घंटे में ही इतिश्री कर देता है। आज कई जगह स्वाध्याय होता ही नहीं। वे मात्र परिचय करने, आगत बन्धुओं से वार्तालाप करने और इधर–उधर की सुनने में समय पूरा कर देते हैं। सामर्थ्य एवं श्रद्धा ऐसी कि देवों के उपसर्ग से भी चलायमान न हो, किन्तु बार–बार मक्खी बैठने, मच्छर काटने, धूप का स्थान मिलने आदि से घबराहट हो जाती है, परेशानी अनुभव करता है। ऐसे साधकों को थोड़े से शिक्षा के वचन कहे जाने पर वे रामायण और महाभारत खड़ा कर देते हैं। दस अवगुण हैं, उन्हें मत कहो, लेकिन एक भी गुण है उसकी प्रशंसा करो तो वे अपने हैं, नहीं तो पराये। उदाहरण देते हैं– गजसुकुमाल की खोपड़ी खीचड़ी की तरह सीझ गई, किन्तु शरीर नहीं हिलाया। उदाहरण देते है– खंदक की खाल उतार ली, पर ध्यान खंडित नहीं हुआ। शिष्यों को एक–एक कर घाणी में पील दिया गया, किन्तु वे सभी क्षमा की, सहनशीलता की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर मुक्ति प्राप्त कर गये।

मैं साधक के लिए ही क्या, आपके लिए भी कहूं– आपकी इच्छाएं भी आगे से आगे बढ़ती जाती हैं। आपने स्नान किया, स्नान से शरीर की शुद्धि होती है ऐसा आप मानते हैं, किन्तु स्नान कर लेने मात्र से आपको संतोष कहां? नहाये हैं तो कपड़े अच्छे चाहिये, हाथ में घड़ी चाहिये, गले में चैन चाहिये और अंगुली में बींटी भी चाहिये। मतलब क्या? इच्छा आगे से आगे बढ़ती रहती है, संतोष नहीं होता। शरीर स्वच्छ कर लिया, गन्दगी नहीं रही, फिर दूसरी चीजें हों, न हों काम तो चल ही सकता है। पर नहीं, शोभा बढ़ाने के लिए न जाने कितनी चीजें काम में लेने पर भी इतिश्री नहीं।

आश्चर्य होता है जब एक नौकरी करने वाला नौकरी का समय पूरा होने के बाद शिक्षक है तो ट्यूशन करता है, क्लर्क है तो कोई न कोई पार्ट टाइम करता है। मान लीजिये कोई रिटायर भी हो गया, उसे साधना करने की अनुकूलता है, सरकार से दस हजार रूपयों की पेंशन मिलती है, फिर भी टाइम पास नहीं हो रहा इसलिये थोड़ा फार्म पर जाता है, कुछ समय कारखाने पर जाता है। एक दुकान चल रही है दूसरी शुरू करता है। एक कारखाने से घर का काम चल रहा है फिर भी दूसरा धंधा प्रारम्भ करता है। धन उपार्जन में अधिक से अधिक समय लगाता है और शरीर की क्षमता से अधिक श्रम करता है। कई–कई तो ऐसे माई के लाल हैं जो चौदह पन्द्रह घंटे तक काम करते देखे जाते हैं, किन्तु उन्हें एक से दूसरी

सामायिक करने को कहा जाय तो नहीं होती। बन्धन के लिए उनका पुरुषार्थ है, मोक्ष के लिए नहीं। और यदि है भी तो न्यून मात्रा में। कारण? अभी उसे सम्यक् दर्शन का बोध नहीं हुआ।

कल एक बहिन ने प्रश्न किया– बाबजी! मैं सम्यक् दृष्टि हूँ या नहीं इसकी क्या पहचान? मैंने कहा– तीर्थंकर भगवान महावीर ने लक्षण बता दिये। जिसकी कषायें मन्द हैं, वैराग्य के भाव हैं, संसार के विषयों के प्रति आकर्षण नहीं, दुःखियों के दुःख देखकर करूणा के भाव जगते हैं,वीतराग देव और निर्ग्रन्थ गुरु के साथ तिरने व तारने वाले धर्म पर श्रद्धा है वह सम्यक् दृष्टि है। इसके लिए कोई अलग से थर्मामीटर नहीं है। थर्मामीटर बुखार कितना है, बता सकता है। आप जैसे थर्मामीटर से बुखार नापते हैं ऐसे आप सम्यक् दर्शनी हैं या नहीं, नाप नहीं किया जा सकता। तीर्थंकर भगवान महावीर ने लक्षण बता दिये, आप अपना चिन्तन करें– आपकी कषायें कितनी मन्द हुई, धर्म के प्रति कितनी श्रद्धा है, साधना में कितना पुरुषार्थ चल रहा है इसका स्वयं को निर्णय करना है। अगर आप प्रतिपल मोक्ष की ओर बढ़ने हेतु कषायें मन्द कर रहे हैं तो आप सम्यक् दर्शनी हैं।

मैंने 'कल्याण' में एक दृष्टान्त पढ़ा। एक चेला गुरु के पास गया और पूछना शुरू किया– गुरुदेव! मैंने घर छोड़ दिया, मां–बाप छोड़ दिये, स्नान करना, सजावट करना, वस्त्राभूषण धारण करना आदि सब छोड़ दिया। मैं बीस वर्षों से आटे को पानी में घोलकर पीता हूँ। मुझे चालीस साल हो गये, मैं आपके श्रीचरणों में हूँ। बताइये, गुरुदेव! मुझे मुक्ति कब मिलेगी?

गुरु ने तत्काल कोई उत्तर नहीं दिया। एक दिन गुरु चेला दोनों स्नान को गए। गुरु ने कहा– थोड़ा भीतर उतरो। चेले को तैरना तो आता नहीं था, गुरु के कहे वह थोड़ा आगे बढ़ा। कमर तक का पानी कण्ठ तक आ गया। गुरु ने धक्का लगाया और चेले को पानी में नीचे दबा दिया। चेला डूब गया। डूबते–डूबते चेले ने गुरु को धक्का मारा और किनारे आ गया। चेला बोला– यह कैसा जवाब? गुरु ने कहा– तेरा रक्षक मैं मौजूद हूँ और मैंने ही धक्का दिया। धक्का देने का कारण था– बिना शरीर छोड़े मुक्ति नहीं मिलती। तूं स्वयं मुक्ति जाना चाहता है, किन्तु तेरी शरीर पर इतनी ममता कि तूंने मुझे धक्का देकर प्रबल पुरुषार्थ किया और किनारा पकड़ लिया। जिस दिन इतना पुरुषार्थ शरीर की ममता एवं अपनी अहंता छोड़कर धर्म के लिए करेगा,तुझे मुक्ति मिल जायेगी। इसीलिये टीकाकार आचार्य ने 'सर्वत्र' शब्द का प्रयोग किया है। मात्र ज्ञान, मात्र श्रद्धा, मात्र सेवा ही नहीं सभी प्रवृत्तियों में जितना पुरुषार्थ कर सकते हैं, करें। लेकिन थोड़ा सा पुरुषार्थ करके विश्राम कर लेने की प्रवृत्ति ही सम्पूर्ण क्षय में बाधक बन रही है।

माया मंजिल तक पहुंचने में बाधा डालती है। बुरा नहीं करना अच्छा है। मैं किसी की प्रशंसा नहीं कर सकता तो निन्दा भी न करूं। स्वाध्याय करने का समय न मिले तो दुर्ध्यान भी न करूं। इस सोच से विशेष कर्मबन्ध से तो बचा जा सकता

है किन्तु कर्म काटने का विशेष पुरुषार्थ भी पूरा नही हो पाता। यह कमी है जिसे पूरा करना है। तन तोड़कर, मन मोड़कर, विकार छोड़ कर और सम्पूर्ण शक्ति जोड़कर पुरुषार्थ करना चाहिये। जिस दिन ऐसा पुरुषार्थ होगा उस दिन सही मायने में 'अमायं कुव्वमाणे' को चरितार्थ कर सकेंगे। यथाशक्ति, यथा भक्ति, यथामति और यथा स्थिति साधना करना पूर्णता का द्योतक नहीं है। पूर्णता का द्योतक है– 'अमायं कुव्वमाणे' को चरितार्थ करना। अर्थात् सम्पूर्ण शक्ति से पुरुषार्थ करना।

आप कितना पुरुषार्थ कर रहे हैं, इसका स्वयं चिन्तन करें। मुम्बई वाले मुम्बई की विनती कर रहे हैं, जोधपुर वाले जोधपुर, मद्रास–रायचूर आदि स्थानों की निरन्तर विनतियां चल रही है। आपको गुरु का सान्निध्य चाहिये। यह पहली पटरी है, इतिश्री नहीं। कारण कि गुरु चरणों में आने वाले सारे तिर नहीं जाते। गुरु तो क्या, तीर्थंकरों के चरणों में सारे तिरे नहीं हैं। आप गुरु को अपने यहां ले जाना चाहते हैं, किन्तु ले जाने मात्र से तिरना नहीं होगा। आप गुरु की सन्निधि करें, पर जब तक धर्म का आचरण नहीं होगा और धर्माचरण के लिए पूरा प्रयत्न व पुरुषार्थ नहीं होगा, तब तक तिरना नहीं हो सकेगा। आपने यहां आकर सामायिक की, स्वाध्याय भी किया, कहीं इसलिये तो नहीं किया कि बिना इसके महाराज आने वाले नहीं हैं। यदि स्वार्थ सिद्धि के लिए किया, तो मुक्ति से वंचित रह जायेंगे।

आपने सुना होगा– बुद्धदास सत्संग करने लगा, साधना में भी मन लगाया। भोजन करने गया तो कहने लगा– मेरे जमीकन्द के त्याग हैं, द्रव्यों की मर्यादा है और मैंने दो विगय छोड़ रखी है। ये सब किसलिए? क्या सुभद्रा को पाने हेतु? मेरा कथन है– आप दिखावे के लिए नहीं करें, ले जाने के लिए नहीं करें। साधना आपका धर्म होना चाहिये, आप ऐसा सोचकर पुरुषार्थ करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब आप एकभव करके मोक्ष जा सकेंगे। पांचवे आरे में साधना करने वाले एक भवतारी हो सकते हैं, होंगे। आपके भवभ्रमण कम हों, इसके लिए धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा चाहिये। आप दिखावे के बजाय अन्तरंगता से धर्म करें। हां, सामान्य आदमी को जगने के लिए निमित्त चाहिये। निमित्त पाकर प्रबल पुरुषार्थ करेंगे तो सच्ची शांति प्राप्त कर सकेंगे, इसी मंगल भावना के साथ.....

आगम : एक खिड़की

पिंजरे रूपी इस दुनिया में आगम एक खिड़की की तरह है। इनको पढ़कर, इनके सिद्धान्तों को समझकर, उनको अपने जीवन में उतारकर हम इस पिंजरे रूपी दुनिया से बाहर निकल कर मोक्ष के अव्याबाध सुख को प्राप्त कर सकते है।

Aagam Is Like A Window
In This Prisoned World

–मोनिका डांगी, ओसवाली मोहल्ला, मदनगंज–किशनगढ़

मांसाहार : एक समीक्षा

●आचार्य महाप्रज्ञ

दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर द्विजेन्द्र नारायण झा ने अपनी पुस्तक Holy Cow - Beef in Indian Dietary Conditions में भगवतीसूत्र के आधार पर भगवान महावीर को मांस का सेवन करने वाला बताया है। पुस्तक में हिन्दू, बौद्ध एवं जैनों के आहार के संबंध में शोधपरक सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के आधार पर 'Out look' पत्रिका के 17 सितम्बर 2001 अंक में श्रीमती शीला रेड्डी ने 'A Brahmin's cow Tales' लेख लिखा है। यद्यपि इस विषय में पहले भी विवाद उठता रहा है, किन्तु इस विवाद से जैनों के अहिंसात्मक विचारों को ठेस पहुंचती है। भगवतीसूत्र में कपोत, कुक्कुट एवं जो मार्जार शब्द आये हैं, उनके क्रमशः कुष्मांड–कोहलाफल, बिजौराफल एवं मार्जार नामक उदर वायु अर्थ किए जाते हैं। चिकित्सा शास्त्र में भी इनके वनस्पतिपरक अर्थ हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने तदनुसार कपोत का अर्थ मकोय शाक, कुक्कुट का अर्थ शितिवार नामक वानस्पतिक औषधि एवं मार्जार का अर्थ चित्रकमूल किया है। यह समाधान शोधपूर्वक दिया गया है, जो अहिंसात्मक परम्परा की रक्षा करने के साथ भ्रान्ति का निवारण करने में भी समर्थ है।–**सम्पादक**

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो.डी.एन.झा द्वारा लिखित Holy Cow - Beef in Indian Dietary Conditions पुस्तक में अनेक धर्मों के प्रमुख महापुरुषों का आहार संबंधी विवरण दिया है। उसमें भगवान महावीर के मांसाहार का भी उल्लेख किया गया है। इस विषय में पहले हम विद्वान लेखक को कुछ कहना चाहते हैं। उन्होंने कुछ पुस्तकों के आधार पर भगवान महावीर के मांसाहार की धारणा बना ली और अपनी पुस्तक में उसका उल्लेख कर दिया। यह शोधपूर्ण प्रामाणिक इतिहास का तरीका नहीं है। पुस्तक के लेखक को प्रामाणिक मूल स्रोतों से सही तथ्य को जानना चाहिए। सही जानकारी के बाद वे लिखते तो अहेतुक विवाद खड़ा नहीं होता तथा जैन समाज में भी आक्रोश का वातावरण नहीं बनता।

भगवान महावीर की जन्म–जयंती का यह वर्ष 'अहिंसा वर्ष' के रूप में घोषित हुआ है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम इस अप्रिय घटना का प्रतिवाद अहिंसात्मक तरीके से करें। आज की प्रतिवाद करने की हिंसात्मक या उत्तेजनात्मक शैली हमारे लिए उचित नहीं होगी।

सही तथ्यों की जानकारी कराने पर विद्वान लेखक पुस्तक को वापिस ले लेता है तो अच्छी बात। यदि नहीं लेता है तो फिर इसके विषय में उचित कार्यवाही के बारे में सोचा जाना चाहिए।

भगवान महावीर के मांसाहार की भ्रान्ति का कारण भगवतीसूत्र का एक प्रसंग है। मंखलिपुत्र गोशालक द्वारा तेजोलब्धि का प्रयोग करने पर भगवान का शरीर पित्तज्वर और दाह से आक्रांत हो गया। (भगवई 15/146) भगवान के शिष्य सिंह मुनि को इस घटना से बहुत चिन्ता हुई। उनकी चिन्ता का समाधान करने के लिए भगवान ने उनसे कहा– "तं गच्छह णं तुमं सीहा! मेंढियगामं नगरं, रेवतीए

गाहावतिणीए गिहं, तत्थ णं रेवतीए गाहावतिणीए ममं अट्ठाए दुवे कवोयसरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि से पारियासिए मज्जार कडए कुक्कुडमंसए तमाहराहि एएणं अट्ठो।।'' (भगवई 15/152)

उक्त प्रसंग में तीन शब्द विमर्शनीय हैं– कपोत शरीर, मार्जार और कुक्कुट मांस। शब्दार्थ पर विचार करने से पूर्व देश, काल और सन्दर्भ– इन तीनों पर विचार करना आवश्यक है। चिकित्सा के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का अर्थ चिकित्सा शास्त्र में खोजना चाहिए।

एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं और उसका अनेक संदर्भो में प्रयोग होता है। काव्यानुशासन आदि साहित्य के लाक्षणिक ग्रन्थों में उसका बहुत सुन्दर विवेचन मिलता है। यदि भोजन करते समय कोई आदमी कहे कि 'सैंधव लाओ' तो वहां एक समयज्ञ व्यक्ति सैन्धव–घोड़ा लाकर खड़ा नहीं करेगा, किन्तु वह सैन्धव–नमक लाकर उपस्थित कर देगा। चिकित्सा के संदर्भ में विचार करते समय आयुर्वेद में प्रयुक्त शब्दों के अर्थों पर ध्यान देना आवश्यक है।

कपोत शरीर–

संस्कृत शब्दकोश के अनुसार 'कपोत' कबूतर का वाचक है। आयुर्वेदीय शब्दकोश के अनुसार कपोत का एक पर्यायवाची नाम पारावत है। पारावत के फल कबूतर के अण्डों के समाान होते हैं। पारावतपदी आयुर्वेद में काकजंघा को कहते हैं। धन्वन्तरि निघण्टु (पृ. 189) में काकजंघा को काकमाची विशेष माना है। काकमाची शब्द मकोय शाक का वाचक है।

साराम्लकः सारफलो रसालश्च पारावतः। (325)
कपोताण्डोपमफलो, महापारावतोऽपरः।। (कैयदेव निघण्टु औषधिवर्ग पृ. 62)
काकजंघा ध्वंक्षजंघा, काकपादा तु लोमशा।
पारावतपदी दासी, नदीक्रांता प्रचीबला।। (धन्वन्तरि निघण्टु 4/20 पृ. 186)

वनस्पतिशास्त्र में कपोता, कपोती, कपोतवेगा, कपोतवल्ली जैसे शब्दों का प्रयोग मिलता है–

कपोता, कपोती– सर्पाक्ष्यादिगणे रसौषधिविशेषः।
कपोतवेगा– ब्राह्मी
कपोतवल्ली– सूक्ष्मैला (द्रव्यगुणकोषः पृ. 39)

वनस्पतिशास्त्र में पारावतपदी का प्रयोग काकजंघा, ज्योतिष्मती और हंसपदी भेद के लिए हुआ है (द्रव्यगुणकोषः पृ.112)। भावप्रकाश निघण्टु के अनेकार्थ नामवर्ग में भी इसका प्रयोग ज्योतिष्मती (मालकांगनी) के लिए हुआ है (भावप्रकाशनिघण्टु पृ. 799)

उसके अनुसार पारावतपदी काकजंघा– मकोय विषम ज्वरनाशक, कफपित्तशामक, चर्मरोग नाशक है।

काकजंघा हिमा तिक्ता कषाया कफपित्तजित्।
निहन्ति ज्वरपित्तास्रवणकण्डूविषक्रिमीन्।। (भाव प्रकाश निघण्टु पृ. 441)

आगम साहित्य में वनस्पति के साथ शरीर शब्द का प्रयोग किया जाता है– पुढवी सरीरं, आउ सरीरं, तेउ सरीरं, वाउ सरीरं, वणस्सइ सरीरं (सूयगडो 2/3/36)

मार्जार–

संस्कृत शब्दकोश के अनुसार 'मार्जार' बिल्ली का वाचक है। आयुर्वेदीय शब्दकोश के अनुसार 'मार्जार' चित्रक का वाचक है।

कालो व्यालः कालमूलोऽपि दीप्यो,
मार्जारोग्निदाहकः पावकश्च।
चित्रांगोऽयं रक्तचित्रो महांगः,
स्यद्दुदाहश्चित्रकोन्यो गुणाढ्यः।। (राज.निघण्टु वर्ग 6/46, पृ. 143)

आयुर्वेद में चित्रकमूल का प्रयोग सतत ज्वर में किया जाता है।

कुक्कुट–

संस्कृत शब्दकोष के अनुसार 'कुक्कुट' मुर्गे का वाचक है। आयुर्वेदीय शब्दकोश के अनुसार 'कुक्कुट' शितिवार (चोपतिया शाक) का वाचक है–

शितिवारः शितिवरः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः।
श्रीवारकः सूचिपत्रः पर्णकः कुक्कुटः शिखी।।
(भावप्रकाश निघण्टु शाकवर्ग पृ. 673,674)

वनस्पतिशास्त्र में शितिवार के लिए कुक्कुट का प्रयोग होता है– कुक्कुटः शितिवारः मुर्गा इति लोके। कुक्कुटचूड़ावत पुष्पव्यूहत्वात्। (द्रव्यगुणकोषः पृ. 43, धन्वन्तरिनिघण्टु 1/155)

शितिवार का प्रयोग दीपन और अग्निमांद्य को दूर करने के लिए किया जाता है। इसका शाक त्रिदोषघ्न और ज्वरनाशक है।

मांस–

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में छाल के लिए त्वचा और गूदे के लिए मांस शब्द का प्रयोग किया जाता है। अष्टांगसंग्रह में भिलावे के गूदे के लिए मांस का प्रयोग किया गया है–

भल्लातकस्य त्वग् मांसं।
बृहणं स्वादु शीतलम्।। (अष्टांग संग्रह 8/168)

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में गूदे के लिए मांस शब्द का प्रयोग अपवाद स्वरूप नहीं है। यह एक वनस्पतिशास्त्रीय सामान्य प्रयोग है।

कैयदेव निघण्टु में भी गूदे के लिए मांस शब्द का प्रयोग मिलता है–

उष्णवातकफश्वासकासतृष्णावमिप्रणुत।
तस्य त्वक् कटु तिक्तोष्णा, गुर्वी स्निग्धा च दुर्जरा।।
कृमि श्लेष्मानिलहरः मांसं स्वादु हिमं गुरु।
बृंहणं श्लेष्मलं स्निग्धं पित्तमारुतनाशनम्।।
(कैयदेव निघण्टु श्लोक 255,256 औषधिवर्ग)

वनस्पतिशास्त्र में मांसल फल का मतीरे के अर्थ में प्रयोग हुआ है–

मांसलफलः कालिन्दी।

अनेक शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग प्राणिशास्त्र और वनस्पतिशास्त्र–दोनों में समान रूप से हुआ है।

यदि शास्त्रीय संदर्भ के बिना उनका अर्थ किया जाए तो असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है। इस विषय में असमंजस का हेतु है आचार शास्त्रीय संदर्भ के बिना किया जाने वाला शब्द का अर्थ।

संदर्भ आचार शास्त्र का

मुनि के लिए अनेक विशेषणों का प्रयोग किया गया है, उनमें एक विशेषण है– 1. **अमज्जमंसासी**–मद्य–मांस का वर्जन करने वाला।[1] जैन व्रती श्रावक भी मद्यमांस का प्रयोग नहीं करते थे।[2] सूत्रकृतांग में जीव और शरीर को एक मानने का एक दार्शनिक पक्ष है। उस पक्ष के विषय में विमर्श करते हुए जैन श्रावकों ने कहा– यदि पुनर्जन्म नहीं है तो हम मद्य–मांस का वर्जन करते हैं, उपवास करते हैं, वह हमारी क्रिया निरर्थक हो जाएगी।[3]

मुनि और श्रावक दोनों ही मद्य–मांस का सेवन नहीं करते थे। इस अवस्था में तीर्थंकर महावीर द्वारा मांस सेवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

भ्रान्ति का हेतु–

मांसाहार सम्बन्धी भ्रान्ति का हेतु 'कुक्कुड' शब्द का अनुवाद बना है। लेखक उसी के आधार पर मांसाहार की बात को दोहराते जा रहे हैं। डेल्यू द्वारा किया गया भगवती के उक्त विवादास्पद सूत्र का अनुवाद आज सचमुच भ्रांति पैदा कराने वाला है–

"भगवान महावीर ने सींह अनगार से कहा– तुम रेवती के पास, जो मेंढिय ग्राम में रहती है, जाओ और उसे मार्जार द्वारा मारे गए कुक्कुट को महावीर के लिए भेजने के लिए कहो। वह महावीर के लिए जो दो कपोतों को बना रही है, उन्हें मत लाना। कुक्कुट को खाने के पश्चात् महावीर शीघ्र ही स्वस्थ होने लगे।"

He (Mahavira) orders Siha to go the woman Revati at Mendhiyagama and ask for to send the cock killed by the cat to Mv. instead of two pigeons she was preparing for him. After having eaten the cock Mv. immediately regains health his.

(Viyahapanntti, (पृ. 219) JOZEF DELEU "De Temple," Temple hof37, Bsugge (BELGIE) 1970

इस विवादास्पद सूत्र का सही अनुवाद इस प्रकार है–

"सिंह! तुम मेंढिय ग्राम नगर में गृहपत्नी रेवती के घर जाओ। गृहपत्नी रेवती ने मेरे लिए दो कपोत–शरीर–मकोय के फल पकाए हैं। वे मेरे लिए प्रयोजनीय नहीं हैं। उसके पास अन्य बासी रखा हुआ मार्जारकृत–चित्रक वनस्पति से भावित कुक्कुट मांस–चोपतिया शाक है वह लाओ। वह मेरे लिए प्रयोजनीय है।"

वृत्तिकार अभयदेवसूरि ने 'कपोत शरीर' 'मार्जार कृत' और 'कुक्कुट मांस' का अपनी ओर से कोई अर्थ नहीं किया है। उन्होंने केवल दो मतों का उल्लेख किया है–पहला मत कपोत आदि शब्दों का प्रचलित अर्थ मानता है। दूसरा मत उसका अर्थ वनस्पति परक मानता है। दूसरे मत के अनुसार कपोत–शरीर का अर्थ कूष्माण्ड फल है। मार्जार के विषय में दो मतों का उल्लेख है– 1. वायुविशेष 2. मार्जार का अर्थ विरालिका नामक वनस्पति है। कुक्कुट मांस का अर्थ बिजौरा है।[4]

यदि भगवतीसूत्र के अनुवादक आचारशास्त्रीय संदर्भ को ध्यान में रखकर परम्परा के प्रामाणिक स्रोतों की खोज करते तो उनका अनुवाद भ्रान्त नहीं होता और विद्वान लेखक भी मूल स्रोतों की जानकारी करते तो वे आगे से आगे चलने वाली भ्रान्ति से बच जाते । यदि जैन विद्वान इन भ्रामक स्थलों के लेखन और अनुवाद पर पहले ही ध्यान दे देते तो भ्रान्ति की परम्परा नहीं चलती। अपेक्षा है सब लोग अपनी अपनी कमी का अनुभव करें।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. (क) सूत्रकृतांग 2/2/66 (ख) प्रश्नव्याकरण 6/6
(ग) दशवैकालिक चूलिका 2/7
2. बृहत्कल्पभाष्य गाथा 1141
3. सूत्रकृतांगचूर्णि पृष्ठ 316–इहरहा हि मज्जं मंसं परिहरामो उववासं करेमो णिरत्थयं चेव।
4. भगवई वृत्ति पत्र 691

धनार्जन झूठ कपट से न हो

हमारा कहना है कि धन के लिए उद्योग करो, पर उसके लिये झूठ-कपट, अन्याय-बेईमानी, जालसाजी मत करो। प्रायः लोगों की धारणा बन गई है कि झूठ कपट के बिना पैसा पैदा होता ही नहीं। भाइयों! बिना झूठ कपट के जीवन खूब मौज से संभव हो सकता है। बड़े आनन्द से आपका जीवन निर्वाह हो सकता है। इसमें किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं है। सन्देह करते हो तो आपने इस विषय में कभी सोचा नहीं है। हमारी इस विषय में बहुत बातें हुई हैं, बहुत प्रश्नोत्तर हुए हैं। खूब विचारा है, पुस्तकें देखी है। जैसे खम्भा गाड़कर–हिलाकर मजबूत करते हैं,ऐसे ही हमारे यह बात पक्की निस्संदेह जंची हुई है। आपकी शंका हो तो उनको खोलकर रखो तो विचार किया जा सकता है।

अपने कल्याण के लिये धर्म के अनुष्ठान में अपनी सामर्थ्य लगाना चाहिये, पर उसे लगा दिया है धन कमाने के लिये और भोग भोगने के लिये। धन और भोग दोनों ही प्रारब्ध की प्रधानता से मिलते हैं। अपना कल्याण, धर्म का अनुष्ठान–अपने पुरुषार्थ-सामर्थ्य से होता है।

–स्वामी रामसुखदास

क्रमशः(4)

महामंत्र णमोक्कारः स्वरूप एवं माहात्म्य

श्री जशकरण डागा

चतुर्थ पद : णमो उवज्झायाणं

"अण्णाणघोरतिमिरे, दुरंततीरम्हि हिंडमाणाणं।
भवियाणुज्जोययरा, उवज्झाया वरमदिं देंतु।।"—समणसुत्तं ज्योतिमुर्ख सूत्र 10

अर्थात् अज्ञान रूपी घोर अंधकार में भटकने वाले भव्य जीवों के लिए ज्ञान का प्रकाश देने वाले, उपाध्याय उत्तम मति प्रदाता होते हैं। ये उपाध्याय कैसे होते हैं, शास्त्रकार कहते हैं–

"बारसंग विउबुद्धा, करणचरणजुओ।
पभावणा जोगनिग्गहो, उवज्झायगुणं वंदे।।"
—जैन तत्त्व प्रकाश प्रकरण 4 व प्रवचनसारोद्धार 66–67

अर्थात् बारह अंग के अभ्यासी, चरण और करण सत्तरी युक्त, आठ प्रभावना द्वारा जैन धर्म को दिपाने वाले और तीन योग को वश में (निग्रह) करने वाले ये पच्चीस गुण धारक उपाध्याय जी वंदनीय होते हैं।

विशेष–1. उपाध्याय के पच्चीस गुण इस प्रकार भी कहे हैं– ग्यारह अंग, बारह उपांग व चरणसत्तरी, करण सत्तरी के ज्ञाता, इन पच्चीस गुणों सहित होते हैं।

2. ये स्व पर दर्शन के विज्ञाता, आगम व्याख्याता और श्रुत ज्ञान के दाता होते हैं।

3. चरणसत्तरी अर्थात् साधुचर्या के 70 बोलों के अनुसार चारित्र पालन करना तथा करण सत्तरी अर्थात् चरण की पुष्टि करने योग्य 70 बोलों के अनुसार परिणामों को शुद्ध रखना व जिस अवसर पर जो करने योग्य हो, सो करते हैं। आप आगमों के मर्म के ज्ञाता और व्याख्याता होते हैं।

4. चरण सत्तरी के 70 बोल हैं– पांच महाव्रत, दस यति धर्म, सतरह भेदे संयम, दस प्रकार की वैयावृत्त्य, नव प्रकार का ब्रह्मचर्य पालन, ज्ञानादि रत्नत्रय, बारह प्रकार का तप व चार कषाय निग्रह– इन सबके वे पालक व आराधक होते हैं।

5. करण सत्तरी के 70 बोल हैं– आहार, वस्त्र, पात्र, शय्या, ऐसी चार पिण्ड विशुद्धि, पांच समिति, तीन गुप्ति, बारह भावनाएँ, बारह प्रतिमाएँ, पांच इन्द्रियनिग्रह, पच्चीस प्रतिलेखना व चार अभिग्रह धारण करना।

विशेष– आचार्य, उपाध्याय अपने पद का सम्यग् वहन करते हुए उसी भव में या दूसरे भव में अन्यथा तीसरे भव में निश्चय से सिद्धगति को प्राप्त होते हैं।

पंचम पद : णमो लोए सव्वसाहूणं

"दसंण–णाण–समग्गं, मोक्खस्स जो हु चरित्तं।
साधयइ णिच्च सुद्धं, साहु समणी णमो तस्स।।"

जो दर्शन एवं ज्ञान से युक्त मोक्ष मार्गस्वरूप एवं नित्य शुद्ध चारित्र की साधना करते हैं, जो बाह्य व्यापारों से मुक्त हैं, जो दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप रूप, चार आराधनाओं में सदा लीन रहते हैं, जो परिग्रह रहित ओर निर्मोही हैं, वे साधु कहलाते हैं।

साधु के 25 गुण कहे हैं, जो इस प्रकार है–

"पंचमहव्वयजुत्तो, पंचेदियसंवरणो।
चउविह कसाय मुक्को, तओ समाधारणीया।।1।।
तिसच्चसम्पन्न तिओ, खंति संवेग रओ।
वेयणमच्चु भयगयं, साहुगुण सत्तावीसं।।2।। (जैन तत्त्व प्रकाश)

अर्थात् (1–5) पांच महाव्रतों का पालन (6–10) पांच इन्द्रियों का संवर, विषयों से निवृत्ति (11–14) चार कषायों से निवृत्ति (15–17) मन, वचन व काय समाधारणीया (18–20) भाव, करण व योग सच्चे (21–23) ज्ञान, दर्शन व चारित्र सम्पन्न (24) क्षमावंत (25)वैराग्यवंत (26–27) वेदनीय, मारणांतिक समाहिया–ऐसे सत्तावीस गुण सम्पन्न साधु होते हैं।

विशेष– 1. दिगम्बर परम्परानुसार साधु के 28 गुण कहे हैं।(परमात्मा होने का विज्ञान पृ. 58–59) यथा– (1–5) पांच महाव्रत (6–10) पांच समिति का पालन (11–15) पांच इन्द्रिय विजयी (16) सामायिक (17) वंदन (18) स्तुति (19) स्वाध्याय (20) प्रतिक्रमण (21) कायोत्सर्ग (22) एक करवट शयन– अर्द्धरात्रि के बाद (23) अदन्त मंजन (24) अस्नान (25) नग्नत्व (26) एगभत्तं (एक बार भोजन) (27) खड़े रह भोजन करना व (28) केश लोच करना।

2. मुनियों की योग्यतानुसार कुछ अन्य पदवियां भी निम्न प्रकार से प्ररूपित की गई हैं:–

(1) **प्रवर्त्तक**–आचार्य के आदेशानुसार वैयावृत्य आदि में साधुओं को प्रवृत्त कराने में समर्थ हो, उसे प्रवर्त्तक पद दिया जाता है। कहा है–

"तवसंजमजोगेसु, जो जोगो तत्थ तं पयट्टेइ।
असुहंच नियत्तेइ, गणतत्तिललो पवत्तउ।।"

अर्थात् तप, संयम और शुभ योग से, जो साधु जिसमें प्रवृत्ति करने के योग्य हो, उसमें उसे प्रवृत्त कराने वाला तथा अयोग्य या कष्ट सहन नहीं कर सकने वाले को, उससे निवृत्त कराने वाला जो होता है, वह प्रवर्त्तक कहलाता है।

(2) **स्थविर**– धर्मकार्य में प्रवृत्त किए गए साधुओं को, उनमें शिथिलता आने पर, उन्हें संयम में स्थिर करने वाले साधु स्थविर कहलाते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं (अ) **दीक्षा स्थविर**–कम से कम बीस वर्ष की दीक्षा वाला हो (ब) **श्रुत स्थविर**– कम से कम ठाणांग व समवायांग का ज्ञाता हो एवं (स) **वय स्थविर**– कम से कम साठ वर्ष की आयु वाला हो।

(3) **गणी (गणाधिपति)**– साधुओं के गण (समूह) को (आचार्य की आज्ञानुसार) अपने साथ में रख अलग विचरण करने वाला गणी कहलाता है। इनके लिए कहा गया है–

"णियधम्मे दढधम्मे, संविग्गो उज्जुओ य तेयंमी।
संगहुवग्गहकुसलो, सुत्तत्थविऊ गणाहिवई।।'

अर्थात् जो प्रियधर्मी व दृढ़ धर्मी होता है, जो संवेगी व तेजस्वी होता है, जो साधुओं के लिए, वस्त्र पात्र आदि का (योग्य) संग्रह करने व अनुचित प्रवृत्ति के लिए

रोक टोक करने में कुशल हो, और सूत्रार्थ का जानने वाला होता है, वह गणी (गणाधिपति) कहलाता है। गणधर भी इसी श्रेणी में आते हैं।

(4) **गणावच्छेदक**– जो गण की या गण के एक भाग की रक्षार्थ आहार-पानी की व्यवस्था का ध्यान रखता है, वह गणावच्छेदक कहलाता है।

3. 'आगमवत्तिया समणनिग्गंथा''(व्यवहार सूत्र 10) के अनुसार साधु का बल आत्मज्ञान होता है तथा ''सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरंति'' (आचारांग 1.3. 106) के अनुसार मुनि सदा मोह रूपी भावनिद्रा से रहित होने के कारण जाग्रत रहते हैं। जब आत्मा सोता है तो इन्द्रियाँ व मन जाग्रत रहते हैं और जब इन्द्रियां व मन सोते हैं तो आत्मा जाग्रत रहता है। सोने से अभिप्राय यहाँ निष्क्रिय होने से है। ऐसे अप्रमत्त मुनि होते है। उनके लिए कहा गया है–

''परपरिणामत्यागी, तत्त्व की संभार करे।
हरे भ्रम भाव, ज्ञान गुण के धरैया हैं।।
लखे आपा आप माहि, राग द्वेष भाव नाहिं।
शुद्ध उपयोग एक, भाव के करैया हैं।।
स्थिरता सुरूप ही की, स्व संवेद भावन में।
परम अतीन्द्रिय सुख, नीर के ढरैया हैं।।
देव भगवान सो स्वरूप, लखे निज घटही में।
ऐसे ज्ञानी संत, भव सिंधु के तिरैया हैं।।'' –ज्ञानदर्पण पद्य 21

4.' भाव सच्चे' से अभिप्राय उपशम, क्षयोपशम व क्षायिक भाव की विशुद्धि, 'करणसच्चे' से आत्म प्रवृत्ति की विशुद्धि व 'जोगसच्चे' से तीनों योगों की एकरूपतामय सत्य प्रवृत्ति है।

5. पंचम पद को सुशोभित करने वाले साधुओं के लिए कहा गया है–

''आदरी संयम भार, करणी करे अपार,
समिति गुप्ति धार, विकथा निवारी है।
जयणा करे छः काय,सावद्य न बोले वाय,
बुझाय कषाय लाय,किरिया भण्डारी है।।
ज्ञान भणे आठों याम, लेवे भगवंत नाम,
धर्म को करे काम, ममता को मारी है।
कहत है 'तिलोकरिख' कर्मों को टाले विष,
ऐसे मुनिराज ताको वन्दना हमारी है।।–प्रतिक्रमण सूत्र, भाव वन्दना

और भी कहा गया है–

''ज्ञान को उजागर, सहज सुख सागर, सुगुण रत्नाकर, विराग रस भरया है।
शरण की रीति हरे, मरण को न भय करे, करण सो पीठी दे, चरण अनुसरयो है।।
धर्म को मंडन, भ्रम को विखंडन, परम नरम होके, कर्म सो लरियो है।
ऐसे अहो मुनिराज, भूलोक में विराजमान, निरख 'बनारसी' भाव वन्दन करे है।।

–तत्त्वज्ञ पं. बनारसी दस कृत

(क्रमशः)

–संघपुरा, टोंक (राज.)

उत्तराध्ययनसूत्र-चौंतीसवाँ अध्ययन

प्रो. चाँदमल कर्णावट

'लेश्या' नामक 34 वें अध्ययन में कृष्णादि 6 लेश्याओं का विस्तार से वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की 61 गाथाओं में 11 द्वारों (शीर्षकों) के अन्तर्गत लेश्याओं के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

लेश्या क्या है?– लेश्या आत्मा का अध्यवसाय विशेष है, जिसके द्वारा आत्मा के साथ कर्म श्लिष्ट होता है(चिपक जाता है)। कहीं कषाय से अनुरंजित आत्मा के परिणाम विशेष को लेश्या कहा गया है। यह लेश्या कर्मबन्ध की स्थिति आदि में भी सहायक होती है।

ग्यारह द्वारों में लेश्या का वर्णन– जिन ग्यारह द्वारों में लेश्या का वर्णन किया गया है वे हैं– नाम, वर्ण, रस,गन्ध, स्पर्श, परिणाम, लक्षण, स्थान, स्थिति, गति और आयुष्य। अध्ययन की गाथा 1 में विषयप्रवेश एवं 2 में 11 द्वारों के नामों का उल्लेख हुआ है।

1. नाम द्वार– अध्ययन की गाथा 3 में 6 लेश्याओं के नाम बताए हैं– कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म एवं शुक्ल लेश्या।

2. वर्ण द्वार– लेश्याओं के वर्ण का उल्लेख गाथा 4 से 9 तक वर्णित है। काले आदि रंगों के सान्निध्य से स्फटिक की तरह राग-द्वेष, कषायादि के संयोग से आत्मा तदनुरूप परिणत होता जाता है और वैसी ही मन वचन काया की प्रवृत्ति बनती जाती है। द्रव्य लेश्या के पुद्गल वैसे ही शुभाशुभ कर्म धारण करते हैं। कृष्ण लेश्या का वर्ण काला, नील लेश्या का नीला, कापोत का कुछ काला कुछ लाल, तेजो लेश्या का लाल, पद्म लेश्या का पीला और शुक्ल लेश्या का श्वेत होता है।

3. रस द्वार– मन आदि योगों एवं आत्मपरिणामों से उत्पन्न द्रव्य लेश्या रूप पुद्गलों में वर्ण की तरह रस भी पाया जाता है। कृष्णादि लेश्याओं का रस क्रमशः कटु, तीखा, कसैला, खट्टा-मीठा, अम्ल-कसैला और मधुर होता है। शुक्ल लेश्या शुभतम होने से मधुर रसवाली मानी गई है। (गाथा 10 से 15)

4. गंधद्वार– (गाथा 16–17) छः ही लेश्याओं के कर्म पुद्गलों में कृष्णादि प्रथम तीन लेश्याओं में मृत गाय, मृत श्वान एवं मृत सर्प की गंध से अनंतगुणी अधिक दुर्गन्ध पाई जाती है। शेष तेजोलेश्या आदि 3 शुभ लेश्याओं में सुरभित पुष्पों तथा पीसे जा रहे सुगन्धित द्रव्यों की सुगंध से अनंतगुणी अधिक सुगंध पाई जाती है। यह सुगंध तीनों लेश्याओं में उत्तरोत्तर उत्कृष्टतर समझनी चाहिए।

5. स्पर्शद्वार–(गाथा 18–19) करवत(करौत), गोजिह्वा, शाक वनस्पति के पत्ते के स्पर्श से अनंतगुणा अधिक कर्कश स्पर्श कृष्णादि तीन लेश्याओं में, तथा बूर (एक वनस्पति), नवनीत एवं शिरीष पुष्पों से भी अनंतगुणाधिक कोमल स्पर्श शेष तीनों तेजो आदि लेश्याओं में बताया गया है।

6. परिणाम द्वार–(गाथा 20) जिस प्रकार वैडूर्यमणि अपने सम्पर्क में आने वाले विविध रंग के द्रव्यों के कारण उन्हीं के रूप में परिणत हो जाता हैं, उसी प्रकार कृष्णलेश्या आदि नीललेश्या आदि द्रव्यों के सम्पर्क में आने से नील लेश्यादि रूप में परिणत हो जाती है। इसी को परिणाम कहा गया है। लेश्याओं के जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट रूप से अनेक भेद किए गए हैं।

7. लक्षण द्वार– (गाथा 21 से 32) कृष्णादि लेश्यावाली आत्माओं की पहिचान के लिए पृथक्–पृथक् लक्षण बताए हैं।

कृष्ण लेश्या– पंचास्रवों में रत, 3 गुप्तियों से अगुप्त, छः काय हिंसा से अविरत, तीव्र आरंभ में रत, क्षुद्र, साहसिक, निश्शंक परिणामी, नृशंस, अजितेन्द्रिय लक्षण कृष्ण लेश्या वाले के हैं।

नील लेश्या– ईर्ष्यालु, असहिष्णु अतपस्वी, गूढ मायावी, विषयों में गृद्ध, प्रद्वेषी, शठ, प्रमादी, रसलोलुप, आरंभ से अविरत, क्षुद्र–ये लक्षण नील लेश्या में परिणत होते हैं।

कापोत लेश्या–वाणी एवं आचार से वक्र, कपटी, अपने दोषों को छिपाने वाला, छली, मिथ्यादृष्टि, अनार्य, दुर्वचनी, चोर, मत्सरी–इन योगों से युक्त जीव कापोतलेश्यी होता है।

तेजोलेश्या–विनम्र, अचपल, अमायी, अकुतूहली, विनीत, दान्त, स्वाध्यायादि में योगवान, समाधिवन्त, उपधानवान (शास्त्राध्ययन में निहित तप करने वाला), प्रियधर्मी, दृढधर्मी, पापभीरू एवं आत्मार्थी इत्यादि योगों से युक्त तेजोलेश्या में परिणत होता है।

पद्मलेश्या–अत्यंत मंद कषायी, प्रशान्तचित्त, आत्मदमी, योगवान एवं उपधानवान, अल्पभाषी, उपशांत और जितेन्द्रिय–इन योगों से युक्त पद्मलेश्या में परिणत होता है।

शुक्ल लेश्या–आर्तरौद्रध्यानत्यागी, धर्म-शुक्लध्यान में एकाग्रचित्त, प्रशान्तमना, आत्मदमी, 5 समितियों से समित् 3 गुप्तियों से गुप्त, सराग हो या वीतराग परन्तु उपशांत एवं जितेन्द्रिय, इनसे समायुक्त मानव शुक्ललेश्या में परिणत होता है।

8. स्थान द्वार–(गाथा 33) असंख्य अवसर्पिणी उत्सर्पिणीकाल के जितने समय हो सकते हैं, उतने ही स्थान (स्रोत) लेश्याओं के हो सकते हैं। इसी प्रकार असंख्यात जीवों में जितने आकाशप्रदेश हैं, उतने ही स्थान लेश्याओं के हो सकते हैं। काल की दृष्टि से लेश्याओं के ये स्थान विशुद्धि एवं अशुद्धि के तारतम्य की अवस्थाएँ हैं।

9. स्थिति द्वार–(गाथा 34 से 39) कृष्ण लेश्या की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट 1 मुहूर्त अधिक 33 सागर, नील लेश्या की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक 10 सागर, कापोत लेश्या की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक 3 सागर, तेजोलेश्या की जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक 2

सागर, पद्मलेश्या की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट 1 मुहूर्त अधिक 10 सागर, एवं शुक्ल लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट 1 मुहूर्त अधिक 33 सागर जाननी चाहिये। जिन लेश्याओं की स्थिति मुहूर्त अधिक बताई वहाँ 1 अंतर्मुहूर्त पूर्वभव का एवं 1 अंतर्मुहूर्त उत्तरभव का इस प्रकार दो अंतर्मुहूर्त समझना चाहिये। शुक्ललेश्या में निर्दिष्ट मुहूर्त का तात्पर्य है कि आगामी जन्म में प्राप्त होने वाली लेश्या मरणकाल में एक मुहूर्त (अंतर्मुहूर्त) पहले ही आ जाती है।

चारों गतियों में लेश्याओं की स्थिति (गाथा 40 से 55 तक)

नारकीय जीवों में कापोत, नील, कृष्ण लेश्याएँ जघन्य 10 हजार वर्ष, उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग सहित 3 सागर, नील की जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक 3 सागर, उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग सहित 10 सागर तथा कृष्णलेश्या की जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक 10 सागर एवं उत्कृष्ट 33 सागर बताई गई है।

तिर्यंचों एवं मनुष्यों में शुक्ललेश्या को छोड़ शेष पांच लेश्याओं की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट दोनों अंतमुहूर्त की, यह भावलेश्या की दृष्टि से है। गाथा 46 में शुक्ललेश्या की स्थिति सयोगी केवली की अपेक्षा 9 वर्ष कम पूर्व कोटि की है। अयोगी केवली में लेश्या होती ही नहीं है।

भवनपति एवं वाणव्यंतर देवों की कृष्णलेश्या की जघन्य स्थिति 10 हजार वर्ष उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग मात्र है। नील की स्थिति कृष्ण की उत्कृष्ट से एक समय अधिक, उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग। कापोत की जघन्य नील की उत्कृष्ट स्थिति से एक समय अधिक, उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग। तेजोलेश्या की ज्योतिषी एवं वैमानिक देवों में जघन्य 1 पल्योपम उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक 2 सागर। तेजो की भवनपति वाणव्यंतर में जघन्य 10 हजार वर्ष उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक 2 सागर। पद्म लेश्या की भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी एवं वैमानिक देवों में जघन्य तेजोलेश्या की जघन्य स्थिति से एक समय अधिक उत्कृष्ट एक मुहूर्त अधिक 10 सागर बताई है। शुक्ललेश्या की जघन्य स्थिति, पद्म की उत्कृष्ट से एक समय अधिक, उत्कृष्ट 1 मुहूर्त अधिक 33 सागर की बताई है।

10. गतिद्वार—कृष्ण, नील, कापोत अशुभ और अधर्मलेश्याएँ हैं। पापबन्ध की हेतु होने से अनेक बार नरक गति की बन्धक हैं। तेजो, पद्म, शुक्ल लेश्याएँ धर्म लेश्याएँ होने से अनेक बार सुगति की बन्धक हैं।

11. आयुष्यद्वार— लेश्याओं की परिणति के प्रथम और अंतिम समय में जीव का परभव गमन नहीं होता। किन्तु किसी भी लेश्या की प्राप्ति के बाद अंतर्मुहूर्त बीत जाने पर अथवा उसके जाने में अंतर्मुहूर्त शेष रहने पर जीव परलोक में जन्म लेता है।

परलोक गमन की वेला में मृत्यु के समय अंतर्मुहूर्त प्रमाण आयुष्य शेष रह जाती है तब आगामी जन्म में प्राप्त होने वाली लेश्या का परिणमन उस जीव में

अवश्य हो जाता है। उसी लेश्या के साथ जीव परभव में जाता है।

श्रद्धा की दृढ़ता एवं शुभलेश्याओं में स्थिरता– लेश्याओं में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, स्थिति आदि के सूक्ष्म वर्णन से ज्ञानियों के ज्ञान में हमारी श्रद्धा दृढ़ बनती है। ज्ञानियों ने मंत्रों द्वारा असंभव बातों को आत्मिक ज्ञान से प्रत्यक्ष देखकर उनका कथन किया है।

साधक वर्ग को इन लेश्याओं के फल को जानकर अशुभ लेश्याओं का वर्जन करके शुभ लेश्याओं में स्थिर होना चाहिए।

–35, अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

णमोकार मन्त्र है प्यारा

श्री दिलीप धींग 'जैन'

णमोकार मंत्र है प्यारा।
सब मंत्रों में ये है न्यारा।
श्रद्धा भक्ति से स्मरण करें तो,
जीवन का दुःख हरता सारा।

सत्य मार्ग पर डटे रहेंगे।
कष्टों से नहीं कभी डरेंगे।
आए अगर कोई विपदा–बाधा,
महामंत्र का ध्यान धरेंगे।

पापों के पुद्गल गल जाते।
भीषण संकट भी टल जाते।
अधम नीच बन जाते उत्तम,
विषय–विकार सभी जल जाते।

सुख शांति की निर्मल धारा।
एकमात्र है यही सहारा।
'दिलीप' अनंत जीवों को इसने,
भव सिंधु से पार उतारा।

णमोकार मंत्र है प्यारा।
सब मंत्रो में.....

–बम्बोरा–313706, जिला– उदयपुर (राज.)

क्या आप जानते हैं, आप क्या खा रहे हैं?

●श्रीमती मेनका गांधी

एक उपभोक्ता के रूप में आपकी पसंद लाखों जानवरों के जीवन व मृत्यु का निर्णय करती है। कहने का अर्थ यह है कि यदि आप अपनी दैनिक इस्तेमाल की वस्तुओं के प्रति जागरूक हैं तो संभवतः आप न केवल अनेक जानवरों का जीवन बचा सकते हैं, बल्कि उन वस्तुओं का निर्माण करने वाले उत्पादकों व निर्माताओं को भी अन्य विकल्पों के प्रयोग के लिए बाध्य कर सकते हैं।

बहुत से उत्पादक व निर्माता आपको धोखे में रखते हुए अपने उत्पादों के रूप में आपके समक्ष अदृश्य रूप में जानवरों का मांस, उनकी त्वचा, हड्डियाँ परोस देते हैं और आपको पता भी नहीं चलता कि इन उत्पादों के रूप में आप क्या कुछ प्रयोग कर रहे हैं। इस सबके पीछे एक मुख्य कारण है कि जानवरों का मांस व अन्य अंग, उत्पादों में प्रयोग होने वाले अन्य विकल्पों के मुकाबले अधिक सस्ते होते हैं। इन उत्पादों में से अनेक पर तो निर्माता इनमें प्रयुक्त संघटकों का नाम भी अंकित नहीं करते। कुछेक निर्माता अपने उत्पादों पर तत्त्वों का नाम लिखते भी हैं तो वे इनका वैज्ञानिक नाम ही प्रयोग करते हैं जो आपकी समझ से बाहर की बात है।

1. **एलबुमेन**–इसे आप अंडे की जर्दी भी कह सकते हैं। आमतौर पर इसे ब्रेड व मिठाइयों आदि में प्रयोग किया जाता है। यदि आप किसी मिठाई या डबलरोटी पर परत जैसी कोई चीज देखें तो समझ जाइए कि यह अंडे की जर्दी से की गई सफाई के कारण है। जानवरों की हड्डियों का निर्माण कैलशियम फॉसफेट से होता है। जानवरों की हड्डियों का ब्रेड के गूंथे हुए आटे की गुणवत्ता में निखार के लिए प्रयोग किया जाता है।
2. **एजिनोमोटो**– यह मछली से बनता है। यह सॉस व चाइनीज फूड में प्रयोग किया जाता है।
3. **पनीर**– विदेशो में कई जगह चीज (पनीर) के निर्माण में जिंदा प्याना मछली के पेट से निकाले एसिड का प्रयोग किया जाता है। इस एसिड को रेन्नेट कहते हैं और इसे दूध से पनीर बनाने की प्रक्रिया में प्रयोग किया जाता है। भारत में बछड़ों के रेन्नेट पर पाबंदी है और यहां पर इसके स्थान पर रसायनों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के तौर पर क्राफ्ट चीज(पनीर) बछड़े के रेन्नेट से बनता है।
4. **चिंगम**– हालांकि यह प्राकृतिक गम (पेस्ट) से बनाई जाती है, लेकिन फिर भी इसमें ग्लेसरिन, सैट्रिक एसिड व पशुओं से प्राप्त होने वाला एमूलसिकिएरस आवश्यक रूप से मिला होता है। यदि यकीन न हो तो इसके खोल पर आप पढ़ सकते हैं।
5. **चिप्स**– विदेशों में फास्टफूड की दुकानों पर जितनी भी प्रकार की चिप्स मिलती हैं, उन्हें पशुओं की चर्बी में तला जाता है। पैकेटों में बिकने वाले चिप्स पर ध्यान से देखें कि यह वेजिटेबल ऑयल में तली गई है या नहीं।

6. **चॉकलेट**– चॉकलेट में सामान्यतः जानवरों से प्राप्त तत्त्वों का सम्मिश्रण होता है। कुछ ऐसे ही सम्मिश्रण हैं, अंडे की जर्दी, अंडे की लेसिथिन शेलैक व जैलेटिन आदि। नेस्ले की किटकैट काफ रेन्नेट से बनती है। इसके अतिरिक्त तुर्किश डेलाइट, फ्रूट रोल्स, टाफियों, जूजूबिज, पीपरमिंट्स आदि में जैलेटिन मिला होता है। पोलो की मिंट में गाय की चर्बी मिली होती है।

7. **शीतल द्रव (कोलाज)**– बाजार में आज बिकने वाले अधिकतर शीतल पेयों (कोलाज) में ग्लाइसेरोल मिला होता है। कोका कोला कम्पनी ने इस बात को स्वीकार भी किया है कि उनके उत्पाद में यह पदार्थ मिलाया जाता है। आइस्क्रीम में भी अंडा व गेलैटिन मिलाया जाता है।

9. जैली व जैम भी गेलैटिन युक्त होता है।

10. **वर्क**–वर्क सिल्वर का बना होता है। इस सिल्वर को गाय व भैंस की आंतों के बीच रख कर पीटा जाता है, तब कहीं जाकर वर्क तैयार होता है।

11. **रिवोफ्लेविन**– यह संतरी व पीले रंग का पदार्थ होता है, जिसमें अका व भिष्ट मिला होता है। वैजिटेबल से बना रिवोफ्लेविन काफी महंगा होता है।

12. **वोरसेसर्ट सॉस**– इसके निर्माण में भी मछली का इस्तेमाल किया जाता है।

खाद्य पदार्थो में मिलाए जाने वाले कुछ संघटक इस प्रकार हैं–

(1) जेलाटाइन–यह संघटक जानवरों की हड्डियां, त्वचा व अन्य शारीरिक अंगों को पानी में उबालकर प्राप्त किया जाता है। जानवरों के ये अंग बूचड़खानों से प्राप्त किये जाते हैं।

(2) कोचिनिएल–एक लाल रंग की जर है जो सकैल कीट–पतंगों को (पूंछ वाले) मारकर उनके मृत शरीरों को सुखाकर प्राप्त किया जाता है।

(3) शेलैक–कीट पतंगों के मृत शरीर को बोला जाता है। 22 ग्राम शेलैक प्राप्त करने के लिए एक लाख कीट–पतंगों की बलि दी जाती है।

(4) ग्लैसरीन–ग्लाइसरोल– काफी ग्लैसरीन जानवरों के शरीर से ही प्राप्त की जाती है, लेकिन इसे पेट्रोलियम से भी बनाया जा सकता है।

उत्पादक भी इस बात से वाकिफ नहीं होते कि ग्लैसरीन मुख्यतः जानवरों से ही प्राप्त होती है और शायद यही कारण है कि वे इसे बार–बार अपने उत्पादों में प्रयोग करते हैं और कहते हैं कि उनका उत्पादन विशुद्ध रूप से प्राकृतिक है।

(5) स्टेआटिक एसिड– यह भी पशुओं के शरीर से प्राप्त होने वाला पदार्थ है और उसे साबुन, सौन्दर्य प्रसाधनों व मोमबत्ती बनाने आदि में भी प्रयोग किया जाता है।

शायद अब तो आपको मालूम हो ही गया होगा कि वे उत्पाद जिन्हें आप भी प्राकृतिक या वनस्पति आधारित मान चुके हैं,वास्तव में कई बहूपयोगी जानवरों की बलि के बाद ही आप तक पहुँचते हैं। आप इसे रोक सकते हैं। हाँ, यह बात सच है कि इन उत्पादों को बिना जानवरों के अंगों के प्रयोग के भी बनाया जा सकता है

और बनाए भी जा रहे हैं, लेकिन इसके लिए आपको अमूमन थोड़ा सा अधिक खर्च करना होगा और उन पदार्थों का बहिष्कार करना होगा जिनके निर्माण के लिए जानवरों के अंगों का प्रयोग होता है।एक भारतीय का उदाहरण भी हमारे सामने है जिसने अमरीका में कोर्ट के सामने मैकडॉनल्ड्स की पोल खोली। वर्षों तक मैकडॉनल्ड्स ने लोगों से झूठ बोला कि वे चिप्स को वैजिटेबल ऑयल में तलते हैं। सच्चाई सामने आ चुकी है कि मैकडॉनल्ड्स चिप्स को वैजिटेबल ऑयल में तलने से पहले उन्हें गाय की चर्बी में डुबोते थे। संभवतः उसी के समान हमारे देश में भी वे चिप्स जो दूसरे देशों से आयात किए जाते हैं, उनमें इस तरह की सामग्री मिली होती है।

अब निर्णय आपके हाथ में है कि आप ऐसे उत्पादों का प्रयोग करते हैं या नहीं, लेकिन एक बात तो मैं ही आपको जरूर कहना चाहूंगी कि भले ही ये उत्पाद कुछ सस्ते व स्वादिष्ट हो सकते हैं, लेकिन आपकी सेहत के लिये ये अत्यंत हानिकारक हैं। यदि आप अपने आपको पूरी तरह शाकाहारी बनाना चाहते हैं तो प्राकृतिक तत्त्वों से निर्मित उत्पाद ही अपनाएं।

स्वाध्याय का सार : समाधि शिक्षा

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

1. समाधि शिक्षा से तात्पर्य है जीवन सफल बनाने की कला। सफलता दो प्रकार की होती है (अ)लौकिक सफलता (ब) अलौकिक सफलता। स्वाध्याय सम्यक् विकास की आधार शिला है। विचारवान व्यक्ति लौकिकता को हेय और अलौकिकता को ज्ञेय मानता है।

2. हम अज्ञात को खोजने में जीवन की सफलता मानते हैं। आत्मा को जानना हमारा उद्देश्य है। देहात्म बुद्धि से ऊपर उठना हमारा लक्ष्य है। इस भेदज्ञान को जान लेना समाधि शिक्षा है।

3. जिस क्षण भी वर्तमान जीवन का अंतःआभास अनुभव में आने लगे, उस समय समत्व की साधना विद्यमान रहे। मति सुधरी तो गति सुधरी। जीवन अनासक्त भावपूर्वक जीयें, ऐसी साधना की शिक्षा स्वाध्याय से मिलती है।

4. स्वाध्याय समाधि-शिक्षा के लिए एक श्रेष्ठ संकल्प है। हमारे एक श्रेष्ठ संकल्प का स्वागत दुनिया हजारों श्रेष्ठ संकल्प के साथ करती है। वह समाधि साधक का अभिनन्दन करती है। समाधिभाव की शिक्षा ग्रहण करती है। स्वाध्याय से हमारा मन मजबूत होता है तथा उतार चढाव को झेलने में सक्षम होता है।

5. बार बार के स्वाध्याय से अपनी बुद्धि इतनी परिपक्व हो जाती है कि मोक्ष जैसा असंभव सुख भी संभव समझ में आता है। कष्टानुभव इसलिए होता है कि हमने अपने मन को शरीर तक सीमित कर रखा है, यदि मन को शरीर से अलग रखने की कला सीख गए तो ऐसी महान आत्माओं को कभी भी शारीरिक पीड़ा नहीं सताती है। यह सब चिंतन एवं साधना का क्षेत्र है, जिसका शुभारम्भ स्वाध्याय से होता है।

—छोटी कसरावद(म.प्र.)

सम्यक् दर्शन का दीपक हो

श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त'

सम्यक् दर्शन का दीपक हो,
बाती केवलज्ञान की।
सम्यक् चारित्र ज्योति जैसे,
महावीर निर्वाण की।।टेक।।

महावीर ने निज के बल से,
निज में सुख प्रकटाया था।
ऐसे महावीर की जय हो,
जय निज आतम ज्ञान की।।1।।

रहा भटकता कुगतियों में,
जब स्वच्छन्द हुआ मारीच।
संबोधन से सुधर गया तो,
कथा चली उत्थान की।।2।।

देखो तो तिर्यंच गति में,
सम्यक् दर्शन प्राप्त किया।
क्रूरसिंह ने हिंसा त्यागी,
चली नाव कल्याणक की।।3।।

चमत्कार सम्यक् दर्शन का
ज्ञान चरित भी सत्य हुए।
भटकन छूटी कुगतियों की,
सुगतियाँ थीं बाद की।।4।।

मानव बनकर दीक्षा ली और
सोलह कारण भाव किए।
बन्ध हुई शुभ कर्म प्रकृति,
तीर्थंकर के नाम की।।5।।

ऐसा राजा नन्द समाधि,
से मरकर के इन्द्र हुआ।
महावीर फिर जन्मे, जय हो,
धरा धन्य करतार की।।6।।

सिद्धार्थ त्रिशला के सुत का,
जगती में यशगान हुआ।
गर्भ, जन्म, तप कल्याणक जय,
जय हो केवलज्ञान की।।7।।

कार्त्तिक श्याम अमावस शुभ को,
मोक्ष गमन जब प्रभु किए।
पर्व दिवाली तब से जय, जय
महावीर भगवान की।।8।।

—पी.डब्ल्यू. डी. क्वार्टर नं. 7, समद रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.)

(क्रमशः5)

भगवान महावीर : 101 तथ्य

श्री राजेश जैन 'देवकर'

46. भगवान महावीर के छहमासी तप का पारणा एवं 13 कठिन अभिग्रहों (संकल्पों) की पूर्ति राजबाला चन्दना के हाथों हुई। वे अभिग्रह थे–"हाट में बिकी अविवाहित कुलीन कन्या जो बेड़ियों से जकड़ी, मुण्डित सिर और 3 दिनों की उपवासी (भूखी) हो। कच्छा पहन कर उड़द के बाकुले सूप में लिये घर की देहलीज पर अतिथि की प्रतीक्षा में रत हो और जिसकी आंखें अश्रुधारा से नम हो।" ऐसे महाअभिग्रहों की पूर्ति से उनके द्वारा नारी जाति के उत्थान और सम्मान का द्वार खुल गया। फिर तो निरीह और पशुवत् मानी जा रही नारी पूजी जाने लगी।

47. महावीर के कानों में पूर्व वैर-भाव से प्रेरित होकर एक ग्वाले ने तीक्ष्ण तृण (कीलें) ठोके, जिन्हें खरक वैद्य ने सिद्धार्थ वणिक की सहायता से निकाला व उपचार किया। यही एक उपसर्ग था जिसे सहन करते समय भगवान के मुख से दुःखपूर्ण चीत्कार निकल पड़ी थी।

48. प्रभु महावीर ने 12 वर्ष 6 माह 15 दिन के साधना-जीवन में मात्र 11 मास 19 दिन आहार किया। उनके साधना के मुख्य साधन थे– संयम, तप, ध्यान और मौन। उन्होंने साधना बहुधा खड़े–खड़े कायोत्सर्ग मुद्रा से की।

49. जृम्भक ग्राम में ऋजुबालिका नदी के तट पर श्यामक किसान के खेत में शालवृक्ष के नीचे गोदुहिकासन में बेले की तपस्या(दो दिन के उपवास) में भगवान महावीर को कैवल्य ज्योति की प्राप्ति हुई। वह शुभ दिन था वैशाख शुक्ला दशमी(ई.पू.557)

50. तीर्थंकरों के केवलज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् देवों द्वारा मुक्तामणि निर्मित नयनाभिराम समवशरण की रचना की जाती है जहां सभी प्रकार के जीव अपना जन्मजात वैर विसार कर 12 प्रकार की परिषदा के रूप में प्रभु की अमियवाणी का पान करते हैं। ऐसे ही स्वर्ण/रजत/मणि–माणिक्य आदि से शोभित सुंदर समवशरण की रचना देवों द्वारा की गई। जहां से प्रभु वीर ने धर्म पिपासु जनता को संबोधित किया था।

51. प्रभु ने केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् पहली बार सार्वजनिक प्रवचन दिया। समवशरण में हुये उपदेश का लाभ देवों ने ही लिया। इतिहास में इसे पात्र की दृष्टि से असफल सभा कहा गया है, क्योंकि देव संयम ग्रहण नहीं कर सकते, जबकि मानव/तिर्यंच प्रभु वाणी के श्रवण से वंचित रह गए। अतः उनकी प्रथम देशना से कोई प्रतिबुद्ध नहीं हो पाया। इसलिये कहा जाता है कि "गाय दुही भरतक्षेत्र में दूध गया देवलोक में।"

52. भ. महावीर ने अपने दूसरे समवशरण में महासेन उद्यान में वेद–वेदांगों के प्रकांड 11 विद्वानों के प्रश्नों/समयाओं का तार्किक एवं संतोषजनक उत्तर दिया, जिससे प्रभावित होकर उन्होंने महावीर का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया

और श्री चरणों में समर्पित हो गये। जीव, कर्म, निर्वाण, नरक–देव, पुण्य–पाप, बंध, मोक्ष, परलोक आदि गूढ़ विषयों पर महावीर ने उनका युक्तियुक्त समाधान किया था, जिससे एक ही दिन में 4411 आत्माओं ने संशयातीत महावीर का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया।

54. श्रेणिकपुत्र मेघ भ. महावीर के पास दीक्षित हुआ, किन्तु प्रथम रात्रि में ही मुनिधर्म की मर्यादाओं/कष्टों को सहन न कर सकने से पुनः राजप्रासाद में लौटने का निश्चय किया। संयम में स्थिर करने हेतु महावीर ने युक्तिसंगत ढंग से समझाते हुये उसे उसके पूर्वभव का स्मरण कराया। हाथी के भव में भी दया व अहिंसा की आराधना मेघ ने की थी। प्रभु प्रेरणा से वह पुनः संयम में सुस्थित हो गया।

55. धन्य शालिभद्र जीजा–साला की जोड़ी। अपार वैभव और संपत्ति के मालिक! स्वर्गोपम सुखों में लीन ऐसे श्रेष्ठी पुत्रों ने भी तत्क्षण संकल्प लिया और संयम पथ पर आरुढ़ हो गये। शब्द के एक बाण ने दोनों को ऐसा बींधा कि वे कर्म बेधने में निपुण हो गये।

56. गौतम स्वामी की प्रेरणा से मुनि बना एक किसान जब प्रभु के पास पहुंचा तो उन्हें देखते ही मुनि वेष उतार कर भाग गया। धर्म सभा की जिज्ञासा शांत करते हुये महावीर ने इसे पूर्वभव का कारण बताया–"त्रिपृष्ठ के भव में मैंने जिस खूंखार सिंह का दमन किया था वही जीव अन्य भवों से होता हुआ किसान बना है, जबकि उस भव का सारथि अब गौतम के रूप में मेरे साथ है। गौतम और मेरा जन्म जन्मांतर का संबंध है। पिछले कई भवों में हम साथ–साथ रहे हैं।"

57. राजगृह नगरी में अर्जुनमालाकार के आतंक से हाहाकार मचा था। तभी भ. महावीर वहां पधारे। धर्म पिपासु श्रावक सुदर्शन उसी पथ से प्रभु के दर्शनार्थ जा रहा था। अर्जुनमाली ने उसे मारना चाहा, पर उसकी दृढधर्मिता से वह उसका कुछ न बिगाड़ सका। यक्ष प्रविष्ट उसकी काया धड़ाम से नीचे गिर पड़ी। इस तरह आतंक का अंत हुआ। महावीर की प्रेरणा से वह दीक्षित हुआ। कठिन तप करते और घोर परीषह को समता से सहते हुये उसने कर्मों से मुक्ति पायी। प्रतिदिन 1 स्त्री 6 पुरुष इस तरह कुल 1141 स्त्री–पुरुषों की हत्याओं के बाद भी समभाव पूर्वक की गई तपसाधना से अर्जुनमाली कर्ममुक्त हुआ। इसी भव में कर्म बांधने ओर तोड़ने का यह ज्वलंत उदाहरण है।

58. दस्युराज रोहिणेय सत्संग/धर्मवाणी से कोसों दूर था, किन्तु भ. महावीर की वाणी सुनकर वह बच गया। इसके पश्चात् वह उनके संघ में सर्वतोभावेन समर्पित हो गया। उसकी चोरी से आक्रांत मगध के महामंत्री ने उसे पकड़ तो लिया, किन्तु साक्ष्य के अभाव में दंड नहीं दे सके। छल द्वारा उससे आत्मस्वीकृति करवाने के सारे प्रबंध किये गये थे, किन्तु भ. महावीर से देवों को पहचानने के लक्षण सुनकर वह जागा और फिर दंड और कर्मबंध दोनों से बच गया।

–श्री देव आनन्द जैन गुरुकुल, वर्द्धमान नगर, राजनांदगांव(म.प्र.)

गुण तो गावोनी भक्ति भाव सुं

श्री हस्तीमल गोलेछा

1. सुनो सुनो हो बाई भाई रत्नवंश री शान हो
   गुण तो गावोनी भक्ति भाव सुं।
2. जिनशासन में अजब निराली रत्नवंश फुलवारी हो,
   बीज तो रोपयो हो 'कुशल' प्रेम सुं।
3. मातारा वियोग सु 'गुमान' मन जाग्यो हो
   पिता संग दीक्षा कुशलचन्द्र सुं।
4. महाप्रभावी परमप्रतापी 'रत्नचन्द्र सिरताज हो,
   शासन तो दीपायो क्रियोद्धार सुं।
5. गणि 'हमीर' रो प्रज्ञाचक्षु श्रावक विनयचन्द्र हो,
   चौबीसी रची है भक्ति भाव सुं।
6. पट्टधर चौथा पूज्य 'कजोड़ी' किशनगढ़रा वासी हो,
   संजम तो पाल्यो हो चादर एक सुं।
7. मायाराम और माधवमुनि बहुश्रुत दर्शन पायो हो,
   वत्सलता पायी ही 'विनयचन्द्र' सुं।
8. जीवन निर्माण रो कुशल शिल्पी पूज्यवर शोभाचन्द्र हो,
   शिल्पी तो यश पावे बिम्ब सुं।
9. धरमगुरु धरमाचार्य 'हस्ती' गुरुवर म्हारा हो,
   गुण तो गाया नहीं जावे जीभ सुं।
10. सामायिक स्वाध्याय रो घोष घर–घर मांय गुंजायो हो,
    लोग तो जाने है अपर नाम सुं।
11. भक्तांरा भगवान प्यारा 'हीरा' गुरुवर म्हाणा हो,
    प्रभावना करे है प्रवचन भाव सुं।
12. मोटा मुनि मान नामी, जिनमें नहीं कोई खामी हो,
    नवकार में दीपे है, पद चार सुं।
13. तपस्वी मुनि 'बसन्त' सुगनचन्द रा भाई हो,
    संजम तो लीनो हो सूरज संग सुं।
14. धायमाता रो विरुद निभावे संघनायक रे समर्पण हो,
    लोग तो जाणे है 'महेन्द्र' नाम सुं।
15. मधुर व्याख्यानी 'गौतम' मुनि स्थविरां री सेवा में हो,
    चौमासो चमके है पीपाड़ शहर सुं।
16. सेवाभावी नन्दीषेण' सेवा में निशदिन आगे हो,
    ज्ञान तो सिखावे बोल थोक सुं।
17. कपड़ा मोटा कद छोटा तपस्वी 'प्रकाश' हो,

क्रिया तो पाले है जी जान सुं।

18. इंगियागार सम्पन्न प्रज्ञा ज्यांरी भारी हो,
'प्रमुदित' है जनता सारी भाव सुं।
19. गणिवर हीराचन्द्र जी रा चेला, दीक्षित मंगलमुनि पेठा,
'कपिलजी' आया है हिण्डौन शहर सुं।
20. गांधी कुल रो एकाकी तारो गुरु चरणे आयो हो,
संजम तो लीनो हो बेनड़ संग सुं। (योगेश मुनि)
21. हीरादेसर रो लाडलो ओ हीरा गुरु रे आयो हो,
अमर लीला रो प्यारो जान सुं।(मनीष मुनि)
22. माता पिता शान्ति ज्यां ने, गुरु हीरा मन भाया हो,
'यश' तो छायो है चहुं ओर सुं।(यशवन्त मुनि)
23. लाड़, सायर, मैनासुन्दर, सती संतोष जी प्यारा हो,
शान्ति चमके है तप त्याग सुं।
24. तेज, रतन, सुशीला ऐ तीनु सगी गुरुबहना हो,
शिक्षा तो पायी है मैनासुन्द सुं।
25. रत्नवंश सन्त सती ऐ आंख में काजल ज्यूं विचरे हो,
लोग तो चाहवे है घणा मोद सुं।
26. डॉ. धर्मचन्द रो सम्पादन, जिनवाणी में चमके हो,
दुनिया तो पढ़े है घणा कोड सुं।
27. गुरु 'हीरा रो हनुमान' बननी म्हारे पूरी मन में हो,
'हस्ती' तो चाहवे है भक्ति भाव सुं।

–4, शिवविला, नया बास, ढाबा गली, ब्यावर–305901

दीपावली पर पटाखें न छोड़ें

दीपावली के पावन अवसर पर पटाखे के जरिये हो रही हिंसा एवं रुपयों के अपव्यय को बचाने के लिए अखिल भारतीय अहिंसा प्रचार समिति, भवानीमण्डी द्वारा गत 3 वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर ''पटाखा त्यागो अभियान'' चलाया जा रहा है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी इस अभियान की सफलता के लिए देशभर के समस्त जैन श्रीसंघों एवं अहिंसाप्रेमी कार्यकर्ताओं से विनम्र अनुरोध है कि आप सभी जागरूक धर्मनिष्ठ महानुभाव इस अभियान की सफलता के लिए अपने स्थानीय संघ एवं आस–पास के क्षेत्रों में बाल, युवा, युवतियों को पटाखा त्याग हेतु अधिकाधिक प्रेरित करें और पटाखा त्याग करने वाले समस्त भाई–बहनों को पुरस्कृत करने का लक्ष्य रखावें। पटाखा त्याग भावना के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए स्टीकर्स, पेंपलेट, पोस्टर्स, प्रतिज्ञा पत्र आदि प्रचार समग्री निःशुल्क प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें– **प्राणिमित्र श्री नितेश नागोता 'जैन', राष्ट्रीय संचालक, अ.भा. अहिंसा प्रचार समिति, 175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी–326502 (राज.) फोन नं. 07433–22621, 37574**

(क्रमशः 2)

प्राणिवध का त्याग

श्री लालचन्द जैन

श्री देवेन्द्रविजय जी द्वारा रचित प्राकृत कथा 'जैन कथा रत्न कोष' के आधार पर श्री लालचन्द जैन ने यह कथा स्तम्भ प्रारम्भ किया है। इसके अन्तर्गत श्रावक के व्रतों का महत्त्व स्थापित हुआ है तथा अतिचारों से बचने की प्रेरणा मिलती है। प्रस्तुत कथा में प्राणातिपात विरमण व्रत (अहिंसा) का महत्त्व स्थापित करते हुए लेखक ने उसके अतिचारों से बचने की प्रेरणा की है।—**सम्पादक**

फिर शिवदेव को लेकर वे सूरि भगवान के पास पहुंचे। वहां जाकर आचार्य भगवान को सविधि वन्दन कर सब लोक उनके सामने जमीन पर बैठ गये। आचार्य भगवंत ने धर्मोपदेश प्रारंभ किया।

आचार्य भगवन्त अपने उपदेश में दयाधर्म पर विवेचन कर रहे थे। उपयुक्त अवसर जान कर मंत्री ने प्रश्न किया, "भगवन्! सब प्रकार के धर्म को टिका कर रखने वाला मूल कारण क्या है?"

गुरु बोले– "सुनो! जीव हिंसा का त्याग करना ही सब धर्म कार्यों को टिका कर रखने वाला मूल साधन है। सूक्ष्म जीवों की रक्षा करने से जीव हिंस का पूर्ण त्याग हो सकता है, किन्तु वह तो साधु ही कर सकते हैं। गृहस्थ दो, तीन, चार, पाँच इन्द्रियों वाले जीवों को संकल्पपूर्वक धर्म के कार्य के लिये भी न मारने का व्रत ग्रहण करते हैं। इस प्रकार गृहस्थ स्थूल जीवों की रक्षा कर सकते हैं। गृहस्थों को घर के अनेक कार्य करने पड़ते हैं, जैसे खेती, पशुपालन, व्यापार, उद्योग आदि। इसलिये वे पृथ्वी, पानी, वायु, अग्नि वनस्पति आदि के जीवों की रक्षा नहीं कर सकते। इसी प्रकार अपराधी स्थूल जीवों की रक्षा भी वे नहीं कर सके। अतः निरपराधी स्थूल जीवों की मन, वचन, काया से संकल्प पूर्वक हिंसा न करने एवं न करवाने का दो करण तीन करण तीन योग से व्रत ग्रहण करते हैं। इस प्रकार गृहस्थ थोड़े अंश में संयमी बन सकता है। मुनि के व्रत की अपेक्षा यह बहुत अल्प है, इसलिये इसे 'अणुव्रत' कहा गया है।

सबसे पहले किसी को न मारने का व्रत ग्रहण करना चाहिये। किसी के प्राणों का घात न करना, यह पहला 'प्राणातिपात विरमण' व्रत है। श्वास, निःश्वास, आयुष्य, पाँच इन्द्रियाँ तथा मन, वचन, शरीर बल ये दस प्राण हैं। इनको धारण करने वाला प्राणी है, उसका वध करना प्राणीवध है। प्राणीवध का त्याग करना पहला 'प्राणातिपात विरमण' अणुव्रत है। सभी जीव सुख के अभिलाषी हैं, सभी लंबे समय तक जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। इसलिये सभी जीवों को अपनी आत्मा के समान मान कर उनकी रक्षा करनी चाहिये। भले ही कोई तापस पंचाग्नि आदि कठिन तप क्यों न करते हों, किन्तु जीव दया से श्रेष्ठ कोई दान नहीं है, कोई तपस्या नहीं है। अतः यदि स्वयं लम्बे समय तक जीने की इच्छा है तो अन्य जीवों को भी नित्य जीवन दान देने के लिये प्रयत्न करना चाहिये। प्राणीवध के त्याग से

कामदेव से भी श्रेष्ठ रूप, कुबेर से अधिक धन, अखंड सौभाग्य और आश्चर्यजनक ऐश्वर्य प्राप्त हो सकते हैं। जिसने जीव वध का त्याग कर दिया है, उसने अपना भव सफल कर लिया है, उसे धर्म के सब फल प्राप्त होंगे, वह कुमति में नहीं जायेगा। इस व्रत को धारण करने वाले को बंध, वध, अंग-विच्छेद, अतिभार और खानपान विच्छेद नामक पाँच अतिचारों से भी बचना चाहिये। मन में द्वेष, राग, क्रोध, मद, मान, माया, लोभ या मोह के वशीभूत होकर इन अतिचारों का सेवन नहीं करना चाहिये।''

मंत्री–''भगवन्! किसी अपराधी को दंड देने के लिये उसे कैद करना पड़े, उसका खाना-पीना बंद करना पड़े या उस पर अधिक काम लादा जाय तो उससे कोई मरता तो नहीं, तब जीववध का त्याग करने वाले का व्रत खंडित कैसे होगा?

आचार्य– ''यद्यपि इससे व्रत भंग नहीं होता तो भी व्रत में दोष तो लगता ही है। किसी को न मारने के संकल्प वाले व्यक्ति के मन में यदि क्रोध आदि भाव आयें जिससे यदि किसी को बांधे, मारे या अधिक बोझ लादे तो उसकी मृत्यु न होने पर भी ऐसी प्रवृत्ति निर्दयता वाली होने से अंतरंग भाव की दृष्टि से व्रत भंग हो जाता है। बाह्य दृष्टि से जीव वध न होने से व्रत का स्थूल पालन हो जाता है, किन्त ऐसा व्यक्ति व्रत का दिखावटी पालन ही करता है, अंतरंग नहीं।''

आचार्य के उपर्युक्त उपदेश को सुनकर यज्ञदेव ने मन में वैराग्य प्राप्त कर जीवन पर्यंत के लिये किसी को न मारने का व्रत ग्रहण किया। पिता और बड़े भाई के समझाने पर भी शिवदेव ने व्रत नहीं लिया, क्योंकि उसके मन में संधिपाल के पुत्र के प्रति द्वेष भरा था, वह उसे मारना चाहता था।

सेनापति ने अपनी पुत्री मदनसुंदरी का विवाह संधिपाल के पुत्र नंदीघोष के साथ कर दिया और वह अपने ससुराल भी चली गयी। यह सुनकर शिवदेव का क्रोध भड़क उठा और नंदीघोष को जान से मार डालने के लिये उसने गुप्तचरों को नियुक्त कर दिया। शिवदेव ने यह प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक वह नंदीघोष को नहीं मारेगा तब तक पलंग पर नहीं सोयेगा, शाम को भोजन नहीं करेगा और माला या आभूषण नहीं पहनेगा।

यज्ञदेव ने शिवदेव को एकांत में बुला कर अनेकर प्रकार से समझाया, पर उसने अपने दुष्ट विचार का त्याग नहीं किया। वैराग्य वृत्ति वाले मंत्री ने वइरसेन सूरि के पास जाकर दीक्षा ग्रहण कर ली। यज्ञदेव के समझााने पर भी जब शिवदेव न समझा तब उसने सारा वृत्तांत राजा को कह दिया। राजा ने यज्ञदेव को मंत्री बना लिया और शिवदेव को ऐसी दुष्टता न करने का आदेश देकर छोड़ दिया। दिखावे के लिये 'आपकी जैसी आज्ञा' कहकर शिवदेव चला गया, पर उसके मन में तो संधिपाल के पुत्र के प्रति गहरा द्वेष भरा हुआ था।

एक बार नगर में वंसत त्रयोदशी का मदन महोत्सव हो रहा था। लोग वस्त्राभूषणों से सजधज कर नगर के बाजारों, चौराहों, गतियों एवं उद्यानों में

एकत्रित होकर गीत गा रहे थे। गुप्तचरों ने आकर शिवदेव से कहा, "संधिपाल का पुत्र अपनी स्त्री के साथ थोड़े से लोगों को साथ लेकर संध्या के समय नगर के बाहर उद्यान में कामदेव की पूजा करने जायेगा।"

यह सुनकर शिवदेव प्रसन्न हो गया। कुछ हथियारबंद सैनिकों के साथ वह नंदीघोष को मारने पहुंच गया। नंदीघोष ने जब सुना कि शिवदेव उसे मारने आ रहा है तब वह भी अपने सैनिकों के साथ लड़ने को तैयार हो गया। दोनों के बीच युद्ध हुआ, किन्तु नंदीघोष बराबर तैयारी करने नहीं आया था, इसलिये मारा गया। शिवदेव को बहुत घाव हो गये और वह युद्ध के मैदान से भागने लगा, किन्तु संधिपाल ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया और उसे राजा के पास ले गया। राजा ने शिवदेव का तिरस्कार किया और उसके काले कपड़े पहनाकर नगरी के मध्य फाँसी पर लटका दिया।

अपने छोटे भाई को फाँसी का दंड प्राप्त होने पर भी यज्ञदेव थोड़ा भी उत्तेजित नहीं हुआ, वह जीववध त्याग के व्रत से थोड़ा भी चलित नहीं हुआ। 'इससे कुछ होने वाला नहीं है' कहकर लोगों ने उसकी हँसी उडाई और उसे उत्तेजित करना चाहा, पर वह शांत ही रहा। उसने कहा कि "जो लोग धर्म के विरुद्ध आचरण करते हैं वे चाहे भाई हो, पुत्र हों या संबंधी हों, उनसे दूर ही रहना चाहिये।" बुद्धिमान यज्ञदेव का राजा ने ही नहीं, नगर के लोगों ने भी आदर किया। उसने इस लोक में यश प्राप्त किया और परभव में वह सुगति को प्राप्त करेगा।

जीववध का त्याग करने से जो गुण प्राप्त होते हैं, उनका वर्णन तो इन्द्र भी नहीं कर सकता। जीववध का त्याग करने से जैसा पुण्य होता है, वैसा यज्ञ करने से, तीर्थों में नहाने से और मंदिर बनवाने से भी नहीं मिलता। पर्वत की चोटी जितने सोने का दान करने से भी श्रेष्ठ फल जीव दया से प्राप्त होता है। जीव हिंसा के त्याग से मनुष्य को लंबा आयुष्य प्राप्त होता है, वह लोगो के नेत्रों को आनंदित करने वाला होता है। यह सब किसी भी प्राणी को न मारने की प्रतिज्ञा का फल है।

इस पृथ्वी पर जिनेश्वर देव से उत्कृष्ट कोई देव नही है, महाव्रतधारी गुरु से अधिक परोपकारी कोई गुरु नहीं है, मिथ्यात्व को छोड़कर जीववध से अधिक बुरा कोई पाप नहीं है और जीववध के त्याग से उत्कृष्ट कोई पुण्य नहीं है।

–10/595, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

भ. महावीर पर डाक टिकट की प्राप्ति

यह विदित ही है कि इस वर्ष भ. महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक पर भारत सरकार द्वारा भ. महावीर के चित्र के साथ 3 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया है। इस टिकट की प्राप्ति सुलभ नहीं है। इसे मुख्य डाकघर में बने विशेष कक्ष से पूछताछ करके प्राप्त किया जा सकता है। जैन भाईयों से निवेदन है कि वे इन टिकटों के संकलन एवं प्रयोग हेतु मुख्य डाकघरों से सम्पर्क करें।

–तेजसिंह चौधरी, जोधपुर

(क्रमशः 3)

आओ वैराग्य में मन रमायें

श्री नेमीचन्द जैन

जीवन में आते रहें, पतझड़ और बसंत।
दोनो में समता रहे, होय दुःखों का अंत।।

तृष्णा रस मीठो जहर, पीवत लागे स्वाद।
गट गट करतो पी गयो, बाढ़े रोग असाध्य।।

जीव दया पाली नहीं, पाली नहीं छह काय।
सूना घर रो पावणो, जिम आयो तिम जाय।।

पुत्रवंती मत कर गारवो, धनवंती मत कर अहंकार।
कदियक झोलो बाजसी, घर घर री पणिहार।।

श्वास श्वास पर प्रभु भजो, वृथा श्वास मत खोय।
न जाने इस श्वास का, आवन होय न होय।।

निज आतम को दमन कर, पर आतम को चीन।
परमातम को भजन कर, यही मत प्रवीण।।

राजा राणा छत्रपति, हथियन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार।।(अनित्य भावना)

दल बल देवी देवता मात पिता परिवार।
मरती बिरिया जीव को कोई न राखण हार।।(अशरण भावना)

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णा वश धनवान।
काहु न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान।।(संसार भावना)

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
या कहूं इस जीव को, साथी सगो न कोय।।(एकत्व भावना)

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय।। (अन्यत्व भावना)

दीपै चाम चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में और नहीं घिन गेह।।(अशुचि भावना)

जगवासी घूमे सदा मोह नींद के जोर।
सर्वस्व लूटे सुध नहीं, कर्म चोर चहूं ओर।।(आस्रव भावना)

मोह नींद जब उपशमे, सतगुरु देय जगाय।
कर्म चोर आवत रुके, तब कुछ बने उपाय।।(संवर भावना)

ज्ञानदीप तप तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसे नहीं, बैठे पूरब चोर।।**(क्रमशः)**

–प्रधानाचार्य, राजकीय सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, अरटिया कलां, जोधपुर

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन स्तोत्र-साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन- *साध्वी डॉ. हेमप्रभा 'हिमांशु'* ***प्रकाशक***-*मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन, पीपलिया बाजार, ब्यावर(राज.)* ***पृष्ठ*** *20+383,* ***मूल्य***- *दो सौ रुपये, अगस्त 2001 ।*

विदुषी साधिका महासती श्री उमरावकंवर जी म.सा. 'अर्चना' की सुशिष्या साध्वी डॉ. हेमप्रभा जी 'हिमांशु' का प्रस्तुत ग्रन्थ जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध का प्रकाशित रूप है। साध्वी जी ने पाँच अध्यायों में जैन स्तोत्र-साहित्य का भारतीय परम्परा में महत्त्व निर्धारित करते हुए उसकी आगमिक, काव्यशास्त्रीय एवं दार्शनिक दृष्टि से समीक्षा की है। साध्वी जी ने प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा में रचित स्तोत्रों की चर्चा करते हुए संस्कृत स्तोत्रों का विशेष आलोडन किया है। एकाधिक भाषाओं में रचित स्तोत्रों एवं आधुनिक स्तोत्रों का भी परिचय दिया गया है।

जैन धर्म में स्तोत्र-साहित्य समृद्ध है। सिद्ध सेन, समन्तभद्र, मानतुंग, अकलंक, बप्पभट्टि, पात्रकेसरी, विद्यानन्द, धनंजय, सिद्धर्षिगण, वादिराजसूरि, धनपाल, अमितगति, हेमचन्द्रसूरि, रत्नाकरसूरि, यशोविजय, कवि भागचन्द, मानदेव सूरि आदि विभिन्न जैन स्तोत्रकारों के स्तोत्रों के आधार पर किए गए अध्ययन से यह शोध ग्रन्थ कई दृष्टियों से उत्तम बन पड़ा है। स्तोत्र-साहित्य आगम परम्परा के कितने अनुकूल है, इसका प्रतिपादन तृतीय अध्याय में किया गया है। रस, गुण, अलंकार, चित्रालंकार, शब्दशक्ति, रीति, छन्द आदि की दृष्टि से इनकी समृद्धि की परीक्षा चतुर्थ अध्याय में की गई है। पंचम अध्याय वस्तु लक्षण,अनेकान्तवाद,स्याद्वाद, नयवाद, प्रमाण-स्वरूप आदि के प्रतिपादन एवं जैनेतर दर्शनों के खण्डन से संबद्ध है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में चार परिशिष्ट हैं– परिशिष्ट 'क' में तीर्थंकरों के शताधिक विशेषणों की व्युत्पत्तिपरक व्याख्या की गई है। परिशिष्ट 'ख' में अनूठे स्तोत्र संकलित हैं। परिशिष्ट तृतीय एवं चतुर्थ में क्रमशः शोध प्रबंध में प्रयुक्त जैन स्तोत्रों की सूची एवं सहायक ग्रन्थ सूची दी गई है। ग्रन्थ से भारतीय स्तोत्र परम्परा में जैन स्तोत्रों के महत्त्व का स्थापन हुआ है।

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2001- ***सम्पादक***- *बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल',* ***प्रकाशक***-*उज्ज्वल प्रकाशन, 105 तिरुपति अपार्टमेण्ट्स, आकुर्ली क्रोस रोड़ नं.1, रेलवे फाटक के पास, कांदिवली(पूर्व) मुम्बई-400001*

'गजेन्द्र संदेश' पत्रिका के अगस्त–सितम्बर 2001 के विशेषांक रूप में प्रकाशित 'समग्र जैन चातुर्मास सूची' में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर समुदाय के 12101 साधु–साध्वियों के चातुर्मास स्थलों का उल्लेख किया गया है।

समाज-दर्शन

पीपाड़ शहर में स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा पंचदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर दिनांक 13.10.2001 से 17.10.2001 तक पीपाड़ शहर में आयोजित किया गया। इस शिविर में विभिन्न क्षेत्रों के कुल 86 स्वाध्यायियों ने भाग लेकर अनुभवी प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण प्राप्त किया।

ज्ञान के साथ स्वाध्यायियों का आचार पक्ष भी सुदृढ़ हो इस दृष्टि से मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने प्रभावी प्रेरणा की जिसके फलस्वरूप चतुर्दशी के दिन सभी 86 स्वाध्यायियों ने सामूहिक दयाव्रत का पालन किया। बारह युवा स्वाध्यायियों ने भिक्षु दया का भी पालन किया।

स्वाध्यायियों को उनकी योग्यतानुसार 4 कक्षाओं में विभाजित कर ज्ञानार्जन करवाया गया। प्रशिक्षकों में श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर,श्री सम्पतराज जी डोसी, जोधपुर, श्री नवरतनमल जी डोसी, जाधेपुर, श्री रिखबचन्द जी मेहता, जोधपुर, श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर, श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर, श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर, श्रीमती रतनबाई जी चोरड़िया, जोधपुर की महत्त्वपूर्ण सेवाएं प्राप्त हुई। व्यवस्था संबंधी कार्यों में श्री प्रकाश जी सालेचा एवं विरेन्द्र जी जैन, जोधपुर का उल्लेखनीय योगदान प्राप्त हुआ। शिविर कक्षाएं प्रातः 5.30 से प्रारम्भ होकर 9.30 बजे तक चलती थी।

शिविरार्थियों के अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन करने हेतु परीक्षा भी आयोजित की गई जिसमें सभी स्वाध्यायियों ने अच्छे अंक प्राप्त किए। प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले को विशेष पुरस्कार पीपाड़ संघ से प्रदान किए गए। शिविर का समापन समारोह 17.10.2001 को दोपहर 2.00 बजे ओसवाल लोढ़े साजन विकास केन्द्र (कोट) में रखा गया। मंगलाचरण श्री हस्तीमल जी गोलेछा, ब्यावर ने किया। स्वाध्यायियों में से श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर एवं पोरवाल शाखा के संयोजक श्री पदमचन्द जी जैन, बजरिया ने एवं प्रशिक्षकों में से श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर एवं श्रीमती मोहनकौर जी जैन,जोधपुर ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा, जोधपुर ने भी अपने वक्तृत्व के माध्यम से युवा स्वाध्यायियों को सामायिक एवं स्वाध्याय से सक्रिय रूप से जुडने के लिए प्रभावी प्रेरणा की। युवा स्वाध्यायी तैयार करने हेतु एक युवा स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की घोषणा की। स्वाध्याय संघ की संयोजिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने भी सभी उपस्थित महानुभावों को स्वाध्याय संघ से जुडने की प्रेरणा की एवं आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा रचित उत्तराध्ययन सूत्र पद्यानुवाद पुस्तक की महत्ता बताते हुए उत्तराध्ययन को गीता की तरह घर–घर में स्वाध्याय किये जाने पर जोर दिया। इसी चिन्तन को मूर्त रूप प्रदान करने के लिये सभी स्वाध्यायियों को उत्तराध्ययन

सूत्र पद्यानुवाद उपलब्ध कराया गया। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा कुछ पद्यों की वाचना सामूहिक रूप से स्वाध्यायियों को प्रदान की गई।

सभी शिविरार्थियो को प्रोत्साहन पुरस्कार श्रीमान दलीचंद जी सुरेशचन्द जी कवाड़, चेन्नई (पीपाडवाले) की ओर से (एक बैग रूप में) प्रदान किया गया। एक छोटा हैण्डबैग श्री रमेश चन्द जी बाघमार ,पीपाड वालों की तरफ से भी प्रदान किया गया। सभी स्वाध्यायियों को आने व जाने का मार्ग व्यय, भोजन एवं आवास आदि की उत्तम व्यवस्था श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़ द्वारा की गई।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर के सचिव श्री रिखबचन्द जी मेहता ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सुशीला बोहरा, संयोजक **रिखबचन्द मेहता,**सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

::विशेष सूचना::

1. बोर्ड द्वारा दिनांक 6 जनवरी 2002 रविवार को दोपहर 12 से 3 बजे तक कक्षा पहली से नवमीं तक की ही परीक्षा आयोजित की जाएगी। दसवीं कक्षा की परीक्षा इस बार न होकर जुलाई 2002 में आयोजित होने की संभावना है।

2. परीक्षा के आवेदन पत्रों के साथ अब फोटो लगाना आवश्यक नहीं है।

3. आवेदन पत्र 30 नवम्बर 2001 तक प्रधान कार्यालय में पूर्ण नाम व पते सहित भरकर जमा कराने अनिवार्य हैं। विलम्ब से प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों को स्वीकार नहीं किया जायेगा व ऐसे आवेदकों को स्वीकृत या अस्वीकृति पत्र भी नहीं भेजा जायेगा। जिन आवेदकों को प्रवेश पत्र प्राप्त हो जायें, वे ही परीक्षा में बैठ सकेंगे। अतः आवेदन पत्र 30 नवम्बर तक बोर्ड कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर भिजवाने का लक्ष्य रखें।

विमला मेहता, संयोजक **नवरतन डागा, सचिव**

मुणोत फाउण्डेशन की ओर से पीपाड़ में विशाल चिकित्सा शिविर

राजस्थान के पीपाड़ शहर में मुणोत फाउण्डेशन, मुम्बई द्वारा 1 से 11 नवम्बर 2001 तक निःशुल्क नेत्र एवं शल्य चिकित्सा शिविर का विशाल आयोजन किया गया है। चिकित्सा शिविर में लगभग 40 चिकित्सक विभिन्न रोगों की जांच एवं उपचार में संलग्न हैं। यहां लोगों के लिए आवास, भोजनादि की भी व्यवस्था निःशुल्क है। नेत्र चिकित्सा के अतिरिक्त हर्निया, गुर्दे की पथरी,,मस्सा, अपेन्डिसाइटस, भगन्दर, पेट के घाव, पित्त की थैली, टी.बी. जैसी बीमारियों का उपचार भी किया जा रहा है। नाक, कान एवं गले के रोगों का भी निदान एवं उपचार किया जा रहा है। गांव–गांव एवं ढाणी–ढाणी से लगभग 10 हजार लोग चिकित्सा हेतु पीपाड़ पहुंचे हैं। यह इस क्षेत्र का अपने आप में विशालतम चिकित्सा शिविर है। पीपाड़ के नागरिक सेवा कार्य में समर्पित भाव से संलग्न हैं। लगभग 350 रोगी नेत्र चिकित्सा के आपरेशन हेतु एवं 350 अन्य आपरेशन हेतु चुने गए

हैं। शिविर को राज्य सरकार की भ्रमणशील चिकित्सा इकाई का सहयोग प्राप्त है।

भ. महावीर के जीवन पर सचित्र टेलीफिल्म

लुधियाना–'भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक प्रचार समिति' लुधियाना ने प्रभु महावीर के जीवन की घटनाओं पर आधारित सचित्र टेलीफिल्म 'मंगलमूर्ति महावीर' का निर्माण कराया है। इसकी अवधि 2 घण्टे 30 मिनट है। चित्रांकन में प्रभु महावीर के च्यवन, जन्म, बचपन, यौवन, दीक्षा, तपस्या, उपसर्ग, प्रतिबोध, केवलज्ञान, देशना, गौतम-महावीर संवाद तथा निर्वाण सम्बन्धी घटनाओं को दर्शाया गया है। इसकी पटकथा, संवाद और घटनाएँ मुख्यतः 'कल्पसूत्र' एवं 'महावीर चित्र सम्पुट' पर आधारित हैं। इसका प्रीमियर शो लुधियाना में 26 अगस्त 2001 को लगभग एक हजार दर्शकों ने देखा। इस विषय पर प्रचार समिति को सहयोग देते हुए फिल्म का प्रदर्शन अपने–अपने श्रीसंघ शिक्षण संस्थाओं में कराने का निर्णय लेकर सम्भावित तिथि सूचित करने का कष्ट करें, ताकि सारा कार्यक्रम सुनिश्चित किया जा सके।

ई.टी.सी.चैनल पर 'महावीर वाणी'

विश्व अहिंसा मिशन, करनाल की ओर से ई.टी.सी. चैनल पर प्रातः 7 से 7:30 बजे तक 'महावीर वाणी' कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है। इसमें भगवान महावीर के सार्वभौम सिद्धान्त पर आधारित आध्यात्मिक प्रवचन का प्रसारण होता है। इस समय अम्बाला शहर में विराजमान उपाध्याय श्री मनोहरमुनि जी के प्रवचन का प्रसारण किया जा रहा है।

सुझाव प्रतियोगिता परिणाम

अ.भा. अहिंसा प्रचार समिति भवानीमण्डी द्वारा "कैसे रुके अन्न, पानी और ईंधन का अपव्यय" पर आयोजित राष्ट्रीय सुझाव प्रतियोगिता विषय में 6 राज्यों के 357 प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिसमें प्रथम स्थान श्रीमती रश्मि जी मेहता, इन्दौर ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर श्री गजेन्द्र जी सिंघवी, सोजत सिटी एवं तृतीय स्थान पर श्री प्रेमचन्द जी जैन, उज्जैन रहे। श्रीमती विमला जी लोढ़ा, मुम्बई, श्री दिलीप जी भाटिया, रावतभाटा, सुश्री मधु जी गौड, अलीगढ़, श्रीमती मनीता जी गोठी, जोधपुर, श्रीमती विजया जी संकलेचा, लासलगांव, श्री मनीष जी मेहता, प्रतापगढ़, श्रीमती सरोज जी डागा, जोधपुर एवं श्री अमृतलाल जी बैरवा, देवपुरा ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किए। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार के रूप में क्रमशः 501, 251, 101 एवं 21 रूपये की राशि भेजी जा रही है।– **नितेश नागोता 'जैन', भवानीमण्डी**

तमिलनाडु में प्लास्टिक वस्तुओं पर प्रतिबन्ध

तमिलनाडु में ऊटी एवं कांचीपुरम के बाद अब चेन्नई महानगर निगम ने भी एक बार उपयोग में लाई गई प्लास्टिक से बनी वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है। यह प्रतिबंध 1 अक्टूबर से लागू हुआ है। पर्यावरण को प्रदूषित

होने से बचाने की दिशा में महानगर निगम ने इस निर्देश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने का भी फैसला किया है तथा इसी प्रस्ताव में इसके लिए व्यापक मानदंडों को तैयार कर लिया गया है। इसके तहत इन वस्तुओं का उत्पादन करने वाले व्यापारी से 5 हजार रूपए, थोक व्यापारी से 2500 रुपये, फुटकर व्यापारी से 750 रुपये वसूल किए जाने का प्रावधान है। उपभोक्ताओं से इन चीजों का उपयोग किए जाने के लिए 100 रुपए तक जुर्माना वसूल करने पर सहमति जाहिर की गई है।

इण्टरनेशनल जैन एण्ड वैश्य आर्गेनाइजेशन

जैन–वैश्य समाज के उत्थान के लिए गठित यह संगठन निम्नांकित केन्द्रों के माध्यम से समाज को सेवाएँ देने हेतु संकल्पित है–

1. विवाह सूचना केन्द्र 2. रोजगार सेवा केन्द्र 3. सांस्कृतिक केन्द्र 4. राजनैतिक चेतना केन्द्र 5. चिकित्सा सेवा केन्द्र 6. अल्प आय वर्ग सेवा केन्द्र 7. शिक्षा प्रसार केन्द्र 8. डायरेक्ट्रीज सूचना केन्द्र 9. खेलकूद एवं प्रतिभा विकास केन्द्र 10. समस्त समस्या निवारण केन्द्र 11. महिला उत्थान केन्द्र 12. व्यापार प्रकोष्ठ 13. जीवदया प्रकोष्ठ 14. युवा चेतना केन्द्र।

इस संगठन का सदस्य बनने एवं सेवा लेने/देने हेतु इस पते पर सम्पर्क किया जा सकता है– **41 ए, कुर्की मेन्शन, मिशन कम्पाउण्ड, निकट अजमेर पुलिया, अजमेर रोड़, जयपुर (राज.) दूरभाष– 0141– 432034, 98290–77696**

–पदमचन्द जैन, अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव

अजरामर जी महाराज के २५०वें जन्म-दिवस पर कार्यक्रम

भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक वर्ष के समापन एवं लींबड़ी अजरामर सम्प्रदाय के शासनोद्धारक आचार्य श्री अजरामर जी स्वामी के 250वें जन्म–दिवस के उपलक्ष्य में 2600 एकान्तर उपवासपूर्वक वर्षीतप का आराधन किया जाएगा। 2 करोड़ साठ लाख सामायिक (वर्षभर सामूहिक आराधन), 'नमो अरिहंताणं' पद की छब्बीस अरब की जप साधना आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे।**–छबीलदास टी.शेठ, अध्यक्ष, श्री लींबड़ी अजरामर सम्प्रदाय**

प्राकृत एवं अपभ्रंश के छात्रों हेतु सूचनाएँ

जयपुर– इण्टरनेशनल जैन एण्ड वैश आर्गेनाइजेशन, 41 ए, कुर्की मेन्शन, मिशन कम्पाउण्ड, अजमेर पुलिया, अजमेर रोड़, जयपुर प्राकृत एवं अपभ्रंश के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए निम्नांकित योजनाएँ प्रस्तावित करता है–

1. प्राकृत या अपभ्रंश में सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/बी.ए./ए.ए. का प्रमाण पत्र प्राप्त प्रत्याशी सर्विस के लिए अपना आवेदन पत्र उक्त संस्था को भेज सकता है।

2. प्राकृत या अपभ्रंश का अध्ययन नियमित या पत्राचार से करने वाले छात्रों में से प्रथम 30 को उत्तीर्ण होने पर 1000/– रुपये की छात्रवृत्ति दी जायेगी तथा

500 रुपये तक का अध्ययन शुल्क लौटा दिया जायेगा।

3. प्राकृत में एम.ए. या आचार्य का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के अभिलाषी प्रथम 10 विद्यार्थियों को उत्तीर्ण होने पर 2500/– रुपये प्रतिवर्ष के हिसाब से छात्रवृत्ति देय होगी तथा 1000 रुपये तक का अध्ययन शुल्क लौटा दिया जाएगा। छात्रवृत्ति का नियम सत्र 2001–2002 से लागू होगा।

4. मार्गदर्शन हेतु निदेशक, प्राकृत भारती अकादमी, 13–ए, मेन मालवीय नगर,जयपुर–17 या संयोजक अपभ्रंश साहित्य अकादमी दिगम्बर जैन नसियां भट्टारक जी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर–4 से सम्पर्क किया जा सकता है।

–पदमचन्द जैन, अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सन् 1839 में भगवान महावीर की स्मृति में सिक्का जारी किया था

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के तत्कालीन गवर्नर लार्ड आकलेण्ड (1839–1842) ने सन् 1839 में भगवान महावीर की स्मृति में आधे आने का सिक्का जारी किया था। यह सिक्का श्री पारसमल जी जैन भद्रावती के पास उपलब्ध हुआ है। इसका छाया चित्र श्री एस.के.गणेश भद्रावती के द्वारा लिया है। इसको भेजने में भद्रावती कॉलेज के इतिहास के प्रोफेसर जीवन्धर कुमार होटापेटी का योगदान रहा है। सिक्के का वजन 12 ग्राम एवं डायामीटर 2 सेंटिमीटर और मोटाई 1 मिलीमीटर है। सिक्के के एक ओर भगवान महावीर का चित्र है तथा दूसरी ओर 'ऊँ', चाँद–तारा, त्रिशूल एवं सूर्य अंकित हैं। भगवान महावीर के 2600वें जन्म-कल्याणक के उपलक्ष्य में अनेकान्तवाद एवं सर्वधर्म एकता को दर्शाने वाले इस प्रकार के सिक्के भारत सरकार से निकालने का आग्रह करना चाहिए।**–एन.सुगालचन्द जैन, प्रबन्धन्यासी, भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई**

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर– अणुव्रत समिति, जोधपुर के तत्त्वावधान में 2 अक्टूबर 2001 को प्रातः अमर नगर परिसर में 'अहिंसा दिवस' समारोह का आयोजन विदुषी महासती श्री कमल श्री जी एवं अन्य सतियों के सान्निध्य में किया गया। सभा की अध्यक्षता श्री दौलत सिंह भंडारी, प्रादेशिक अध्यक्ष, अणुव्रत समिति ने की। सभा के मुख्य अतिथि श्री भोपाल चंद जी लोढ़ा, अध्यक्ष अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली थे।

सभा में कई विद्वान वक्ताओं ने विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. धर्मचन्द जैन, सह आचार्य, संस्कृत विभाग, जे.एन.वी. विश्वविद्यालय एवं प्रधान सम्पादक, जिनवाणी पत्रिका ने अहिंसा और अणुव्रत की प्रासंगिकता पर जोर दिया और

दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र और आचारांग सूत्र का उल्लेख करते हुए भगवान महावीर द्वारा दिये गये अहिंसा के संदेश का विवेचन किया तथा आज के संदर्भ में उसकी आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. सम्पत राज जैन, सह आचार्य, विधि संकाय, जे.एन.वी. विश्वविद्यालय ने भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बढती हिंसाप्रवृत्ति को रोकने और विश्व शांति के लिये अहिंसा की आवश्यकता को समझाया। अन्य वक्ताओं, मुख्यतया श्री दौलतमल भंडारी, डॉ. श्रीमती कृष्णा मोहनोत, श्रीमती आशा नीलू टाक एवं श्री कानराज सालेचा ने भी अपने विचार प्रकट किये। साध्वी श्री कमल श्री जी एवं श्री जिनबाला जी ने अपने मंगल प्रवचनों में अहिंसा और अपरिग्रह को अपने जीवन में अपनाने का सभा में उपस्थित भाइयों और बहनों से अनुरोध किया। सभा का सुन्दर रूप से संचालन डॉ. नन्दलाल कल्ला ने लिया।

–प्रकाशलाल जैन, अध्यक्ष अणुव्रत समिति, जोधपुर

जोधपुर– यहां जीवन विज्ञान शिक्षा 25 विद्यालयों में प्रारम्भ की जा रही है। इसके लिए अणुव्रत समिति ने विभिन्न विद्यालयों में प्रशिक्षण प्रारम्भ किया है।– **महावीर प्रसाद अजमेरा**

अहमदनगर– श्री तिलोक रत्न स्था. जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, अहमदनगर (महाराष्ट्र) द्वारा संचालित उपाधि एवं सिद्धान्त प्रवेशिका तथा सामायिक एवं प्रतिक्रमण की परीक्षाएँ 20 नवम्बर 2001 से प्रारम्भ होंगी। उक्त परीक्षाओं के लिए आवेदन पत्र शीघ्र प्रेषित किये जाएँ।–**पं. चन्द्रभूषण मणि त्रिपाठी**

वीरनगर, दिल्ली– आचार्य श्री शिवमुनि जी के सान्निध्य में 20 से 23 सितम्बर 2001 तक एक ध्यान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 80 साधकों ने भाग लिया। आचार्य श्री के सान्निध्य में प्रत्येक शनिवार को प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक सामूहिक ध्यान कराया जाता है, जिसमें शताधिक साधक भाग ले रहे हैं।

हरिद्वार– श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर तीर्थ पर नवनिर्मित धर्मशाला 'श्रीमती सोहनकंवर सायरचन्द नाहर भवन' का उद्घाटन 17 अक्टूबर 2001 को किया गया।

पांढरकवड़ा– भगवान् महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में भारतीय जैन संघटना, पांढरकवड़ा की ओर से 'मानवीय आहार : शाकाहार' विषय पर छात्र–छात्राओं में निबन्ध स्पर्धा रखी गई।– श्री सुनील पितलीया

मेड़तासिटी– श्री वर्द्धमान जैन ज्ञानपीठ का केन्द्रीय शिविर 2 से 7 अक्टूबर 2001 तक महासती श्री उमरावकंवर जी 'अर्चना' आदि ठाणा 10 के सान्निध्य में नोखा चाँदावता में आयोजित किया गया। ज्ञानपीठ के संयोजक श्री जतनराज जी मेहता के निर्देशन में लगे इस शिविर में प्रो. श्री सुन्दरलाल जी सालेचा, श्रीमती उर्मिला जी सालेचा, श्रीमती शोभना जी चोरड़िया, श्रीमती कान्ता जी चोरड़िया आदि शिक्षकों ने अध्यापन किया।– नवल डूंगरवाल 'नवीन'

सिकन्द्राबाद– बिरला आर्कियोलॉजिकल एण्ड कल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट सालारजंग म्यूजियम तथा उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद द्वारा सन् 1998 में

आयोजित संगोष्ठी के शोध निबन्धों का प्रकाशन 'जैनिज्म' नामक ग्रन्थ में हुआ है। ग्रन्थ का विमोचन श्री सुरेन्द्र बाबू लुणिया ने किया। सम्पादन डॉ. (श्रीमती) हरिप्रिया रंगराजन एवं डॉ. जी. कमलाकर ने किया है। कार्यक्रम श्रमणसंघीय महामन्त्री श्री सौभाग्यमुनि जी कुमुद के सान्निध्य में हुआ।

बधाई/चुनाव

जोधपुर– श्री मनीष जी बोथरा सुपुत्र श्री प्रकाशमल जी बोथरा ने ICWA IIIrd Stageकी परीक्षा जून–2001 में 400 में से 273 अंक प्राप्त कर जोधपुर शहर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आपने C.A. Final IInd Group की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है। व्यावहारिक शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक क्षेत्र में भी आप अग्रसर है। श्री मनीष जी समय–समय पर विभिन्न धार्मिक परीक्षाओं में भाग लेकर अपना ज्ञानार्जन करते रहते हैं। आप एक वरिष्ठ स्वाध्यायी है एवं पिछले 7 वर्षों से लगातार पर्युषण में बाहर गांव पधारकर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आप श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर के भी सक्रिय सदस्य है।

उदयपुर–स्वाध्यायी एवं साधक श्री चाँदमल जी कर्णावट की सुपुत्री श्रीमती चन्दनबाला मारू को सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से संस्कृत में पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। श्रीमती मारू ने डॉ. बी.एल. जैन के निर्देशन में 'हम्मीर महाकाव्य (संस्कृत) का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकार्य किया। राजस्थान विश्वविद्यालय से बी.ए. की स्वर्ण पदक विजेता तथा एम.फिल में उदयपुर विश्वविद्यालय की स्वर्णपदक विजेता श्रीमती चन्दनबाला सम्प्रति उदयपुर के मीरा कन्या महाविद्यालय में संस्कृत की व्याख्याता पद पर सेवारत है। वे संत सती के शिक्षण में भी रुचि लेती हैं।

नेपाल जैन परिषद् की नई कार्यकारिणी

नेपाल जैन परिषद्, काठमाण्डु की विक्रम संवत् 2058–2060 के लिए नवगठित कार्यकारिणी में श्री हनुमानमल जी जैन नाहटा को अध्यक्ष एवं श्री सुशील जी नाहटा को महासचिव मनोनीत किया गया है। श्री अनिल जी टाटिया एवं श्री प्रकाशभाई मेहता को उपाध्यक्ष, श्री के.एन.मोदी एवं श्री किशोर जी दुग्गड़ को सचिव, श्री अनिल जी जैन को कोषाध्यक्ष एवं श्री नवरत्न जी चिण्डालिया को सह कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया है।

आगामी प्रमुख तिथियां

पाक्षिक पर्व	: 15 नवम्बर 2001, 30 नवम्बर 2001
भ. महावीर 2528वाँ निर्वाण दिवस	: 15 नवम्बर 2001
आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 39 वाँ दीक्षा दिवस	: कार्तिक शुक्ला 6, बुधवार 21 नवम्बर 2001

श्रद्धांजलि

तपस्वी श्री वकीलचन्द जी म.सा. का महाप्रयाण

जीन्द (हरियाणा)– संघशास्ता स्व. श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के सुशिष्य एवं संघनायक शास्त्री श्री पदमचन्द जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती श्री वकीलमुनि जी म.सा. का 13 सितम्बर 2001 को दोपहर में 12.30 बजे देवलोकगमन हो गया। आपने 55 वर्ष की अवस्था में दीक्षा अंगीकार कर 13 वर्ष तक संयम पर्याय का पालन किया। 43 वर्ष की वय में आपने आजवीन ब्रह्मचर्य व्रत-पालन का नियम ले लिया था। आपने अपने सहयोग एवं प्रतिबोध से 15 दीक्षाएं सम्पन्न करायी थी। आपके प्रदत्त संस्कारों से प्रेरित होकर आपके दो पुत्र एवं एक पुत्री भी दीक्षित होकर क्रमशः श्री नरेशमुनि जी म.सा., श्री सुधीरमुनि जी म.सा. एवं महासती श्री हर्षिता जी के नाम से जिनशासन की सेवा कर रहे हैं।

मुनि श्री अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे तथा बच्चों एवं युवकों को शिविरों के माध्यम से धार्मिक शिक्षण दिया करते थे। आपने पचोले, अठाई आदि अनेक तपस्याएँ की । प्रत्येक पक्खी पर आप तेले की तपस्या करते थे। आपने 12 सितम्बर की शाम 7 बजे श्री नरेशमुनि जी म.सा. की उपस्थिति में सागारी संथारा ग्रहण किया एवं फिर चौविहार त्याग के साथ पूर्ण संथारा ले लिया। पार्थिव देह के अन्तिम संस्कार के समय जीन्द में लगभग 150 स्थानों से हजारों श्रद्धालु एकत्रित हुए । आपको अनेक स्थानों पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।– **डा. सतीश जैन**

छोटी कसरावद (म.प्र.)– इन्दौर के पीपली बाजार स्थित जैन स्थानक भवन में पूज्य प्रवर्त्तक श्री उमेशमुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पूज्य चांदकंवर जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री ताराकंवर जी म.सा. का 74 वर्ष की आयु में समाधिभावपूर्वक देहावसान हो गया। सभी श्री संघों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी है।

– **लक्ष्मीचन्द जैन**

गंगापुरसिटी के परिवारजनों की दुर्घटना में मृत्यु

19 जुलाई 2001 को राजस्थान के गंगापुरसिटी के धर्मनिष्ठ सुश्रावक उम्मेदीलाल जी जैन का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप नियमित सामायिक–सवाध्याय करते थे। आपके निधन के कतिपय दिन पश्चात् ही इस परिवार के तीन सदस्यों की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। श्री उम्मेदीलाल जी के द्वितीय सुपुत्र राजेश जी (35वर्ष) एवं उनकी धर्मपत्नी उर्मिला (30 वर्ष) तथा उम्मेदीलाल जी के भतीजे श्री मनोहरलाल जी का निधन हो गया। बड़े पुत्र महेन्द्र जी की रीढ़ की हड्डी टूट गई, उनकी धर्मपत्नी के सिर में चोट आने से उन्नीस टांके आये हैं। इनके अतिरिक्त अन्य दो तीन सदस्य भी चोटग्रस्त हुए हैं। धर्मनिष्ठ किन्तु संकटग्रस्त परिवार को अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने गंगापुर पहुंच कर ढाढस बंधाया है।– **रामदयाल जैन, सेवानिवृत्त तहसीलदार**

जयपुर– सुश्रावक श्री ज्ञानचन्द जी चोरड़िया का 29 सितम्बर 2001 को स्वर्गवास हो गया। आप दृढधर्मी, प्रियधर्मी एवं तत्त्वज्ञ श्रावक थे। आप नियमित रूप से सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व के धनी होने के साथ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि गुणों से ओतप्रोत थे। आप सन्त–सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपके सुपुत्र श्री इन्दरबाबू जी चोरड़िया साधु–साध्वियों को दोषमुक्त औषधियाँ प्रदान करने की अनुपम सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं।

जयपुर– धर्मप्रिय श्रावक श्री कल्याणसिंह जी कोठारी का 84 वर्ष की उम्र में निधन

हो गया। आप दृढधर्मी एवं समर्पित श्रद्धानिष्ठ श्रावक थे। आप जीवन भर धार्मिक प्रवृत्तियों के प्रति सन्नद्ध रहे। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त–सती मण्डल के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के विजयनगर चातुर्मास में आपने अच्छा धर्मलाभ लिया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगीयुक्त था। दीपावली, होली एवं पर्युषण पर्व पर आप जयपुर के लाल भवन में तेले की तपस्या करते थे। आपने जमीकन्द एवं रात्रिभोजन का त्याग कर रखा था। आप दोनों समय सामायिक करते थे।

पाचोरा– धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती पानकंवरबाई धर्मपत्नी श्री इन्दरचन्द

सरूपचन्द जी ललवाणी का सम्वत्सरी पर्व के दिन जसलोक अस्पताल में स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म भी सम्वत्सरी महापर्व के दिन ही हुआ था। आप स्वयं धार्मिक प्रवृत्तियों में संलग्न रहने के साथ परिवारजनों को भी प्रेरणा करती थी। आपकी प्रेरणा से पुत्र श्री प्रमोद जी ललवाणी, पौत्र ऋतेश जी सहित परिवार के सभी सदस्य धर्माराधन एवं सन्त–सती सेवा में अग्रसर हैं। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के पाचोरा पदार्पण पर श्रीमती पानकंवरबाई सहित परिवार के सभी सदस्यों ने धर्मलाभ लिया था।

बाराँ– श्री शोभागमल जी मारु का 92 वर्ष की उम्र में संथारा सहित समाधि भावों

में 28 सितम्बर 2001 को स्वर्गवास हो गया। आपको कई थोकड़ों का ज्ञान था तथा व्रत–नियम एवं प्रत्याख्यानों के साथ जीवन जीते थे। आप श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बाराँ के अध्यक्ष भी रहे। श्रावक संघ, बाराँ ने 30 सितम्बर को शोकसभा का आयोजन कर स्वर्गस्थ आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

नसीराबाद– धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री जवरीलाल जी मुणोत सुपुत्र स्व. श्री शांतिलाल

जी मुणोत का 58 वर्ष की आयु में 8 अक्टूबर 2001 को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। आप सरलस्वभावी एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणी थे। आप 11 वर्ष तक स्थानीय संघ के गौरवशाली मन्त्री रहे। आप सभी सम्प्रदायों के साधु–साध्वियों की सेवा में तत्पर रहते थे। **–ताराचन्द जैन**

पांढरकवड़ा– सुश्रावक श्री धनराज जी मोतीलाल जी चौपड़ा का 4 अक्टूबर 2001 को स्वर्गवास हो गया। आप 85 वर्ष के थे। धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धावान श्रावक थे। नियमित रूप से प्रातः एवं सायंकाल स्थानक में जाकर सामायिक करते थे। आप अपने पीछे पुत्र–पौत्रों सहित भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

–सुनील पितलीया

विरुगमवाक्कम (चेन्नई)– मूलतः कुशालपुरा निवासी धर्मपरायण श्रीमती चम्पाबाई पगारिया धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलाल जी पगारिया का 14 अक्टूबर 2001 को असामयिक निधन हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थी। अनेक व्रत–प्रत्याख्यानों से आपने अपने जीवन को सजाया–संवारा। प्रतिदिन सामायिक आदि धार्मिक क्रियाएं करना आपके जीवन का अभिन्न अंग था। संत–सतियों के दर्शनार्थ जाना एवं उनकी सेवा करना आपके विशिष्ट गुण थे। आप मृदुभाषी, सरलमना एवं अत्यन्त व्यवहार कुशल थी। अपने मधुर व्यवहार के कारण आप लोकप्रिय थी। आप अपने पीछे पुत्र-पुत्रियों, पौत्र-पौत्रियों, दौहित्र-दौहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

अजमेर– श्री धर्मपाल जी मेहता का 27 सितम्बर 2001 को अजमेर में निधन हो गया। आपका जीवन धर्म के प्रति समर्पित एवं आडम्बर रहित था। आपने सुबोध स्कूल, जयपुर में सन् 1938 में अध्यापन किया था। तद्नन्तर मुनिराजों के सान्निध्य में लेखन कार्य किया। संयुक्त चातुर्मास जोधपुर में आपने सन्तवर्यों के व्याख्यान लिखने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के अजमेर चातुर्मास में भी आपने सक्रिय रूप से अपनी सेवाएँ दी। आप सरलस्वभावी, विद्वान एवं कवि थे।– **जी. सी. मेहता, जयपुर**

खेरली– श्रीमान बुद्धालाल जी जैन का दिनांक 22.10.2001 को खेरली में संथारा पूर्वक देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक स्वाध्याय करते थे। पिछले 30 वर्षों से आप चौविहार किया करते थे। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर प.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. पर आपकी अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप अपने पीछे वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री धर्मचन्द जी जैन सहित पांच पुत्रों एवं दो पुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़कर गये है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते है।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रूपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

6967 श्री प्रकाशचन्द जी जैन (पालड़ेचा), नयापुरा, कोटा (राज.)

300/- रूपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

(अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की योजना के अन्तर्गत)

6460 श्री पदमचन्द जी जैन, देई, टोंक (राज.)
6461 श्री धर्मचन्द जी जैन, भोपालगढ़, जोधपुर (राज.)
6462 श्री प्रदीप कुमार जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
6463 श्री सौरभ जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6464 डॉ. सुरेन्द्र जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6465 श्री सूरज जी डागा, जोधपुर (राज.)
6466 श्री पदमचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6467 श्री गौतमचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6468 श्री पंकज कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6469 श्री कमलेश कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6470 श्री पंकज कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6471 श्री संजय कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6472 श्री नेमीचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6473 श्री धर्मचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6474 श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राज.)
6475 श्री रमेशचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6476 श्री मनोहरलाल जी जैन, गोलूवाला, हनुमानगढ़ (राज.)
6477 श्री धर्मचन्द जी जैन, चौरू, टोंक (राज.)
6478 श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6479 श्री प्रेमचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6480 श्री महेन्द्रकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6481 श्री पदमचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6482 श्री सुरेन्द्र प्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6483 श्री विनोद कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6484 श्री मड्डूलाल जी जैन, स्टेशन बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)
6485 श्री जीतमल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6486 श्री प्रकाशचन्द जी बड़ोला, विजयनगर, अजमेर (राज.)
6487 श्री टीकमचन्द जी नाहर, अजमेर (राज.)
6488 श्री धर्मचन्द जी कक्कड़, अजमेर (राज.)
6489 श्री केशरीमल जी गोटेवाला, अजमेर (राज.)
6490 श्री धर्मचन्द जी ढाबरियां, अजमेर (राज.)
6491 श्री प्रकाशमल जी लोढ़ा, अजमेर (राज.)
6492 श्री गुमानमल जी मेहता, अजमेर (राज.)
6493 श्री समरथमल जी खटोड़, अजमेर (राज.)

6494 श्री निर्मल जी गंगवाल, अजमेर (राज.)
6495 श्री भंवरलाल जी कोठारी, अजमेर (राज.)
6496 श्री अशोक जी जैन, अजमेर (राज.)
6497 डॉ. कविता जी मेहता, मुम्बई (महा)
6498 श्रीमती तारा जी ढाबरिया, अजमेर (राज.)
6499 श्री विवेक जी जैन, अग्रवाल फार्म, जयपुर (राज.)
6500 श्री मनोज जी कोठारी, अजमेर (राज.)
6501 श्री पदमचन्द जी जैन, अजमेर (राज.)
6502 श्री रूपकुमार जी रामचंदानी, अजमेर (राज.)
6503 श्री सुमित जी कटारिया, अजमेर (राज.)
6504 श्री डी.सी. जैन, अजमेर (राज.)
6505 श्री रोशन जी बम्ब, पाली (राज.)
6506 श्री सुरेशचन्द जी जैन, अजमेर (राज.)
6507 श्री जसवन्तसिंह जी जैन, अजमेर (राज.)
6508 श्री विमलचन्द जी खिंवसरा, अजमेर (राज.)
6509 श्री प्रकाशचन्द जी गेलड़ा, अजमेर (राज.)
6510 श्री भीकमचन्द जी पीपाड़ा, अजमेर (राज.)
6511 श्री गौतम जी कावड़िया, ब्यावर, अजमेर (राज.)
6512 श्री सतीश जी बाबेल, ब्यावर, अजमेर (राज.)
6513 श्री सुरेश जी झामड़, मदनगंज–किशनगढ़, अजमेर (राज.)
6514 श्री माणकचन्द जी सिंसोदिया, अजमेर (राज.)
6515 श्री महेन्द्र जी संकलेचा, अजमेर (राज.)
6516 श्री राजेन्द्र कुमार जी दर्डा, पहूर, यवतमाल (महा.)
6517 श्री धर्मचन्द जी बोरूदिया, पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6518 श्री शांतिलाल जी बोरूदिया पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6519 श्री बसन्तकुमार जी ओस्तवाल, पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6520 श्री रमेशचन्द जी कोटेचा, पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6521 डॉ. प्रसन्न कुमार जी बम्ब, पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6522 श्री प्रेमचन्द जी बोहरा, पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6523 श्री रमेशचन्द जी नाहर, उतरवाढोणा, यवतमाल (महा.)
6524 श्री देवीचन्द जी दर्डा, पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6525 श्री राजेन्द्र जी छाजेड़, बुलडाणा(महा.)
6526 श्री प्रेमचन्द जी दर्डा, पहूरदाभा, यवतमाल (महा.)
6527 डॉ. रविन्द्र जी कोटेचा, यवतमाल (महा.)
6528 श्री पंकज कुमार जी कोटेचा, पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6529 श्री माणकचन्द जी सिसोदिया, पहूर दाभा, यवतमाल (महा.)
6530 श्री केवलचन्द जी राठौड़, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
6531 श्री महेन्द्र जी कटारिया, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
6532 श्रीमती रीना जी गुप्ता, जयपुर (राज.)

6533 श्री दिनेशकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6534 श्री कपूरचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6535 श्री शैलेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6536 श्री सुरेन्द्रचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6537 श्री रामेश्वर जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6538 श्री अजय कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6539 श्री पदमचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6540 श्री प्रेमचन्द जी जैन मोदी, सवाईमाधोपुर (राज.)
6541 श्री पंकज कुमार जी जैन, कुश्तला, सवाईमाधोपुर (राज.)
6542 श्री राधेश्याम जी जैन, बाबई, बून्दी (राज.)
6543 श्री कोमल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6544 श्री हुकमचन्द जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6545 श्री हीरालाल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6546 डॉ. नरेन्द्रबाबू जी जैन, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राज.)
6547 श्री रमेशचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6548 श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6549 श्री कपूरचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6550 श्री देवेन्द्र कुमार जी जैन 'सूरवाल', सवाईमाधोपुर (राज.)
6551 श्री प्रवीण जी कुम्भट, जोधपुर (राज.)
6552 श्री महावीर जी बागरेचा, जोधपुर (राज.)
6553 श्री घेवरचन्द जी पालरेचा, अजती, बाड़मेर (राज.)
6554 श्री महावीरचन्द जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6555 श्री लक्ष्मीचन्द जी पारख, जोधपुर (राज.)
6556 श्री धर्मचन्द जी छाजेड़, बैंगलोर (कर्नाटक)
6557 श्री केवलचन्द जी गोलेच्छा, जोधपुर (राज.)
6558 डॉ. गजेन्द्र जी भण्डारी, इन्दौर (म.प्र.)
6559 श्री सुरेश जी खिंवसरा, जोधपुर (राज.)
6560 श्री अनिल कुमार जी हुण्डिया, जोधपुर (राज.)
6561 श्री नरेश कुमार जी जैन, खोह, अलवर (राज.)
6562 श्री शांतिलाल जी बाफना, जोधपुर (राज.)
6563 श्रीमती मनोरमा जी मुणोत, सावेड़ी, अहमदनगर (महा.)
6564 श्री सुरेन्द्र जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
6565 श्री अनिल कुमार जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6566 श्री राजीव कुमार जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6567 श्री राजकुमार जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6568 श्री राजेश जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6569 श्री देविन्दर जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6570 श्री दिनेश जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6571 श्री पुरुषोत्तमदास जी जैन, भिवानी (हरियाणा)

6572 श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6573 श्री बोधराज जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6574 श्री मदनलाल जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6575 श्री जवरीलाल जी जैन, कटक (उड़ीसा)
6576 श्री शशिभाइ जी डोसी, कटक (उड़ीसा)
6577 श्री माणकचन्द जी सुराणा, कटक (उड़ीसा)
6578 श्रीमान अध्यक्ष महोदय, पाचोड़ी, नागौर (राज.)
6579 श्री पवन कुमार जी धाड़ीवाल, कजगांव, जलगांव (महा.)
6580 श्री प्रकाशचन्द जी संचेती, कोलकाता (प.बंगाल)
6581 श्री सम्पतराज जी जैन, कोलकाता (प.बंगाल)
6582 श्री संतोषचन्द जी सिंघवी, RISHRA HOOGHLY (प. बंगाल)
6583 श्री मुन्नालाल जी जैन, कटक (उड़ीसा)
6584 श्री, कटक (उड़ीसा)
6585 श्री रतनचन्द जी सुराणा, कटक (उड़ीसा)
6586 श्री गौतमचन्द जी समदरिया, कटक (उड़ीसा)
6587 श्री प्रमोद जी सिंघवी, बैंगलोर (कर्नाटक)
6588 श्री थानमल जी विनाकिया, कटक (उड़ीसा)
6589 श्री नौरतनभाई जी डोसी, कटक (उड़ीसा)
6590 श्री किरण सी. सेठिया जी, कटक (उड़ीसा)
6591 श्री ओमप्रकाश जी सिसोदिया, चेन्नई (तमि.)
6592 श्रीमती किरण जी मेहता, बैंगलोर (कर्नाटक)
6593 श्रीमती सरोज जी भण्डारी, खिरकियां, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)
6594 श्री मानचन्द जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6595 श्री मांगीलाल जी लुणिया, जोधपुर (राज.)
6596 श्री अशोक कुमार जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6597 श्री नवरतन जी भंसाली, चेन्नई (तमि.)
6598 श्री राजमल जी पिछोलिया, गंगापुर, भीलवाड़ा (राज.)
6599 श्री आशीष कुमार जी जैन, छिपरौली, बागपत (उ.प्र.)
6600 श्री हस्तीमल जी भण्डारी, बागोट, नागौर (राज.)
6601 श्री चम्पालाल जी जैन, नागपुर (महा.)
6602 श्रीमती स्वाति जी अरोड़ा, रायपुर (छत्तीसगढ़)
6603 श्री राजेन्द्र जी कुम्भट, जयपुर (राज.)
6604 श्री हेमन्त जी हींगड़, जयपुर (राज.)
6605 श्री पंकज जी जैन, जयपुर (राज.)
6606 श्री ललित जी बाफना, जयपुर (राज.)
6607 श्री रविकुमार जी बंसल, जयपुर (राज.)
6608 श्री अरविन्द जी मेहता, जयपुर(राज.)
6609 श्री अरविन्द जी सिंघवी, जयपुर(राज.)
6610 श्री पीयूष जी मेहता, जयपुर (राज.)

6611 श्री प्रदीप कुमार जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
6612 श्री नवीन जी जैन, जोधपुर (राज.)
6613 श्री पुष्पराज जी मोहनोत, जोधपुर (राज.)
6614 श्री शांतिलाल जी बडेरा, सनावद, खरगौन (म.प्र.)
6615 श्री शैलेष कुमार जी पारेख, सनावद, खरगौन (म.प्र.)
6616 श्री लक्ष्मीनारायण जी कांकरिया, सनावद, खरगौन (म.प्र.)
6617 श्री राजेश कुमार जी डोसी, सनावद, खरगौन (म.प्र.)
6618 श्री शान्तिलाल जी जैन, सनावद, खरगौन (म.प्र.)
6619 श्री अनूपकुमार जी जैन, सनावद, खरगौन (म.प्र.)
6620 श्री मनोज जी जैन, ANCKAPALLI (आन्ध्रप्रदेश)
6621 श्री विशाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
6622 श्री पवन जी पारख, थाना (महा.)
6623 श्रीमती शैली जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6624 पूज्य जी स्वामी छगनलाल जी, रोड़ी, सिरसा (हरियाणा)
6625 श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, रोडी, सिरसा (हरियाणा)
6626 श्री सोभागमल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6627 श्री आनन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6628 श्री जीवराज जी डोसी, दूदू, जयपुर (राज.)
6629 श्री राजेन्द्र प्रसाद जी कोठारी, दूदू, जयपुर (राज.)
6630 श्री मानसिंह जी चींपड़, दूदू, जयपुर (राज.)
6631 श्री रमेश कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6632 श्री दिनेश कुमार जी नाहर, दूदू, जयपुर (राज.)
6633 श्री गौतमचन्द जी डोसी,, दूदू, जयपुर (राज.)
6634 श्री गौतम जी बरड़िया, दूदू, जयपुर (राज.)
6635 श्री अनिल कुमार जी मेहता, भामोलाव, अजमेर (राज.)
6636 श्री अशोक जी मेहता, किशनगढ़, अजमेर (राज.)
6637 श्री फूलचन्द जी झांझरी, दूदू, जयपुर (राज.)
6638 श्री पारसमल जी बाकलीवाल, दूदू, जयपुर (राज.)
6639 श्री किशन जी जांगिड़, दूदू, जयपुर (राज.)
6640 श्री जवाहरलाल जी नाहर, बडवानी (म.प्र.)
6641 श्री रेवत जी जैन, नई दिल्ली
6642 श्री आन्तपसिंह जी जैन, जयपुर (राज.)
6643 श्री नाथुलाल जी नाहर, दूदू, जयपुर (राज.)
6644 श्री शातिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, दूदू, जयपुर (राज.)
6645 श्री राजकुमार जी जैन, दूदू, जयपुर (राज.)
6646 श्री गौतमचन्द जी जैन, मुई, सवाईमाधोपुर (राज.)
6647 श्री सुरेशचन्द जी जैन, कुश्तला, सवाईमाधोपुर (राज.)
6648 श्री नेमीचन्द जी जैन, कुश्तला, सवाईमाधोपुर
6649 श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)

6650 श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, डेकवा, सवाईमाधोपुर (राज.)
6651 श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन, कुश्तला, सवाईमाधोपुर (राज.)
6652 श्री पारसचन्द जी जैन, कुश्तला, सवाईमाधोपुर (राज.)
6653 श्री विमल कुमार जी जैन, कुश्तला, सवाईमाधोपुर (राज.)
6654 श्री राधेश्याम जी जैन, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राज.)
6655 श्री महावीर जैन शिक्षण संस्थान, सवाईमाधोपुर (राज.)
6656 श्री प्रेमचन्द जी लोढ़ा, पाली (राज.)
6657 श्री महेश जी बुबकिया, पाली मारवाड़ (राज.)
6658 श्री लालचन्द जी गोगड़, पाली (राज.)
6659 श्री सुशील कुमार जी हींगड़, पाली (राज.)
6660 श्री दिनेशचन्द जी मेहता, पाली (राज.)
6661 श्री गौतमराज जी मेहता, पाली (राज.)
6662 श्री दिलीप कुमार जी लोढ़ा, पाली (राज.)
6663 श्री राकेश जी सिंघवी, पाली (राज.)
6664 श्री मनोज जी गांधी, पाली (राज.)
6665 श्री गणपतसिंह जी मुणोत, पाली (राज.)
6666 श्री मोतीलाल जी गांधी, पाली (राज.)
6667 श्री राकेश जी सूर्या, पाली (राज.)
6668 श्री, पाली मारवाड़ (राज.)
6669 श्री सोहनलाल जी धारीवाल, पाली (राज.)
6670 श्री राजकुमार ज़ी गोलेछा, पाली (राज.)
6671 श्री सुनिल कुमार जी मूथा, पाली (राज.)
6672 श्री आनन्द जी डोसी, पाली (राज.)
6673 श्री राजेन्द्र कुमार जी लूंकड़, इरोड़ (तमि.)
6674 श्री खेतमल जी पोरवाल, पाली (राज.)
6675 श्री निहालचन्द जी लोढ़ा, अजमेर (राज.)
6676 श्री पारसमल जी गेलड़ा, अजमेर (राज.)
6677 श्री अजय जी मेहता, पाली (राज.)
6678 श्री कल्पेश जी सांड, पाली (राज.)
6679 श्री अशोक जी भंसाली, पाली (राज.)
6680 श्री महावीर कुमार जी बोहरा, पाली (राज.)
6681 श्री पुनीत जी जीरावला, पाली (राज.)
6682 श्री महेन्द्र कुमार जी पारख, मुम्बई (महा.)
6683 श्री मुकेश कुमार जी तातेड़, मदनगंज–किशनगढ़, अजमेर (राज.)
6684 श्री रमेशचन्द जी लोढ़ा, फतेहपुर, जलगांव (महा.)
6685 श्री नितिन जी डाकलिया, पाली (राज.)
6686 श्री बंशीलाल जी भूरट, पाली (राज.)
6687 श्री मोहनलाल जी जैन, पाली (राज.)
6688 श्री शान्तिलाल जी सिंघवी, पाली (राज.)

6689 श्री शांतिलाल जी रेड़, पाली (राज.)
6690 श्री मनोज कुमार जी हींगड़, पाली (राज.)
6691 श्री रूपकुमार जी चौपड़ा, पाली (राज.)
6692 श्री सुनील कुमार जी संचेती, पाली (राज.)
6693 श्री वी. सुभराज जी सुराणा, पाली (राज.)
6694 श्री जितेन्द्र कुमार जी सिंघवी, पाली (राज.)
6695 श्री विनोद कुमार जी चोरड़िया, जलगांव (महा.)
6696 श्रीमती सुशीला बाई जी सांड, हरसूद, खण्डवा (म.प्र.)
6697 श्रीमती सुरेखाबाई जी चोरड़िया, मलकापुर, बुलढाणा (महा.)
6698 श्रीमती सुनीता जी बनवट, मलकापुर, बुलढाणा (महा.)
6699 श्रीमती राजकुमारी जी झाबड़, खामगांव, बुलढाणा (महा.)
6700 श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर (गुजरात)
6701 श्री महेन्द्र जी सुराणा, बीकानेर (राज.)
6702 श्री हरबंशलाल जी तातेड़, बीकानेर (राज.)
6703 श्रीमती नयनतारा छल्लाणी, बीकानेर (राज.)
6704 श्री जयचन्दलाल जी रामपुरिया, बीकानेर (राज.)
6705 श्री विजयचन्द जी डागा, बीकानेर (राज.)
6706 श्री जयचन्द लाल जी झाबक, बीकानेर (राज.)
6707 श्री नरेन्द्र जी सुराणा, बैंगलोर (कर्नाटक)
6708 श्री इन्द्र जी सुराणा, बीकानेर (राज.)
6709 श्री सोभागमल जी सुराणा, बीकानेर(राज.)
6710 श्रीमती लीला जी चोरड़िया, हावड़ा (प.बगाल)
6711 श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
6712 श्री नागराज जी सेठिया, जोधपुर (राज.)
6713 श्री महेश जी लुंकड़, चेन्नई (तमि.)
6714 श्री भूषण जी बाफना, श्रीरामपुर, अहमदनगर (महा.)
6715 श्री मोहनलाल जी बागपतिया, नदबई, भरतपुर (राज.)
6716 श्री पदमचन्द जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6717 श्री द्वारिकाप्रसाद जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6718 श्री मुकेशचन्द जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6719 श्री सचिन कुमार जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6720 श्री सुरेशचन्द जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6721 श्री सुमेरचन्द जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6722 श्री उमाशंकर जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6723 श्री सतीशचन्द जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6724 श्री मोहनकुमार जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6725 श्रीमती मधु जी जैन, आगरा (उ.प्र.)
6726 श्री राजू जी जैन, भरतपुर (राज.)
6727 श्री अशोक कुमार जी जैन, भरतपुर (राज.)

6728 श्री विरेन्द्र कुमार जी जैन, भरतपुर (राज.)
6729 श्री शिखरचन्द जी जैन, भरतपुर (राज.)
6730 श्री कैलाशचन्द जी जैन, भरतपुर (राज.)
6731 श्री महावीर भवन स्थानक, भरतपुर (राज.)
6732 श्रीमती निशा जी जैन, भरतपुर (राज.)
6733 श्री विमल कुमार जी जैन, भरतपुर (राज.)
6734 श्री सुभाषचन्द जी जैन, भरतपुर (राज.)
6735 श्री महावीर राज जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
6736 श्री हेमराज जी सोलंकी, कोयम्बटूर (तमि.)
6737 श्री शान्तिप्रकाश जी संचेती, जोधपुर (राज.)
6738 श्री मांगीलाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
6739 श्री महेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर (राज.)
6740 श्री भगवानचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
6741 श्री सुरेश जी संचेती, हालनान्या, धुलिया (महा.)
6742 श्री पवनलाल जी सेठिया, हालनान्था, धुलिया (महा.)
6743 श्री हितैष जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6744 श्री सौरभ जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6745 श्री गौतमराज जी भंसाली, पांचोला (हरियाणा)
6746 श्री पदमचन्द जी पटवा, जोधपुर (राज.)
6747 श्री रतनलाल जी जैन, ब्यावर, अजमेर (राज.)
6748 डॉ. अनिल जी मेहता, जयपुर (राज.)
6749 श्री के.एल. गोलेछा, जयपुर (राज.)
6750 श्री मीठालाल जी गोलेछा, जयपुर (राज.)
6751 श्री पारसमल जी लुणिया, हीरापुरा, जयपुर (राज.)
6752 श्री ममता राकेश, जयपुर (राज.)
6753 श्री सुरेन्द्र कुमार जी काला, जयपुर (राज.)
6754 श्री मदनलाल जी जैन, जयपुर (राज.)
6755 श्री धर्मचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6756 श्री सुशील कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6757 श्री ज्ञानचन्द जी कानुंगा, जयपुर (राज.)
6758 श्री पुष्पेन्द्र जी चौधरी, जयपुर (राज.)
6759 श्री नवीनचन्द जी गेमावत, जयपुर (राज.)
6760 श्री धर्मचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6761 श्री अजीत कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6762 श्री मनीष कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6763 श्री सुनील कुमार जी कोठारी, जयपुर (राज.)
6764 श्री फणीन्द्रनाथ जी सोमानी,, जयपुर (राज.)
6765 श्री हंसमुख जी पटेल, जयपुर (राज.)
6766 श्री संजय कुमार जी बोथरा, जयपुर (राज.)

6767 श्री रवि जी संचेती, जयपुर (राज.)
6768 श्री प्रेमचन्द जी झाड़फूड़, जयपुर (राज.)
6769 श्री नवीनलाल जी दुसाज, जयपुर (राज.)
6770 श्री आनन्द जी भण्डारी, जयपुर (राज.)
6771 श्री अजय जी जैन, जयपुर (राज.)
6772 श्री दीपक जी सुराणा, जयपुर (राज.)
6773 श्री अमित जी जैन, बारां (राज.)
6774 श्री पारसमल जी जैन, जयपुर (राज.)
6775 श्री धर्मेन्द्र जी अजमेरा, जयपुर (राज.)
6776 श्री विनोद जी कोठारी, जयपुर (राज.)
6777 श्री शरद जी जैन, जयपुर (राज.)
6778 श्री अनिल जी कोचर, जयपुर (राज.)
6779 श्री जयदीप जी मेहता, जयपुर (राज.)
6780 श्री पारसमल जी कुचेरिया, धुलिया (महा.)
6781 श्री सुरेश कुमार जी वेदमूथा, जलगांव (महा.)
6782 श्री शांतिलाल जी विनाक्या, जलगांव (महा.)
6783 श्री उत्तमचन्द जी चोरड़िया, जलगांव (महा.)
6784 श्री कमलेशजी रूणवाल, जलगांव (महा.)
6785 श्री देवेन्द्र कुमार जी चौपड़ा, जलगांव (महा.)
6786 श्री हर्षकुमार डी शाह जी, जलगांव (महा.)
6787 श्री मनीष जी टाटिया, जोधपुर (राज.)
6788 श्री रोहित जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6789 श्री संदीप जी भण्डारी, जयपुर (राज.)
6790 श्री पारसचन्द जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6791 श्री शांतिलाल जी कोचर, धुलिया (महा.)
6792 श्री लोकेश आर. जैन, न्यालोद, धुलिया (महा.)
6793 श्री सुनील कुमार जी सुराणा, धुलिया (महा.)
6794 श्री अभय कुमार जी कांकरिया, बदनावर (म.प्र.)
6795 श्री सुमीत कुमार जी रांका, सैंधवा (म.प्र.)
6796 श्री रिखबचन्द जी सुराणा, बेलारी (कर्नाटक)
6797 श्री मनोहरलाल जी जैन, वणी,(बुद्रुक) धुलिया (महा.)
6798 श्री राजेन्द्र कुमार जी सुराणा, मैसूर (कर्नाटक)
6799 श्री मदनलाल जी पारख, नासिक (महा.)
6800 श्री उत्तमचन्द जी खिंवसरा, माण्डल, जलगांव (महा.)
6801 श्री सतीश कुमार जी भटेवरा, कोथरूड, पूणे (महा.)
6802 श्री लोकेश कुमार जी छाजेड़, करई, खरगौन (म.प्र.)
6803 श्री महेन्द्र कुमार जी चौपड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
6804 श्री केतन कुमार जी,, मुम्बई(महा.)
6805 श्री सतीशकुमार जी कोठारी, अहमदनगर (महा.)

6806 सौ. विद्या बाफना, धुलिया (महा.)
6807 श्री जवरीलाल जी दुग्गड़, धुलिया (महा.)
6808 श्री विमलचन्द जी सुराणा, जयपुर (राज.)
6809 श्री सुनील कुमार जी, मैसूर (कर्नाटक)
6810 श्री सुभाष जी बोरा, धुलिया (महा.)
6811 श्री विमलकुमार जी जैन, सेठिया, भायन्दर वेस्ट, ठाणे(महा.)
6812 श्री कमलेश जी जैन, मुम्बई (महा.)
6813 श्री जयप्रकाश जी जैन, भायन्दर वेस्ट, ठाणे (महा.)
6814 श्री नवरतनमल जी जैन, मुम्बई (महा.)
6815 श्री नैनाराम प्रजापति, मुम्बई (महा.)
6816 श्री सुभाषचन्द जी मूथा, मुम्बई (महा.)
6817 श्री लोकेश जी जैन, मुम्बई (महा.)
6818 श्री महावीर जी जैन, मुम्बई (महा.)
6819 श्री पारस के. बांठिया, मुम्बई (महा.)
6820 श्री धर्मचन्द जी कोठारी, मुम्बई (महा.)
6821 श्री पूनमराज जी बच्छावत, थाणा, मुम्बई (महा.)
6822 श्री रतनचन्द जी बेताला, मुम्बई (महा.)
6823 श्री लक्ष्मीचन्द जी ललवानी, भायन्दर वेस्ट, ठाणे (महा.)
6824 श्री भागश्री डी. लोढ़ा, मुम्बई (महा.)
6825 श्री प्रेमचन्द जी सुराणा, भायन्दर वेस्ट (महा.)
6826 श्री सुनिल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6827 श्री महेन्द्र जी सोनावत, मुम्बई (महा.)
6828 श्री मनोज एस. जैन, मुम्बई (महा.)
6829 श्री विनोद जी बोथरा, नागौर (राज.)
6830 श्री एस.बी. चौधरी, मुम्बई (महा.)
6831 श्री नवरतनमल जी मूथा, मुम्बई (महा.)
6832 श्रीमती कुसुमलता जी ललवानी, चेन्नई (तमि.)
6833 श्री अजीतसिंह जी वैद, मुम्बई (महा.)
6834 श्री अनिल जी खजांची, भायन्दर ईस्ट, ठाणे (महा.)
6835 श्री महेन्द्र जी भण्डारी, मुम्बई (महा.)
6836 श्री अंकित जी पींचा, मुम्बई (महा.)
6837 श्री एन. जे. रांका, मुम्बई (महा.)
6838 श्री डी.के. सुराणा, मुम्बई (महा.)
6839 श्री ओम जी बोथरा, मुम्बई (महा.)
6840 श्री पी.सी. ललवानी, मुम्बई (महा.)
6841 श्री दिलीप ए. सवानी, मुम्बई (महा.)
6842 श्री विवेक जी जैन, मुम्बई (महा.)
6843 श्री आकाश जी गुलगुलिया, मुम्बई (महा.)
6844 श्री प्रदीप जी ढढ्ढा, भायन्दर वेस्ट, ठाणे (महा.)

6845 श्री अशोक जी लोढ़ा, मुम्बई (महा.)
6846 श्री महेन्द्र जी बैद, भायन्दर ईस्ट, ठाणे (महा.)
6847 श्री सुरेन्द्र जी अबानी, बीकानेर (राज.)
6848 श्री जितेन्द्र जी रामपुरिया, सूरत (गुजरात)
6849 श्री अनिल जी बम्ब, मुम्बई (महा.)
6850 श्री सुदर्शन जी दुग्गड़, मुम्बई (महा.)
6851 श्री दिलीप कुमार जी ललवाणी, सुरत (गुजरात)
6852 श्री बसन्तीलाल जी, कसरावद, पश्चिम निमाड़ (म.प्र.)
6853 श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी, कसरावद, खरगोन (म.प्र.)
6854 श्री प्रेमचन्द जी लुणिया, कसरावद, खरगोन (म.प्र.)
6855 श्री शान्तिलाल जी संघवी, कसरावद, खरगोन (म.प्र.)
6856 श्री सुरेश जी जैन, सेंधवा (म.प्र.)
6857 श्री किरणकान्त जी नाहटा, सेंधवा (म.प्र.)
6858 श्री बी.एल. जैन एडवोकेट, सेंधवा (म.प्र.)
6859 श्री हर्षद कुमार जी नाहटा, सेंधवा (म.प्र.)
6860 श्री शान्तिलाल एन. लुणकर जी, गडग (कर्नाटक)
6861 श्री गौतमचन्द जी पी. चौपड़ा, गडग (कर्नाटक)
6862 श्री विमलचन्द जी मूथा, पलीपेट (तमि.)
6863 श्री एल.जयचन्द जी लुनिया, पल्लीपेट (तमि.)
6864 श्री रमेश जी बोहरा, जालोर (राज.)
6865 श्री इन्दरकुमार जी सेठिया, हुबली (कर्नाटक)
6866 श्री यश जी सेठिया, जोधपुर (राज.)
6867 श्री दीपक जी सेठिया, जोधपुर (राज.)
6868 श्री राजेन्द्र जी गांग, जोधपुर (राज.)
6869 श्री राकेश जी सेठिया, पाली (राज.)
6870 श्री पुखराज जी चौधरी,, सांबरगांव, आकोला (महा.)
6871 श्रीमती करूणा जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6872 श्री छोटेलाल जी जैन, सेंधवा (म.प्र.)
6873 श्री शशांक जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
6874 श्री जेठमल जी चोरड़िया, वर्धा (म.प्र.)
6875 श्री संजीव कुमार जी गांधी, औरंगाबाद (महा.)
6876 श्री सुगनचन्द जी बरड़िया, चेन्नई (तमि.)
6877 श्रीमती सविता जी बेताला, चेन्नई (तमि.)
6878 श्री लूणकरण जी कांकरिया, जोधपुर (राज.)
6879 श्री राजेन्द्र जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6880 श्री हिम्मतमल जी ओस्तवाल, पूणे (महा.)
6881 श्री देवेन्द्र जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6882 श्री शीतलमल जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6883 श्री सतीश जी जैन, पुणे (महा.)

6884 श्री रमेश जी दवे, जोधपुर (राज.)
6885 श्री प्रेमचन्द जी जैन, गोटन, नागौर (राज.)
6886 श्री सुभाष जी हुण्डिया, जोधपुर (राज.)
6887 श्री पदमप्रभु जैन मन्दिर, गोटन, नागौर (राज.)
6888 श्री अशोक कुमार जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6889 श्री सुदर्शनलाल जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6890 श्री सचिन जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6891 श्रीमती त्रिशला जी जैन, भिवानी (हरियाणा)
6892 श्री आशीष जी जैन, दिल्ली
6893 श्री अनिल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6894 श्री ज्ञान जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6895 श्री भंवरलाल जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
6896 श्री गुलाबसिंह जी पारख, जोधपुर (राज.)
6897 श्री नरेन्द्र जी मोहनोत, जोधपुर (राज.)
6898 श्रीमती सुशीलादेवी जी ओसवाल, भोपाल (म.प्र.)
6899 श्रीमती पुष्पा जी मेहता, भोपाल(म.प्र.)
6900 श्री सुमित कुमार जी मेहता, भोपाल (म.प्र.)
6901 श्री आर. के. करोठी, भोपाल (म.प्र.)
6902 श्री एम.के. पारेख, भोपाल(म.प्र.)
6903 श्री दिलीप जी खिंवसरा, पूना (महा.)
6904 श्रीमती जयश्री एस. गुन्देचा, पूना (महा.)
6905 श्री सुदीप एस. गांधी, पूना (महा.)
6906 श्री अभिजित आर. गांधी,, पूना (महा.)
6907 श्री राजेश के. भण्डारी, अहमदनगर (महा.)
6908 श्री प्रतिभा परिषद् पुस्तकालय, बरेली, रायसेन (म.प्र.)
6909 श्री दिनेश कुमार जी जालोरी, भोपाल (म.प्र.)
6910 श्री अशोक कुमार जी नाहर, भोपाल (म.प्र.)
6911 श्री नितीन कुमार जी बोरा, पुना (महा.)
6912 श्री कान्तिलाल जी छाजेड़, भोपाल (म.प्र.)
6913 श्री कैलाशचन्द जी सुराणा, भोपाल (म.प्र.)
6914 श्री कान्तिलाल जी चतर, भोपाल (म.प्र.)
6915 श्री अमृतलाल जी मेहता, भोपाल (म.प्र.)
6916 श्री शान्तिलाल जी छाजेड़, भोपाल (म.प्र.)
6917 श्री ऋषभ कुमार जी मुणोत, भोपाल (म.प्र.)
6918 श्री आनन्द जी जैन, भोपाल (म.प्र.)
6919 श्री हरीश जी मेहता, भोपाल (म.प्र.)
6920 श्री मनसुखलाल जी भण्डारी, अहमदनगर (महा.)
6921 श्री अभयकुमार जी जैन, मेहता भोपाल (म.प्र.)
6922 श्री दिलीप जी शाह, भोपाल (म.प्र.)

6923 श्री अजीत जी बाफना, भोपाल (म.प्र.)
6924 श्री प्रकाशचन्द जी लोढ़ा, भोपाल (म.प्र.)
6925 श्री पी.एन. मुकीन जी, भोपाल (म.प्र.)
6926 श्री अभयकुमार जी मूथा जैन, भोपाल (म.प्र.)
6927 श्री प्रकाशचन्द जी तातेड़, भोपाल (म.प्र.)
6928 श्री धर्मचन्द जी बाफना, भोपाल (म.प्र.)
6929 श्री धनराज जी कटारिया, भोपाल (म.प्र.)
6930 श्री सुभाष जी जैन, भोपाल (म.प्र.)
6931 श्री महावीरचन्द जी बैद मेहता, बोरावड़, नागौर (राज.)
6932 श्री रिखबचन्द जी मेहता, बोरावड़, नागौर (राज.)
6933 श्री पुखराज जी मेहता, बोरावड़, नागौर (राज.)
6934 श्री दिनेश कुमार जी बेताला, बोरावड़, नागौर (राज.)
6935 श्री कपिल जी बाफना, बोरावड़, नागौर (राज.)
6936 श्री अनिल कुमार जी कोठारी, मेड़तासिटी, नागौर (राज.)
6937 श्री पवन कुमार जी मेहता, बोरावड़, नागौर (राज.)
6938 श्री सुमेरमल जी, बोरावड़, नागौर (राज.)
6939 श्री ज्ञानचन्द जी जैन, बोरावड़, नागौर (राज.)
6940 श्री दिलीप कुमार जी कोटेचा, बोरावड़, नागौर (राज.)
6941 श्री विरेन्द्र सिंह जी चोरड़िया, नीमच (म.प्र.)
6942 श्री डी.एस. चोरड़िया, नीमच (म.प्र.)
6943 श्री रघुराजसिंह जी चोरड़िया, नीमच (म.प्र.)
6944 श्री नेमीचन्द जी चोरड़िया, नीमच (म.प्र.)
6945 श्री आनन्दीलाल जी कांठेड़, नीमचकेन्ट (म.प्र.)
6946 श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, जोधपुर (राज.)
6947 श्री कान्तिलाल जी लूंकड़, सटाणा, नासिक (महा.)
6948 श्री अशोकचन्दजी बोरा, कुंदेवाड़ी, नासिक (महा.)
6949 श्री सुनील कुमार जी सुराणा, मुम्बई (महा.)
6950 श्री राजेन्द्र कुमार जी कोटड़िया, नन्दुरबार (महा.)
6951 श्री प्रवीण कुमार जी बोरा, धुलिया (महा.)
6952 श्री जवरीलाल जी छाजेड़, बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
6953 श्री संदेश जी डूंगरवाल, धुलिया (महा.)
6954 श्री घेवरचन्द जी बम्ब, बोरकुण्ड, जलगांव (महा.)
6955 श्री सुभाष जी बम्ब, बोरकुण्ड, धुलिया (महा.)
6956 श्री कान्ति जी पारेख, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
6957 श्री राजेन्द्र ए. जैन, मुम्बई (महा.)
6958 श्री मुकेश कुमार जी गांधी, भायन्दर, ठाणे (महा.)
6959 श्री प्रदीप कुमार जी जैन, दिल्ली
6960 श्री नरेन्द्र जी हीरावत, मुम्बई (महा.)
6961 श्री मनोज जी नवलखा, मुम्बई (महा.)

6962 श्री नीस जी जैन, मुम्बई (महा.)
6963 श्री वीरा भाई सी. पटेल जी, गौरेगांव, मुम्बई (महा.)
6964 श्री अनिल जी हीरावत, मुम्बई (महा.)
6965 श्री संजीव जी कोठारी, जयपुर (राज.)
6966 श्री श्वेताम्बर जैन पोरवाल संघ, धार (म.प्र.)
6968 श्री सिरेमल जी मुणोत, सातारा (महा.)
6969 श्री सुनील जी मुणोत, सातारा (महा.)
6970 श्री संतोष जी मुणोत, सातारा (महा.)
6971 श्री सूरज जी मुणोत, सातारा (महा.)
6972 श्री शान्तिलाल जी लुणावत, सातारा (महा.)
6973 श्री अभय कुमार जी लुणावत, सातारा (महा.)
6974 श्री भरत कुमार जी लुणावत, सातारा (महा.)
6975 श्री संतोष कुमार जी लुणावत, सातारा (महा.)
6976 श्री हिम्मतमल जी मुथा, सातारा (महा.)
6977 श्री मोहनमल जी मूथा, सातारा (महा.)
6978 श्री प्रमोद कुमार जी गुंदेचा, सातारा (महा.)
6979 श्री सुगनचन्द जी कोठारी, सातारा (महा.)
6980 श्री शशिकान्त जी बागमार, सातारा (महा.)
6981 श्री सुनील कुमार जी मुणोत, सातारा (महा.)
6982 श्री संजय कुमार जी मुणोत, सातारा (महा.)
6983 डॉ. सागरमल जी कटारिया, सातारा (महा.)
6984 श्री शान्तिलाल जी कटारिया, सातारा (महा.)
6985 श्री प्रमोद कुमार जी लुणिया, सातारा (महा.)
6986 श्री नरेन्द्र जी कोठारी, केलसी, रत्नागिरी (महा.)
6987 श्री संतोष जी कोठारी, केलसी, रत्नागिरी (महा.)
6988 श्री नवनीत जी कोठारी, केलसी, रत्नागिरी (महा.)
6989 श्री राजेन्द्र जी लुणिया, केलसी, रत्नागिरी (महा.)
6990 श्री सुभाष जी बाफना, धुलिया (महा.)
6991 श्री दिलीप जी बाफना, धुलिया (महा.)
6992 श्री शेषमल जी गांधी, रालेगांव, यवतमाल (महा.)
6993 श्री हीरालाल जी गांधी, रालेगांव, यवतमाल (महा.)
6994 श्री पूनमचन्द जी गांधी, रालेगांव, यवतमाल (महा.)
6995 श्री भीकमचन्द जी कटारिया, रालेगांव, यवतमाल (महा.)
6996 श्री दुलीचन्द जी बोहरा, रालेगांव, यवतमाल (महा.)
6997 श्री कुन्दनमल जी बोहरा, रालेगांव, यवतमाल (महा.)
6998 श्री भागचन्द जी बोथरा, रालेगांव, यवतमाल (महा.)
6999 श्री अमोलकचन्द जी जैन(बीलोता) , अलीगढ़, टोंक (राज.)
7000 श्री हुनमानप्रसाद जी जैन, कोटा (राज.)

7001 श्री जितेन्द्र कुमार जी सुराणा (ब्यावर वाले), विरार (प.) महा.
7002 श्री महावीर प्रसाद जी जैन, मण्डावर
7003 श्री अशोकराज जी मेहता, अहमदाबाद (गुजरात)
7004 श्री विसनचन्द जी पीतलिया, रत्नागिरी (महा.)
7005 श्री अरविन्द जी गांधी, रत्नागिरी (महा.)
7006 श्री सुरेशचन्द जी जैन, कजानीपुर, करौली (राज.)
7007 श्री प्रकाशचन्द जी जैन, भरतपुर (राज.)

जिनवाणी संरक्षक सदस्य

11000/–श्री अजयराज जी किशनचन्द जी मेहता, अहमदाबाद (गुजरात)

जिनवाणी को साभार प्राप्त

1500/– श्री छत्तरचन्द सा मेहता, जोधपुर। कोलकाता में श्री छत्तरचन्द सा, श्रीमती बिलमकंवर मेहता की अठाई, अमित, कुणाल के तीन–तीन व मोनिका के दो उपवास। जोधपुर में श्री अरूण मेहता व श्रीमती सुनीता मेहता के ग्यारह–ग्यारह, आनन्द व शशि के चार–चार उपवास तथा आबुधाबी में श्री पंकज व श्रीमती प्रभा मेहता के पांच–पांच उपवास व प्रिया के तीन उपवास के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/– श्री विमलचन्द जी सुराना, ब्यावर, श्री मोनू जी सुराना के स्वस्थ होने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1000/– श्री मूलचन्द जी दिलीपकुमार जी लुणावत, जोधपुर। चि. शांतिलाल जी लुणावत के अठाई तप के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/– श्री महेन्द्र कुमार जी सुरेन्द्र कुमार जी रविन्द्र कुमार जी कांकरिया, चेन्नई। पूज्य पिताजी श्रीमान अनराज जी कांकरिया की पावन स्मृति में।

500/– गुप्तदान। आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के धुलिया में दर्शन करने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– गुप्तदान स्वरूप ब्यावर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्री संदीप जी धारीवाल, जोधपुर। स्व. पिता श्री नरेन्द्र जी धारीवाल की प्रथम पुण्य तिथि दिनांक 21.9.2001 के अवसर पर सप्रेम भेंट।

500/– श्री मोहनराज सा. कांकरिया, चेन्नई। पूज्य आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर तथा अन्य संत सतियों के दर्शन परिवार सहित करने के उपलक्ष्य में सादर भेंट।

300/– गुप्तदान।

250/– चि. रूपेश जी बागमार, सौ. मन्जु जी बागमार एवं चि. मुकेश जी बागमार, सौ. त्रिशला जी बागमार के गुरुमन्त्र लेने पर श्रीमती शकुन देवी जी मदनलाल जी बागमार, जबलपुर द्वारा जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

201/– श्री प्रकाशमल जी बोथरा, जोधपुर। अपने सुपुत्र स्वाध्यायी श्री मनीष बोथरा के सी.ए. फाइनल द्वितीय ग्रुप व आइ.सी.डब्ल्यू.ए. तृतीय स्टेज उत्तीर्ण करने व जोधपुर में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

200/– श्री सुनील कुमार जी बोथरा, धुलिया में आचार्य श्री के दर्शनों की खुशी में

जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/– श्री ज्ञानचन्द जी जैन, जयपुर, अपनी सुपुत्री सौ. का. मन्जु जी जैन का शुभ विवाह श्री गौतम जी ललवाणी निवासी वान्दनवाड़ा के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/– श्री रामस्वरूप जी जैन (कुण्डेरा वाले) द्वारा श्री आर.सी. बाफना, जलगांव, मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/– श्रीमती कान्ताबाई जी सिंघवी, चेन्नई, धुलिया में आचार्य श्री के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/– श्री भंवरलाल जी, गुलाबचन्द जी, रिखबचन्द जी बोथरा, किशनगढ़। शान्तस्वभावी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. की सद्प्रेरणा से श्रीमती पुष्पा जी बोथरा की 51 की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

101/– श्रीमती भगवती देवी जी श्रीश्रीमाल, मोहल्ला गोपालगढ़, भरतपुर। अपने स्व. पति श्री रामजीलाल जी श्रीश्रीमाल की 21.10.2001 को पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

101/– श्री नवरतनमल जी डालमचन्द जी सुराणा (इडवा वाले), बैंगलोर। सरल हृदया महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा 8 के प्रथम बार दर्शनों के उपलक्ष्य में।

100/– श्री प्रवीण जी कर्णावट, मुम्बई, श्रीमती संगीता जी कर्णावट की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

100/– श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरड़िया, चेन्नई, आचार्य श्री के धुलिया में दर्शन करने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

100/– श्री मदनलाल जी सुमेरचन्द जी वैद, चेन्नई, धुलिया में आचार्य श्री के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

51/– श्री शांतिलाल जी लुणावत, पीपाड़ सिटी। शान्तस्वभावी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में विरक्ता बहन सुश्री समता जी लुणावत के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

गजेन्द्र निधि से साभार प्राप्त

100000/– गजेन्द्र निधि, मुम्बई से मण्डल को आर्थिक सहयोग हेतु सहायतार्थ सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

101/– श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, उनियारा।

1000/– श्रीमती लाडश्री बेन लाभचन्द भाई नाहर, सूरत।

1000/– श्री कल्याणमल प्रकाशमल चोरड़िया ट्रस्ट, चेन्नई। स्वाध्याय संघ, जोधपुर संवर्द्धक सदस्यता।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को साभार-प्राप्त

25000/– श्री हीराचन्द जी हीरावत, जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सप्रेम भेंट।

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- Hire Purchase
- Leasing
- Bills Discounting
- Foreign Exchange

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chn@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O. : No. 16, Whites Road, II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014.

Branches :

• Bangalore • Coimbatore • Ernakulam
• Kollidam • New Delhi

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

"आचार्य श्री हस्ती"

With Best Compliments From:

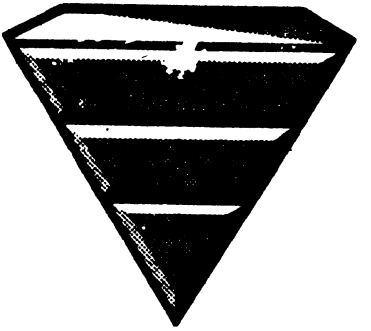

EVEREST GEMS LTD.

16 B, KOK PAH MANSION,
68-60 CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON,
HONGKONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : *Sunil Lunawat*
Raj Mohan Kothari

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments from :

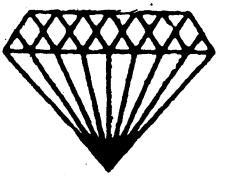

S. D. GEMS

&

SURBHI DIAMONDS

202, RATNA DEEP, BEHIND PANCHRATHNA,
OPERA HOUSE, MUMBAI - 400 004
PHONE : (O) 3690189, 3684091 (R) 8724429, 8735824
MOBILE : 98200-30872

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

With Best Compliments from :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE,

CHENNAI 600 056

PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET, POONAMALLEE,

CHENNAI 600 056

With
Best Compliments
From

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
– आचार्य श्री हस्ती

M/s HIMA GEMS

7th Floor,
KOKPAH,
58-60, Cameron Road,
T.S.T. Kowloon
HONGKONG
Tel 23671457

Director
HEMANT
SANCHETI

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

घोड़ों का चौक, जोधपुर - 342 001
फोन : 0291-641 445, फैक्स : 614 528 ई-मेल : yuvakparishad@yahoo.co.in

भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक वर्ष के पावन अवसर पर

'जिनवाणी सदस्य बनाओ' राष्ट्रीय अभियान

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित जैन धर्म की ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी मासिक पत्रिका **'जिनवाणी'** के आजीवन सदस्य 500/- के स्थान पर 300/- में बन कर **विशेष छूट** का लाभ उठाइये। यह छूट सिर्फ युवक परिषद् के माध्यम से जिनवाणी का आजीवन सदस्य बनने पर जन्म कल्याणक वर्ष में ही उपलब्ध रहेगी।

"जिनवाणी" जैन धर्म दर्शन एवं संस्कृति की विशिष्ट प्रतिष्ठित लोकप्रिय पत्रिका है जिसका प्रकाशन विगत 58 वर्षों से अनवरत हो रहा है। इस पत्रिका में देश भर के विभिन्न सन्तों, विद्वानों एवं लेखकों की रचनाएं प्रकाशित होती हैं। पत्रिका की मुख्य विशेषता है कि यह सभी सम्प्रदायों की भावनाओं का आदर करते हुए एक सकारात्मक व नई सोच प्रदान करती है। इस पत्रिका के अध्ययन से जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास व सम्यक् दृष्टि प्राप्त होती है। समय-समय पर इस पत्रिका के प्रकाशित विशेषांक अत्यधिक लोकप्रिय हुए है। वर्तमान के इस भौतिक युग में पत्रिका युवा पीढ़ी को धर्म से जोड़ने का सशक्त माध्यम है।

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में अपने परिजनों, मित्रों, सहकर्मियों, अधीनस्थ कर्मचारियों, सहपाठियों एवं पड़ौसियों को "जिनवाणी" मासिक पत्रिका का इस विशेष छूट योजना में आजीवन सदस्य बनायें। आप अपने इष्टजनों को जन्मदिवस, शादी की वर्षगांठ आदि अन्य अवसरों पर उपहार स्वरुप "जिनवाणी" पत्रिका का सदस्य बनाकर सहज में ही धर्मलाभ प्राप्त कर सकते हैं।

इच्छुक व्यक्ति 300/- का ड्राफ्ट/मनीआर्डर, जिनवाणी, जयपुर के नाम का बनवाकर अथवा युवक परिषद् द्वारा अधिकृत व्यक्ति को रोकड़ देकर जिनवाणी का आजीवन सदस्य बन सकते है। ड्राफ्ट/मनीआर्डर, घोंड़ो का चौक, जोधपुर स्थित युवक परिषद् के प्रधान कार्यालय को भिजवायें।

❖ आपसे सहयोग की आकांक्षा के साथ ❖

अनिल बोहरा, FCA	डॉ. राकेश कांकरिया	कुशल गोटेवाला
अध्यक्ष	महासचिव	कार्याध्यक्ष

पंरपरागत कलाकृती का
बेहतरीन अलंकार...

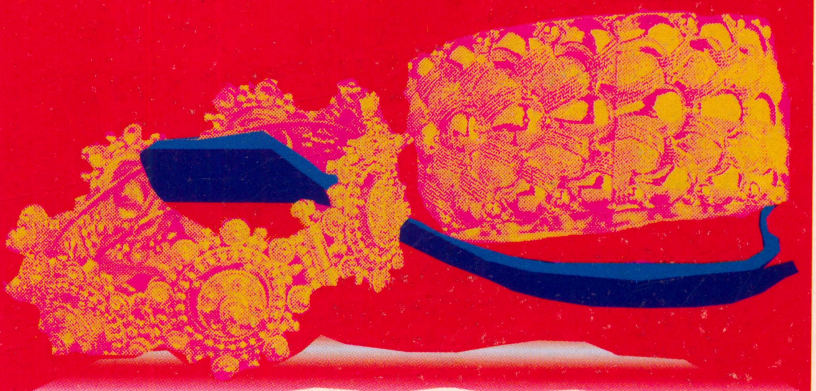

आधुनीक युगका
सुवर्ण श्रृंगार..!

हम पीढियों से दे रहे हैं
आपकी भावनाओं को शुद्ध, सच्चे व बेमिसाल आभूषणों की शक्ल.
आप बरसों से कर रहे हैं हमारे रिश्तों पर खरे मन से विश्वास...

A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854

मै. राजमल लखीचंद
(गोल्ड एम्पोरियम)
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव-४२५ ००१, (महाराष्ट्र) फोन : (०२५७) २२६६८१, ८२, ८३

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57

THE CLOSEST YOU CAN STAY TO KANDIVALI STATION.

Kalpataru Vatika-Phase II, is an imposing 14 storeyed residential tower that is far away from the hustle and bustle, yet near enough to the station.

It features 2 wings each having 4 apartments per floor of 2 BHK. It offers superior quality amenities (already developed) within the complex such as lush landscaped garden, swimming pool, club house with gymnasium, steam and sauna.

While Kalpataru Vatika-Phase I is already complete, with 4 wings of 7 storeys each, Kalpataru Vatika-Phase II is well under construction.

For further details or for a site visit, call Sangeeta or Rajeev at 282 2679/282 2888.

KALPA-TARU

Site address: Akurli Road, Opposite ESIS Hospital, Kandivali (East). Tel: 887 1911.
Kalpataru Group of Companies: 111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021. Fax: 204 1548 / 288 4778.
E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर ✆ 562929, 564771